

CLASS-9

HINDI

SPECIMEN COPY

2022-23

पाठ-सूची

माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
	गद्य पाठ-२-दुःख का अधकार	यशपाल
	पद्य पाठ-९-अब कैसे छूटे राम	संत रैदास
- 14	संचयन पाठ-१- गल्लू	महादेवी वर्मा
130	व्याकरण-सं ध	4.17
	लेखन-अनुच्छेद,पत्र-लेखन	
जून	पद्य पाठ-१०-रहीम के दोहे	संत रहीम
	गद्य-पाठ-४-अति <mark>थ तुम</mark> कब जाओगे	शरद जोशी
7	गद्य -घाठ-४ -एव <mark>रे</mark> स्ट मेरी शखर यात्रा	बच्चेंदरी पाल
	व्याकरण-वर्ण- वच्छेदन	
	लेखन- चत्र -लेखन	8 6 3
		13 3
जुलाई	वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर	धीरं <mark>ज</mark> न मालवे
11 1 2	पाठ-२-स्मृति	श्री राम शर्मा
47.4	संचयन-३-कुल्लू कुम्हार की उना कोटि	के. वक्रम
7/1	व्याकरण-उपसर्ग-प्रत्यय	485
	संवाद-लेखन	12
अगस्त	गीत अगीत	नामधारी दिनकर
	संचयन-मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय	धर्मवीर भारती
	व्याकरण- वराम-संज्ञा,सर्वनाम, क्रया,वाच्य	200
	लेखन-कहानी , वज्ञापन	
	जून	गद्य पाठ-२-दुःख का अधकार पद्य पाठ-९-अब कैसे छूटे राम संचयन पाठ-९-गल्लू व्याकरण-संध लेखन-अनुच्छेद,पत्र-लेखन जून पद्य पाठ-१०-रहीम के दोहे गद्य-पाठ-४-अति थ तुम कब जाओगे गद्य -पाठ-४ -एवरेस्ट मेरी शखर यात्रा व्याकरण-वर्ण- वच्छेदन लेखन- चत्र -लेखन जुलाई वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर पाठ-२-स्मृति संचयन-३-कुल्लू कुम्हार की उना कोटि व्याकरण-उपसर्ग-प्रत्यय संवाद-लेखन अगस्त गीत अगीत संचयन-मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय व्याकरण- वराम-संज्ञा,सर्वनाम, क्रया,वाच्य

काव्य-पाठ-९- अब कैसे छूटै राम - रैदास

*-रैदास के पद अर्थ सहित

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभू जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँगअँग बास समानी।प्रभू जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चतवत चंद चकोरा।
प्रभू जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभू जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥
शब्दार्थ ह

बास - गंध, वास

समानी - समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)

घन - बादल

मोरा - मोर, मयूर

चतवत - देखना, निरखना

चकोर - तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है

बाती - बत्ती, रुई, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं

जोति - ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाया जाने वाला दीपक

बरै - बढ़ाना, जलना

राती - रात्रि

सुहागा - सोने को शुद्ध करने के लए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य

दासा - दास, सेवक

व्याख्या - इस पद में क व ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन कया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है क व के कहने का अभप्राय है क एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है।

क व भगवान् से कहता है क हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। क व कहता है क जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। क व भगवान् से कहता है क हे प्रभु!

यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त कसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। क व भगवान् से कहता है क हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है। व्याख्या - इस पद में क व ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन कया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है क व के कहने का अभप्राय है क एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है। क व भगवान् से कहता है क हे प्रभ्। यदि त्म चंदन हो तो त्म्हारा भक्त पानी है। क व कहता है क जिस प्रकार चंदन की स्गंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। क व भगवान् से कहता है क हे प्रभू! यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त कसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। क व भगवान् से कहता है क हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है। २-ऐसी लाल तुझ बिन् कउन् करै। गरीब निवाज् गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै।। जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै। नीचह् जच करै मेरा गोबिंद् काह् ते न डरै॥ नामदेव कबीरु तिलोचन् सधना सैन् तरै। कहि र वदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥ शब्दार्थ -लाल- स्वामी -कउन् – कौन गरीव निवाजु- दु खयों पर दया करने वाला-दीन -ग्सईआ स्वामी -, गुसाईं माथै छत्रु धरै मस्तक पर मुक्ट धारण करने वाला छोति छुआछूत -, अस्पृश्यता जगत कर लागै संसार के लोगों को लगती है -ता पर तुहीं ढरै उन पर द्र वत होता है -नीचह ऊच करै नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है -नामदेव महाराष्ट्र के एक प्र सद्ध संत -, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है तिलोचन् एक प्र सद्ध वैष्णव आचार्य - (त्रिलोचन), जो ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु थे सधना एक उच्च कोटि के संत जो नाम -देव के समकालीन माने जाते हैं सैनु ये भी एक प्र सद्ध संत हैं -, आदि में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद 'गुरुग्रंथ साहब' का समकालीन माना जाता है हरिजीउ - हरि जी से सभै सरै सब क्छ संभव हो जाता है -

व्याख्या इस पद में क व भगवान की महिमा का बखान कर -रहे हैं। क व कहते हैं क हेमेरे ! स्वामी तुझ बिन मेरा कौन है अर्थात क व अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। क व भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं क भगवान गरीबों और दीनदुः खयों पर दया - करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बड़ा रहा है। क व कहते हैं क भगवान में इतनी शक्ति है क वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कव कहने का तात्पर्य यह है क भगवान की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है। क व कहते हैं क भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्यों क भगवान अपने प्रताप से कसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं अर्थात भगवान मनुष्यों के द्वारा कए गए कर्मों को देखते हैं न क कसी मनुष्य की जाति को। क व उदाहरण देते हुए कहते हैं क जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार कया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। क व कहते हैं क है सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो!, उस हिर के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।

*-बह्वैकल्पिक प्रश्नोत्तरः

प्रश्न १- यदि भगवान् चंदन है तो भक्त क्या है?

(Ao <u>पानी</u>

(Bo मोर

(Co चकोर

(Do बत्ती

प्रश्न २- भगवान् के माथे पर क्या शोभा दे रहा है?

(Ao पानी

(Bo <u>मुक</u>ुट

(C o पंख

(Do बत्ती

प्रश्न ३- (भगवान् कसका कल्या<mark>ण बिना भेदभाव के</mark> करते है?

(Ao अमीरों का

(Bo मोर भक्तों का

(C o <u>अछूत मनुष्यों का</u>

(Do इनमें से कसी का नहीं

प्रश्न ४- (क व कसे अपना सबकुछ मानते है?

(Ao <u>भगवान् को</u>

(Bo संतों को

- (Co अछूत मन्ष्यों को
- (Do भक्तों को

प्रश्न ५- (दूसरे पद में क व ने कसका गुणगान कया है?

- (Ao <u>भगवान</u>्
- (Bo संतों
- (C o अछूत
- (Do भक्तों

*-निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- (क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।
- (क)पहले पद में भगवान और भक्त की निम्न ल खत चीजों से तुलना की गई है। भगवान की चंदन से और भक्त की पानी से भगवान की घन बन से और भक्त की मोर से। भगवान की चाँद से और भक्त की चकोर से भगवान की दीपक से और भक्त की बाती से भगवान की मोती से और भक्त की धागे से भगवान की सुहागे से और भक्त को सोने से।
- (ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे-पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर ल खए-
- (ख) अन्य त्कांत शब्द इस प्रकार हैं
- मोरा चकोरा चंद चकोर मोती <mark>धागा सोना</mark> सुहागा स्वामी दास
- (घ) दूसरे पद में क व ने 'गरीब निवाज्' कसे कहा है? स्पष्ट कीजिए-
- (घ) दूसरे पद में क व ने अपने प्रभु को 'गरीब निवाजु' कहा है। इसका अर्थ है-दीन-दु खयों पर दया करने वाला। प्रभु ने रैदास जैसे अछूत माने जाने वाले प्राणी को संत की पदवी प्रदान की। रैदास जन-जन के पूज्य बने। उन्हें महान संतों जैसा सम्मान मला। रैदास की दृष्टि में यह उनके प्रभु की दीन-दयाल्ता और अपार कृपा ही है-
- (ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर त्हीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- (ड) इसका आशय है-रैदास अछूत माने जाते थे। वे जाति से चमार थे। इस लए लोग उनके छूने में भी दोष मानते थे। फर भी प्रभु उन पर द्र वत हो गए। उन्होंने उन्हें महान संत बना दिया।
- (च) 'रैदास' ने अपने स्वामी को कन-कन नामों से प्कारा है?
- (च) रैदास ने अपने स्वामी को 'लाल', गरीब निवाजु, गुसईआ, गोबिंदु आदि नामों से पुकारा है। प्रश्न 2.नीचे लखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-
- (क) जाकी अँग-अँग बास समानी

- (ख) जैसे चतवत चंद चकोरा
- (ग) जाकी जोति बरै दिन राती
- (घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै
- (ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।

क-भाव यह है क क व रैदास अपने प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने आराध्य प्रभु से अपना संबंध व भन्न रूपों में जोड़कर उनके प्रति अनन्य भक्ति प्रकट करते हैं। रैदास अपने प्रभु को चंदन और खुद को पानी बताकर उनसे घनिष्ठ संबंध जोड़ते हैं। जिस तरह चंदन और पानी से बना लेप अपनी महक बिखेरता है उसी प्रकार प्रभु भक्ति और प्रभु कृपा के कारण रैदास का तन-मन सुगंध से भर उठा है जिसकी महक अंग-अंग को महसूस हो रही है।

ख- भाव यह है क रैदास अपने आराध्य प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने प्रभु के दर्शन पाकर प्रसन्न होते हैं। प्रभु-दर्शन से उनकी आँखें तृप्त नहीं होती हैं। वे कहते हैं क जिस प्रकार चकोर पक्षी चंद्रमा को निहारता रहता है। उसी प्रकार वे भी अपने आराध्य का दर्शनकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

ग- भाव यह है क अपने आराध्य प्रभु से अन<mark>न्यभ</mark>िक्त एवं प्रेम करने वाला क व अपने प्रभु को दीपक और खुद को उसकी बाती मानता है। जिस प्रका<mark>र दीपक और बा</mark>ती प्रकाश फैलाते हैं उसी प्रकार क व अपने मन में प्रभु भिक्त की ज्योति जलाए रखना चाहता है।

घ-प्रभु की दयालुता, उदारता और गरीबों से वशेष प्रेम करने के वषय में क व बताता है क हमारे समाज में अस्पृदश्यता के कारण जिन्हें कुछ लोग छूना भी पसंद नहीं करते हैं, उन पर दयालु प्रभु असीम कृपा करता है। प्रभु जैसी कृपा उन पर कोई नहीं करता है। प्रभु कृपा से अछूत समझे जाने वाले लोग भी आदर के पात्र बन जाते हैं।

ङ-संत रैदास के प्रभु अत्यंत दयालु हैं। समाज के दीन-हीन और गरीब लोगों पर उनका प्रभु वशेष दया दृष्टि रखता है। प्रभु की दया पाकर नीच व्यक्ति भी ऊँचा बन जाता है। ऐसे व्यक्ति को समाज में कसी का

डर नहीं रह जाता है। अर्थात् प्रभु की कृपा पाने के बाद नीचा समझा जाने वाला व्यक्ति भी ऊँचा और निर्भय हो जाता है।

प्रश्न 3.रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में ल खए।

उत्तर-पहले पद का केंद्रीय भाव यह है क राम नाम की रट अब छूट नहीं सकती। रैदास ने राम नाम को अपने अंग-अंग में समा लया है। वह उनका अनन्य भक्त बन चुका है।

दूसरे पद का केंद्रीय भाव यह है क प्रभु दीन दयालु हैं, कृपालु हैं, सर्वसमर्थ हैं तथा निडर हैं। वे अपनी कृपा से नीच को उच्च बना सकते हैं। वे उद्धारकर्ता हैं।

*लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.भक्त क व कबीर, गुरु नानक, नामदेव और मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए। उत्तर-छात्र इन क वयों की रचनाओं का संकलन स्वयं करें।

प्रश्न 2.पाठ में आए दोनों पदों को याद कीजिए और कक्षा में गाकर सुनाइए। उत्तर-छात्र दोनों पदों को स्वयं याद करें और कक्षा में गाकर सुनाएँ।

प्रश्न 3.रैदास को कसके नाम की रट लगी है? वह उस आदत को क्यों नहीं छोड़ पा रहे हैं? उत्तर-रैदास को राम के नाम की रट लगी है। वह इस आदत को इस लए नहीं छोड़ पा रहे हैं, क्यों क वे अपने आराध्ये प्रभु के साथ मलकर उसी तरह एकाकार हो गए हैं; जैसे-चंदन और पानी मलकर एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं।

प्रश्न.4.जाकी अंग-अंग वास समानी' में जाकी' कसके लए प्रयुक्त है? इससे क व को क्या अ भप्राय है?

उत्तर-'जाकी अंग-अंग वास समानी' में 'जाकी' शब्द चंदन के लए प्रयुक्त है। इससे क व का अ भप्राय है जिस प्रकार चंदन में पानी मलाने पर इसकी महक फैल जाती है, उसी प्रकार प्रभु की भक्ति का आनंद क व के अंग-अंग में समाया हुआ है।

प्रश्न 5..'तुम घन बन हम मोरा'-ऐसी क व ने क्यों कहा है?

उत्तर-रैदास अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं, जिन्हें अपने आराध्य को देखने से असीम खुशी मलती है। क व ने ऐसा इस लए कहा है, क्यों क जिस प्रकार वन में रहने वाला मोर आसमान में घिरे बादलों को देख प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार क व भी अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है।

प्रश्न 6.जैसे चतवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने क्या कहना चाहा है?

उत्तर-'जैसे चतवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने यह कहना चाहा है क जिस प्रकार रात भर चाँद को देखने के बाद भी चकोर के नेत्र अतृप्त रह जाते हैं, उसी प्रकार क व रैदास के नैन भी निरंतर प्रभु को देखने के बाद भी प्यासे रह जाते हैं।

प्रश्न.7.रैदास द्वारा र चत 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' को प्रतिपाद्य ल खए।
उत्तर-रैदास द्वारा र चत 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' में अपने आराध्य के नाम की रट की
आदत न छोड़ पाने के माध्यम से क व ने अपनी अटूट एवं अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है। इसके
अलावा उसने चंदन-पानी, दीपक-बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने
स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

प्रश्न 8.रैदास ने अपने 'लाल' की कन-कन वशेषताओं का उत्लेख कया है?

उत्तर-रैदास ने अपने 'लाल' की वशेषता बताते हुए उन्हें गरीब नवाजु दीन-दयालु और गरीबों का

उद्धारक बताया है। क व के लाल नीची जातिवालों पर कृपाकर उन्हें ऊँचा स्थान देते हैं तथा अछूत

समझे जाने वालों का उद्धार करते हैं।

प्रश्न 9.क व रैदास ने कन-कन संतों का उल्लेख अपने काव्य में कया है और क्यों? उत्तर-क व रैदास ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैन का उल्लेख अपने काव्य में कया है। इसके उल्लेख के माध्यम से कव यह बताना चाहता है क उसके प्रभु गरीबों के उद्धारक हैं। उन्होंने गरीबों और कमज़ोर लोगों पर कृपा करके समाज में ऊँचा स्थान दिलाया है। प्रश्न 10.कव ने गरीब निवाजु कसे कहा है और क्यों ?

उत्तर-क व ने गरीब निवाजुं अपने आराध्य प्रभु को कहा है, क्यों क उन्होंने गरीबों और कमज़ोर समझे जानेवाले और अछूत कहलाने वालों का उद्धार कया है। इससे इन लोगों को समाज में मान-सम्मान और ऊँचा स्थान मल सकी है।

*दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.पिठत पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए क रैदास की उनके प्रभु के साथ अटूट संबंध हैं। उत्तर-पिठत पद से ज्ञात होता है क रैदास को अपने प्रभु के नाम की रट लग गई है जो अब छुट नहीं सकती है। इसके अलावा क व ने अपने प्रभु को चंदन, बादल, चाँद, मोती और सोने के समान बताते हुए स्वयं को पानी, मोर, चकोर धाग और सुहागे के समान बताया है। इन रूपों में वह अपने प्रभु के साथ एकाकार हो गया है। इसके साथ क व रैदास अपने प्रभु को स्वामी मानकर उनकी भिक्त करते हैं। इस तरह उनका अपने प्रभु के साथ अटूट संबंध है।

प्रश्न 2.क व रैदास ने 'हरिजीउ' कसे कहा है? काव्यांश के आधार पर 'हरिजीउ' की वशेषताएँ ल खए। उत्तर-क व रैदास ने 'हरिजीउ' कहकर अपने आराध्य प्रभु को संबो धत कया है। क व का मानना है क उनके हरिजीउ के बिना माज के कमजोर समझे जाने को कृपा, स्नेह और प्यार कर ही नहीं सकता है। ऐसी कृपा करने वाला कोई और नहीं हो । सकता। समाज के अछूत समझे जाने वाले, नीच कहलाने वालों को ऊँचा स्थान और मान-सम्मान दिलाने का काम क व के 'हरिजीउ' ही कर सकते हैं। उसके 'हरजीउ' की कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं।

प्रश्न 3.रैदास द्वारा र चत दूसरे पद 'ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करें' को प्रतिपाद्य ल खए।
उत्तर-क व रैदास द्वारा र चत इस पद्य में उनके आराध्य की दयालुता और दीन-दु खयों के प्रति
वशेष प्रेम का वर्णन है। क व का प्रभु गरीबों से जैसा प्रेम करता है, वैसा कोई और नहीं। वह गरीबों
के माथे पर राजाओं-सा छत्र धराता है तो अछूत समझे जाने वाले वर्ग पर भी कृपा करता है। वह नीच
समझे जाने वालों पर कृपा कर ऊँचा बनाता है। उसने अनेक गरीबों का उद्धार कर यह दर्शा दिया है
क उसकी कृपा से सभी कार्य सफल हो जाते हैं।

संचयन पाठ-१ - गल्लू

ले खका महादेवी वर्मा -जन्म – 1907

पाठ सार: इस पाठ में ले खका ने अपने जीवन के उस पड़ाव का वर्णन कया है जहाँ उन्होंने एक गलहरी के बच्चे को कौवे से बचाया था और उसे अपने घर में रखा था। ले खका ने उस गलहरी के बच्चे का नाम गल्लू रखा था। ले खका कहती है क आज जूही के पौधे में कली निकल आई है जो पले रंग की है। उस कली को देखकर ले खका को उस छोटे से जीव की याद आ गई जो उस जूही के पौधे की हरियाली में छिपकर बैठा रहता था। परन्तू ले खका कहती है क अब तो वह छोटा जीव इस जूही के पौधे की जड़ में मट्टी बन कर मल गया होगा। क्यों क अब वह मर चुका है और ले खका ने उसे जूही के पौधे की जड़ में दबा दिया था।ले खका कहती है क अचानक एक दिन जब वह सवेरे कमरे से बरामदे में आई तो उसने देखा क दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से <mark>चुपके से छूकर</mark> छुप जाना और फर छूना जैसा कोई खेल खेल रहे हैं। ले खका कहती है क यह कौवा भी बह्त अनोखा पक्षी हैएक -साथ ही दो तरह का व्यवहार सहता है, कभी तो इसे बह्त आदर मलता है और कभी बह्त ज्यादा अपमान सहन करना पड़ता है। ले खका कहती है क जब वह कौवो के बारे में सोच रही थी तभी अचानक से उसक<mark>ी उस सोच में कुछ रुकावट आ ग</mark>ई क्यों क उसकी नजर गमले और दीवार को जोड़ने वाले भाग में छिपे एक छोटेसे जीव पर पड़ी। जब ले खका ने- निकट जाकर देखा तो पाया क वह छोटा सा <mark>जीव एक गलहरी का छोटासा बच्चा है। उस छोटे से</mark> -जीव के लए उन दो कौवों की चोंचों के दो घाव ही बह्त थे, इस लए वह बिना कसी हरकत के गमले से लपटा पड़ा था। ले खका ने उसे धीरे से उठाया और अपने कमरे में ले गई, फर रुई से उसका खून साफ़ कया और उसके जख्मों पर पें स लन नामक दवा का मरहम लगाया। कई घंटे तक इलाज करने के बाद उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और निश्चिन्त हो गया क वह ले खका की उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर और अपनी नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधरउधर देखने -लगा। सब उसे अब गल्लू कह कर प्कारते थे। ले खका कहती है क जब वह लखने बैठती थी तब अपनी ओर ले खका का ध्यान आक र्षत करने की गल्लू की इतनी तेज इच्छा होती थी क उसने एक बह्त ही अच्छा उपाय खोज निकाला था। वह ले खका के पैर तक आता था और तेज़ी से परदे पर चढ़ जाता था और फर उसी तेज़ी से उतर जाता था। उसका यह इस तरह परदे पर चढ़ना और उतरने का क्रम तब तक चलता रहता था जब तक ले खका उसे

पकड़ने के लए नहीं उठती थी। ले खका गल्लू को पकड़कर एक लंबे लफ़ाफ़े में इस तरह से रख देती थी। जब गल्लू को उस लफ़ाफ़े में बंद पड़ेपड़े भूख लगने लगती- तो वह चक-चक की आवाज करके मानो ले खका को सूचना दे रहा होता क उसे भूख लग गईहै और ले खका के द्वारा उसे काजू या बिस्क्ट मल जाने पर वह उसी स्थिति में लफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से काजू या बिस्क्ट पकड़कर उसे क्तरता। ले खका कहती है क बाहर की गलहरियाँ उसके घर की खड़की की जाली के पास आकर चक चक करके न जाने क्या -कहने लगीं? जिसके कारण गल्लू खड़की से बाहर झाँकने लगा। गल्लू को खड़की से बाहर देखते ह्ए देखकर उसने खड़की पर लगी जाली की कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस रास्ते से गल्लू जब बाहर गया तो उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बाहर जाने पर सचम्च ही उसने आजादी की साँस ली हो। ले खका को जरुरी कागज़ोपत्रों के कारण बाहर -जाना पड़ता था और उसके बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता था। ले खका कहती है क उसने काॅलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला और अंदर पैर रखा, वैसे ही गल्लू अपने उस जाली के दरवाजे से अंदर आया और लेखका के पैर से सर और सर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। उस दिन से यह हमेशा का काम हो गया था। काजू गल्लू का सबसे मनपसंद भोजन था और यदि कई दिन तक उसे काजू नहीं दिया जाता था तो वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।ले खका कहती है क उसी बीच उसे मोटर दुर्घटना में घायल होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब कोई ले खका के कमरे का दरवाजा खोलता तो गल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता, उसे लगता क ले खका आई है और फर जब वह ले खका की जगह कसी दूसरे को देखता तो वह उसी तेजी के साथ अपने घोंसले में जा बैठता। तो भी ले खका के घर जाता वे सभी गल्लू को काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब ले खका ने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मले, जिनसे ले खका को पता चला क वह उन दिनों अपना मनपसंद भोजन भी कतना कम खाता रहा। ले खका की अस्वस्थता में वह त कए पर सरहाने बैठकर अपने नन्हेनन्हे पंजों -धीरे सहलाता रहता क जब वह ले ख<mark>का के -से ले खका</mark> के सर और बालों को इतने धीरे सरहाने से हटता तो ले खका को ऐसा लगता जैसे उसकी कोई से वका उससे दूर चली गई हो।

ले खका कहती है क गलहरियों के जीवन का समय दो वर्ष से अधक नहीं होता, इसी कारण गल्लू की जीवन यात्रा का अंत भी नजदीक आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया। रात में अपने जीवन के अंतिम क्षण में भी वह अपने झूले से उतरकर ले खका के बिस्तर पर आया और अपने ठंडे पंजों से ले खका की वही उँगली पकड़कर हाथ से चपक गया, जिसे उसने अपने बचपन में पकड़ा था जब वह मृत्यु के समीप पहुँच गया था। सुबह की पहली करण के स्पर्श के साथ ही वह कसी और जीवन में जागने के लए सो गया। अर्थात उसकी मृत्यु हो गई। ले खका ने गल्लू की मृत्यु के बाद उसका झूला उतारकर रख दिया और खड़की की जाली को बंद कर दिया, परंतु गलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के दूसरी ओर अर्थात बाहर चक चक करती ही रहती है और जूही के पौधे में भी बसंत आता ही रहता है। - सोनजुही की लता के नीचे ही ले खका ने गल्लू की समा ध बनाई थी अर्थात ले खका ने गल्लू को उस जूही के पौधे के निचे दफनाया था क्यों क गल्लू को वह लता सबसे अधक प्रय थी। ले खका ने ऐसा इस लए भी कया था क्यों क ले खका को उस छोटे से जीव का, कसी बसंत में जुही के पीले रंग के छोटे फूल में खल जाने का वश्वास, ले खका को एक अलग तरह की ख़्शी देता था।

*-प्रश्नों के उत्तर-

प्रश्न 1.सोनजुही में लगी पीली कली को देख ले खुका के मन में कौन से वचार उमड़ने लगे? उत्तर-सोनज्ही में लगी पीली कली को देखकर <mark>ले खका</mark> के मन में यह वचार आया क गल्लू सोनजुही के पास ही मट्टी में दबाया गया था। इस लए अब वह मट्टी में वलीन हो गया होगा और उसे चौंकाने के लए सोनज़्ही के पीले फूल के रूप में फूट आया होगा। प्रश्न 2.पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादिरित और अनादिरित प्राणी क्यों कहा गया है? उत्तर-हिंदू संस्कृति में ऐसी मान्यता है क पतृपक्ष में हमारे पूर्वज हमसे कुछ पाने के लए कौए के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसके अलावा कौए हमारे दूरस्थ रिश्तेदारों के आगमन की सूचना भी देते हैं, जिससे उसे आदर मलता है। दूसरी ओर कौए की कर्कश भरी काँव-काँव को हम अवमानना के रूप में प्रयुक्त करते हैं। इससे व<mark>ह तिरस्कार का पात्र बनता</mark> है। इस प्रकार एक साथ आदर और अनादर पाने के कारण कौए को समादरित और अनादरित कहा गया है। प्रश्न 3. गलहरी के घायल बच्चे का उपचार कस प्रकार कया गया? उत्तर-महादेवी वर्मा ने गलहरी के घायल बच्चे का उपचार बड़े ध्यान से ममतापूर्वक कया। पहले उसे कमरे में लाया गया। उसका खून पोंछकर घावों पर पें स लन लगाई गई। उसे रुई की बत्ती से दूध पलाने की को शश की गई। परंतु दूध <mark>की बूंदें मुँह के बाहर</mark> ही लुढ़क गईं। कुछ समय बाद मुँह में पानी टपकाया गया। इस प्रकार उसका ब<mark>ह्त</mark> कोमलतापूर्वक उपचार कया गया। प्रश्न 4.ले खको का ध्यान आक र्षत करने के लए गल्लू क्या करता था?

उत्तर-ले खका का ध्यान आक र्षत कर<mark>ने</mark> के लए गल्लू--उसके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और उसी तेज़ी से उतरता था। वह ऐसा तब तक करता था, जब तक ले खका उसे पकड़ने के लए न उठ जाती।

-भूख लगने पर वह चक- चक की आवाज़ करके ले खका का ध्यान खींचता था। प्रश्न 5. गल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लए ले खका ने क्या उपाय कया?

उत्तर-महादेवी ने देखा क गल्लू अपने हिसाब से जवान हो गया था। उसका पहला वसंत आ चुका था। खड़की के बाहर कुछ गलहरियाँ भी आकर चक चक करने लगी थीं। गल्लू उनकी तरफ प्यार से देखता रहता था। इस लए महादेवी ने समझ लया क अब उसे गलहरियों के बीच स्वच्छंद वहार के लए छोड़ देना चाहिए। चाहिए।ले खका ने गल्लू की जाली की एक कील इस तरह उखाड़ दी क उसके आने-जाने का रास्ता बन गया। अब वह जाली के बाहर अपनी इच्छा से आ-जा सकता था। प्रश्न 6. गल्लू कन अर्थों में परिचारिका की भू मका निभा रहा था?

उत्तर-ले खका एक मोटर दुर्घटना में आहत हो गई थी। अस्वस्थता की दशा में उसे कुछ समय बिस्तर पर रहना पड़ा था। ले खका की ऐसी हालत देख गल्लू परिचारिका की तरह उसके सरहाने त कए पर बैठा रहता और अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके (ले खका के) सर और बालों को इस तरह सहलाता मानो वह कोई परिचारिका हो।

प्रश्न 7. गल्लू की कन चेष्टाओं से यह आभास मलने लगा था क अब उसका अंत समय समीप है? उत्तर- गल्लू की निम्न ल खत चेष्टाओं से महा<mark>देवी को</mark> लगा क अब उसका अंत समीप है--उसने दिनभर कुछ भी नहीं खाया।

- वह रात को अपना झूला छोड़कर महादेवी के बिस्तर पर आ गया और उनकी उँगली पकड़कर हाथ से चपक गया।

प्रश्न ८.'प्रभात की प्रथम करण के स्पर्श के साथ ही वह कसी और जीवन में जागने के लए सो गया'का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-आशय यह है गल्लू का अंत समय निकट आ गया था। उसके पंजे ठंडे हो गए थे। उसने ले खका की अँगुली पकड़ रखा था। उसने उष्णता देने के लए हीटर जलाया। रात तो जैसे-तैसे बीती परंतु सवेरा होते ही गल्लू के जीवन का अंत हो गया।

प्रश्न 9.सोनजुही की लता के नीचे बनी ग<mark>ल्लू की समाध से ले खको के मन में कस वश्वास का</mark> जन्म होता है?

उत्तर-सोनजुही की लता के नीचे गल्लू की समाध बनी थी। इससे लेखका के मन में यह वश्वास जम गया क एक-न-एक दिन यह गल्लू इसी सोनजुही की बेल पर पीले चटक फूल के रूप में जन्म ले लेगा।

*-लघ् उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.ले खका को अकस्मात कस छोटे जीव का स्मरण हो आया और कैसे?

उत्तर-ले खका ने देखा क सोनजुही में पीली कली आ गई है। यह देखकर उसे अकस्मात छोटे जीव

गल्लू का स्मरण हो आया। सोनजुही की इसी सघन हरियाली में गल्लू छिपकर बैठता था जो

अचानक ले खका के कंधे पर कूदकर उसे चौंका देता था। ले खका को लगा क पीली कली के रूप में

गल्लू ही प्रकट हो गया है।

प्रश्न 2.कौए की काँव-काँव के बाद भी मनुष्य उसे कब आदर देता है और क्यों? उत्तर-कौए की काँव-काँव के बाद भी मनुष्य उसे पतृपक्ष में आदर देता है, क्यों क हमारे समाज में ऐसी मान्यता है क हमारे पुरखे हमसे कुछ पाने के लए पतृपक्ष में कौओं के रूप में आते हैं। इसके अलावा कौआ हमारे कसी दूरस्थ के आने का संदेश भी लेकर आता है।

प्रश्न 3.कौए अपना स्लभ आहार कहाँ खोज रहे थे और कैसे?

उत्तर-ले खका ने देखा क गमले और दीवार की संध में गलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवत-घोंसले से गर पड़ा होगा। कौए उसे उठाने के प्रयास में चोंच मार रहे थे। इसी छोटे बच्चे में कौए अपना सुलभ आहार खोज रहे थे।

प्रश्न 4.ले खका की अनुपस्थिति में गल्लू प्रकृति के सान्निध्य में अपना जीवन कस प्रकार बिताता था?

उत्तर-ले खका की अनुपस्थिति में गल्लू खड़की में बनी जाली को उठाने से बने रास्ते द्वारा बाहर चला जाता था। वह दूसरी गलहरियों के झुंड में शा मल होकर उनका नेता बन जाता और हर डाल पर उछल-कूद करता रहता था। वह ले खका के लौटने के समय कमरे में वापस आ जाता था। प्रश्न 5. गल्लू का प्रय खादय क्या था? इसे न पाने पर वह क्या करता था?

उत्तर-गल्लू का प्रय खाद्य काजू था। इसे वह अपने दाँतों से पकड़कर कुतर-कुतरकर खाता रहता था। गल्लू को जब काजू नहीं मलता था तो वह खाने की अन्य चीजें लेना बंद कर देता था या उन्हें झूले से नीचे फेंक देता था।

प्रश्न 6.ले खका ने कैसे जाना क गल्लू उसकी अनुपस्थिति में दुखी था?

उत्तर-ले खको एक मोटर दुर्घटना में घायल हो गई। इससे उसे कुछ समय अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब ले खका के कमरे का दरवाजा खोला जाता तो गल्लू झूले से नीचे आता परंतु कसी और को देखकर तेजी से भागकर झुले में चला जाता। सब उसे वहीं काजू दे आते, परंतु जब ले खका ने अस्पताल से आकर झूले की सफ़ाई की तो उसे झूले में काजू मले जिन्हें गल्लू ने नहीं खाया था। इससे ले खका ने जान लया क उसकी अनुपस्थिति में गल्लू दुखी थी।

प्रश्न 7.भोजन के संबंध में ले खका को अन्य पालतू जानवरों और गल्लू में क्या अंतर नज़र आया? उत्तर-ले खका ने अनेक पशु-पक्षी पाल रखे थे, जिनसे वह बहुत लगाव रखती थी परंतु भोजन के संबंध में ले खका को अन्य पालतू जानवरों और गल्लू में यह अंतर नज़र आया क उनमें से अिकसी जानवर ने ले खका के साथ उसकी थाली में खाने की हिम्मत नहीं क जब क गल्लू खाने के समय मेज़ पर आ जाता और ले खका की थाली में बैठकर खाने का प्रयास करता।

ट्याकरण-

दो स्वरों के मेल से होने वाले वकार (परिवर्तन) को स्वर-संध कहते हैं। जैसे - वद्या + आलय = वद्यालय। स्वर-संध पाँच प्रकार की होती हैं-

- 1. दीर्घ संध
- 2. गुण संध
- 3. वृद्ध संध
- 4. यण संध
- 5. अयादि संध

दीर्घ सं ध-

सूत्र-अक: सवर्णे दीर्घः अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनो मलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अक्षा + अक्षा = आ अ + अ = आ --> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ / अ +अ=आ अ + आ = आ --> हिम + आलय = हिमालय /

अ + आ =आ--> <mark>पुस्तक + आलय = पुस्तकालय</mark>

अ+आ=आ

क+अ

अ+ आ=आ

आ + अ = आ --> वद्या + अर्थी = वद्यार्थी /

आ +अ=आ

आ + आ = आ --> वद्या + आलय = वद्यालय आ+आ=आ

(ख) इ और ई की संध

 \$\xi\$ + \$\xi\$ = \$\xi\$ --> \$\xi\$ a + \$\xi\$ = \$\xi\$ \text{7.5} \$\text{7.5}\$
 \$\xi\$ +\$ = \$\xi\$ = \$\xi\$ | \$\x

इ + ई = ई --> गरि + ईश = गरीश; मुनि + ईश = मुनीश इ+ई=ई इ+ ई = ई

ई + इ = ई- मही + इंद्र = महींद्र ; नारी + इंदु = नारींदु

ई + ई = ई- नदी + ईश = नदीश; मही + ईश = महीश .

(ग) उ और ऊ की संध

उ + उ = ज- भानु + उदय = भानूदय; वधु + उदय = वधूदय

गुण सं धइसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-सं ध कहते हैं। जैसे -

अ + ई = ए; नर + ईश= नरेश

आ + इ = ए; महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

अ +उ =ओ

आ + उ = ओ महा + उत्सव = महोत्सव आ +उ =ओ

अ + ऊ = ओ जल + ऊर्म = जलोर्म; आ + ऊ = ओ महा + ऊर्म = महोर्म।

वृद्ध संध

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्ध संध कहते हैं। जैसे -

(a)
$$3 + v = \dot{v}$$
; $va + va = vaa$;

अ + ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य

आ + ए = ऐ ; सदा + एव = सदैव

```
आ + ऐ = ऐ; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
(ग) अ + ओ = औ वन + औष ध = वनौष ध;
```

यण संध

(क) इ, ई के आगे कोई वजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

(ख) उ, ऊ के आगे कसी वजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

(ग) 'ऋ' के आगे कसी वजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-सं ध कहते हैं।

(घ)

अयादि संध

ए, ऐ और ओ औ से परे कसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संध कहते हैं।

व्यंजन संध

व्यंजन का व्यंजन से अथवा कसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संध कहते हैं। जैसे-शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। उज्जवल

```
(क) कसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल कसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या
य, र्, ल्, व्, ह या कसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को इ और प् को ब् हो
जाता है। जैसे -
क + ग = ग्ग दिक + गज = दिग्गज। क + ई = गी वाक + ईश = वागीश
च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन
प + ज + ब्ज अप + ज = अब्ज
(ख) यदि कसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके
स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे -
क् + म = ं वाक + मय = वाङ्मय च् + न = ं अच् + नाश = अंनाश
ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन
प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय
ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या कसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -
त् + भ = द्भ सत् + भावना = सद्भावना त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश
त् + भ = द्भ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप
त् + ध = द्ध सत् + धर्म = सद्धर्म
(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर
ड़ और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -
त् + च = च्च उत् + चारण = उच्चारण त् + ज = ज्ज सत् + जन = सज्जन
त् + झ = ज्झ उत् + झटिका = उज्झटिका त् + ट = ट्ट तत् + टीका = तट्टीका
त् + ड = इंड उत् + डयन = उंड्डयन त् + ल = ल्ल उत् + लास = उल्लास
(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ बन जाता है। जैसे -
त् + श् = च्छ उत् + श्वास = उच्छ्वास त् + श = च्छ उत् + शष्ट = उच्छिष्ट
त् + श = च्छ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र
(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे -
त् + ह = द्ध उत् + हार = उद्धार त् + ह = द्ध उत् + हरण = उद्धरण
त् + ह = द्ध तत् + हित = तद्धत
(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे -
अ + छ = अच्छ स्व + छंद = स्वच्छंद आ + छ = आच्छ आ + छादन = आच्छादन
इ + छ = इच्छ सं ध + छेद = सं धच्छेद उ + छ = उच्छ अन् + छेद = अन्चछेद
(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अन्स्वार में बदल जाता है। जैसे -
म् + च् = ं कम् + चत = कं चत म् + क = ं कम् + कर = कंकर
म् + क = ं सम् + कल्प = संकल्प म् + च = ं सम् + चय = संचय
म् + त = ं सम् + तोष = संतोष म् + ब = ं सम् + बंध = संबंध
```

म् + प = ं सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(झ) म् के बाद म का द्वत्व हो जाता है। जैसे -

म् + म = म्म सम् + मित = सम्मिति म् + म = म्म सम् + मान = सम्मान

(ञ)म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे -

म् + य = ं सम् + योग = संयोग म् + र = ं सम् + रक्षण = संरक्षण

म् + व = ं सम् + वधान = संवधान म् + व = ं सम् + वाद = संवाद

म् + श = ं सम् + शय = संशय म् + ल = ं सम् + लग्न = संलग्न

म् + स = ं सम् + सार = संसार

(ट) ऋ, र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। जैसे -

र् + न = ण परि + नाम = परिणाम र् + म = ण प्र + मान = प्रमाण

(ठ) स् से पहले अ, आ से भन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -

भ् + स् = ष अ भ + सेक = अ भषेक नि + सद्ध = निषद्ध व + सम + वषम

वसर्ग-संध : ह

वसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर वसर्ग में जो वकार होता है उसे वसर्ग-संध कहते हैं। जैसे- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

(क) वसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो वसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे -

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल ; अधः + गति = अधोगति ; मनः + बल = मनोबल

(ख) वसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो वसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे -

निः + आहार = निराहार ;

निः + आशा = निराशा

निः + धन = निर्धन

(ग) वसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो वसर्ग का श हो जाता है। जैसे -

निः + चल = निश्चल ; निः + छल = निश्छल ; दः + शासन = द्श्शासन

(घ) वसर्ग के बाद यदि त या स हो तो वसर्ग स् बन जाता है। जैसे -

नमः + ते = नमस्ते ;

निः + संतान = निस्संतान ;

दुः + साहस = दुस्साहस

(ङ) वसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो वसर्ग का ष हो जाता है। जैसे -

निः + कलंक = निष्कलंक :

चत्ः + पाद = चत्ष्पाद;

निः + फल = निष्फल

(च) वसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भन्न स्वर हो तो वसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे -

निः + रोग = निरोग;

निः + रस = नीरस

(छ) वसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर वसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे -अंतः + करण = अंतःकरण

*लेखन-अनुच्छेद-

१-महानगरीय जीवन-एक वरदान या अ भशाप-

संकेत बिंद्

शहरों की ओर बढ़ते कदम

दिवास्वप्न

वरदान रूप

महानगरीय जीवन-एक अ भशाप

आदिकाल में जंगलों में रहने वाले मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गईं। उसने इन आवश्यकताओं की पूर्ति का केंद्र शहर प्रतीत हुए और उसने शहरों की ओर कदम बढ़ा दिए। महानगरों का अपना वशेष आकर्षण होता है। यही चमक-दमक गाँवों में या छोटे शहरों में रहने वालों को वशेष रूप से आक र्षत करती है। उसे यहाँ सब कुछ आसानी से मलता प्रतीत होता है। इसी दिवास्वप्न को देखते हुए उसके कदम महानगरों की ओर बढ़े चले आते हैं। इसके अलावा वह रोज़गार और बेहतर जीवन जीने की लालसा में इधर चला आता है।धनी वर्ग के लए महानगर कसी वरदान से कम नहीं। उनके कारोबार यहाँ फलते-फूलते हैं। कार, ए.सी., अच्छी सड़कें, वला सता की वस्तुएँ, चौबीसों घंटे साथ निभाने वाली बिजली यहाँ जीवन को स्व र्गक आनंद देती हैं। इसके वपरीत गरीब आदमी का जीवन यहाँ दयनीय है। रहने को म लन स्थानों पर झुग्गियाँ, चारों ओर फैली गंदगी, मलावटी वस्तुएँ, दूषत हवा, प्रदूषत पानी यहाँ के जीवन को नारकीय बना देते हैं। ऐसा जीवन कसी अभशाप से कम नहीं।

२--ऋतुराज-वसंत-

- ऋतुराज क्यों
- जड़-चेतन में नवोल्लास
- स्वास्थ्यवर्धक ऋत्
- वसंत ऋतु के त्योहार

हमारे देश भारत में छह ऋतुएँ पाई जाती हैं। इनमें से वसंत को ऋतुराज कहा जाता है। इस काल में न शीत की अ धकता होती है और न ग्रीष्म का तपन। वर्षा ऋतु का कीचड़ और कीट-पतंगों का आ धक्य भी नहीं होता है। माघ महीने की शुक्ल पंचमी से फाल्गुन पू र्णमा तक ही यह ऋतु बहुत-ही सुहावनी होती है। इस समय पेड़-पौधों में नवांकुर फूट पड़ते हैं। लताओं पर क लयाँ और फूल आ जाते हैं। चारों दिशाओं में फूलों की सुगंध, कोयल कूक तथा वासंती हवा की सरसर से वातावरण उल्लासमय दिखता है। इस ऋतु का असर बच्चों, युवा, प्रौढ़ों और वृद्धों पर दिखता है। उनका तन-मन उल्लास से भर जाता है। यह ऋतु स्वास्थ्यवर्धक मानी गई है। स्वास्थ्य के अनुकूल जलवायु, सुंदर वातावरण तथा प्राणवायु की अ धकता के कारण संचार बढ़ जाता है। इससे मन में एक नया उल्लास एवं उमंग भर उठता है। वसंत पंचमी, होली इस ऋतु के त्योहार हैं। वसंत पंचमी के दिन ज्ञानदायिनी सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है तथा होली के दिन रंगों में सराबोर हम खुशी में इब जाते हैं।

३--बदलती दुनिया में पीछे छूटते जीवन मूल्य-

संकेत बिंदु-

- संसार परिवर्तनशील
- बदलाव का प्रभाव खोते नैतिक मुल्य

यह संसार परिवर्तनशील है। यह पल-पल परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण कल तक जो नया था वह आज पुराना हो जाता है। कुछ ही वर्षों के बाद दुनिया का बदला रूप नज़र आने लगता है। इस परिवर्तन से हमारे जीवन मूल्य भी अछूते नहीं हैं। इन जीवन मूल्यों में बदलाव आता जा रहा है। इससे व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल रहा है। यह बदलाव व्यक्ति के व्यवहार में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वज्ञान की खोजों के कारण हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है। पैदल और बैलगाड़ी पर सफ़र करने वाला मनुष्य वातानुकू लत रेलगा इयों और तीव्रगामी वमानों से सफ़र कर रहा है। हरकोर और कबूतरों से संदेश भेजने वाला मनुष्य आज टेलीफ़ोन और तार की दुनिया से भी आगे आकर मोबाइल फ़ोन पर आमने-सामने बातें करने लगा है।दुर्भाग्य से हमारे जीवन मूल्य इस प्रगति में पीछे छूटते गए। कल तक दूसरों के लए

त्याग करने वाला, अपना सर्वस्व दान देनेवाला मनुष्य आज दूसरों का माल छीनकर अपना कर लेना चाहता है। परोपकार, उदारदता, मत्रता, परदुखकातरता, सहानुभूति, दया, क्षमा, साहस जैसे मूल्य जाने कहाँ छूटते जा रहे हैं। हम स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं।

४--सच्चा मत्र-

संकेत बिंदु-

- मत्र की आवश्यकता क्यों
- सच्चे मत्र के ग्ण
- मत्र चयन में सावधानियाँ सच्चे मत्र कौन?

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसके जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं। वह अपनी बातें दूसरों को बताकर दुख कम करना चाहता है। ऐसे में उसे एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत पड़ती है तो उसका सच्चा हमराज़ बन सके, उसके सुख-दुख में साथ दे। इन्हें ही मत्र कहा जाता है। एक सच्चा मत्र औष ध के समान होता है जो व्यक्ति की हर दुख-तकलीफ को हर लेता है। वह आप त के समय व्यक्ति को अकेला नहीं छोड़ता है। वह अपने मत्र के कुमार्ग पर बढ़ते कदमों को रोककर सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है। वह अपने मत्र की कटु बातों को मन पर नहीं लेता है तथा मत्र की भलाई के वषय में ही सदैव सोचता है। मत्र का चयन करते समय सावधान रहना चाहिए। चकनी-चुपड़ी बातें करने वाले, वप त के समय न टिकने वाले मत्रों से सावधान रहना चाहिए। ऐसे लोग संकटकाल में अपने मत्र को उसी प्रकार छोड़ देते हैं; जैसे-जाल पड़ने पर पानी मछ लयों का साथ छोड़ देता है। आज कपटी मत्रों की भी कमी नहीं। अतः इनसे सदैव सावधान रहने की ज़रूरत है। वप त के समय साथ देने वाले, निःस्वार्थ मदद करने वाले, की हुई मदद का गान न करने वाले हमारे सच्चे मत्र होते हैं।

५--देश हमारा सबसे प्यारा-

संकेत बिंदु-

- भारत का नामकरण
- प्राकृतिक सौंदर्य
- अनेकता में एकता
- प्राचीन परंपरा वर्तमान में भारत

स्वर्ग के समय जिस धरा पर मैं रहता हूँ, दुनिया उसे भारत के नाम से जानती-पहचानती है। प्राचीन काल में यहाँ आर्यों (सभ्य) का निवास था, इस कारण इसे आर्यावर्त कहा जाता था। प्राचीन साहित्य में इसे जंबूदवीप के नाम से भी जाना जाता था। कहा जाता है क प्रतापी राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रतापी पुत्र भरत के नाम पर इसका नाम भारत पड़ा। भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अ प्रतम है। यहाँ छह ऋतुएँ बारी-बारी से आकर अपना सौंदर्य बिखरा जाती हैं। इसके उत्तर में मुकुट रूप में हिमालय है। द क्षण में सागर चरण पखारता है। गंगा-यमुना जैसी पावन निदयाँ इसके सीने पर धवल हार की भांति प्रवाहित होती हैं। यहाँ के हरे-भरे वन इस सौंदर्य को और भी बढ़ा देते हैं। यहाँ व भन्न भाषा-भाषी, जाति-धर्म के लोग रहते हैं। उनकी वेषभूषा, रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाजों में पर्याप्त अंतर है फर भी हम सभी भारतीय हैं और मल-जुलकर रहते हैं। यहाँ की परंपरा अत्यंत प्राचीन, महान और समृद्धशाली है। भारतीय संस्कृति की गणना प्राचीनतम संस्कृतियों में की जाती है। वर्तमान में भारत को स्वार्थपरता, आतंकवाद, गरीबी, निरक्षरता आदि का सामना करना पड़ रहा है तथा मानवीय मूल्य कहीं खो गए-से लगते हैं। नेताओं की स्वार्थलोलुपता ने रही-सही कसर पूरी कर दी है, फर भी हमें निराश होने की जरूरत नहीं है। भारत एक-न-एक दिन अपना खोया गौरव अवश्य प्राप्त करेगा॥

*-पत्र-लेखन-

१-अपने मत्र को अपने भाई की शादी में आमंत्रित करने के लए एक पत्र लखें। अ ब स अपार्टमेंट,

लोधी रोड,

नई दिल्ली।

29 सतंबर,

प्रय दी पका,

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करती हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मेरे भाई की शादी इसी साल दिसंबर में हो रही है। क्या आपको पछले साल मेरे जन्मदिन की पार्टी में शरकत करने आए उनकी दोस्त याद है? यह वही लड़की है। वे तब से एक-दूसरे को जानते हैं। अब दोनों ने माता- पता की सहमित से शादी के बंधन में बंधने का फैसला कया है और इस अवसर पर दोनों परिवार खुश हैं। आप सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम 10 दिसंबर से शुरू होगी और 15 दिसंबर तक चलेगी। सतःल वही 'महराजा फोर्ट' है जहां हमने आपके चचेरे भाई की शादी में शरकत की थी। मैं आपसे एक सप्ताह पहले पहुंचने का अनुरोध करती हूं। ता क हम एक साथ योजना बना सकें और खरीदारी कर सकें। मैं जानती हूं क आप भी उतनी ही उत्साहित होंगी जितना क मैं हूं। मेरी मां ने पहले ही आपके परिवार

से संपर्क कया है और उन्हें समारोह की तारीख, समय और स्थान के बारे में सू चत कया है। आप सभी से निवेदन है क सुंदर क्षण में उपस्थित रहें। ले कन यह मेरे सबसे अच्छे दोस्त के लए मेरा व्यक्तिगत निमंत्रण है। अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालें क्यों क कसी भी बहाने अनुमित नहीं है। तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रही हु। आपसे मलने की उम्मीद है। तुम्हारा सहेली

य र ल

2-अपने मत्र को लगभग 150 शब्दों में अपने बो ईंग स्कूल के अनुभव का वर्णन करते हुए एक पत्र लखें।

अ ब स अपार्टमेंट

लोधी रोड

नई दिल्ली

29 सतंबर, 20

प्रय मत्र

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.
जैसा क आप जानते हैं क मुझे एक वो ईंग स्कूल में प्रवेश मला है। मैं अपने शुरुआती दिनों के अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता था। पहले मुझे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था क्यों क मैं बचपन से अपने परिवार से कभी दूर नहीं हुआ हूं। ले कन हम अपने आप को एक छोटी सी दुनिया में कैद नहीं कर सकते हैं जो हमारे आराम के स्तर से मेल खाता है। मैं उस समय आपकी कीमती सलाह के लए धन्यवाद देना चाहता हूं जब मुझे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। आपने कहा था क हमें परिसर में आए बिना निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए। आपके शब्द वास्तव में उत्साहजनक थे|उस समय यह एक साह सक निर्णय लगता था ले कन अब मैं धीरे-धीरे और खुशी से नए वातावरण के प्रति सजग हो रहा हूं। समय बीतने के साथ मुझे महसूस हुआ क यहाँ का स्टाफ इतना समझदार और सहयोगी है। मुझे उनके साथ समायोजित होने में आसानी हुई। यहां पढ़ाने का तरीका बहुत प्रभावशाली है और मेरे पछले स्कूल से बिल्कुल अलग है। सह-पाठयक्रम गति व धयों पर अ धक ध्यान व भन्न बलांकों से दोस्त बनाने में बहुत मदद करता है। मुझे लगने लगा है क मैं अब इस संस्था का हिस्सा हूं। मेरे नए स्कूल के बारे में साझा करने के लए बहुत कुछ है जब हम मलेंगे। बेसबी से इंतजार है जल्द ही आपको देखने का।

तुम्हारा दोस्त

अ भनव

3-अपने मत्र को एक पत्र लखें जो सर्फ एक दुर्घटना के साथ मला, जो उसे लगभग 150 शब्दों में एक सांत्वना भरे स्वर में उसकी त्वरित वसूली के बारे में सू चत करता है। अ ब स अपार्टमेंट

लोधी रोड

नर्ड दिल्ली

29 सतंबर, 20

प्रय माधव,

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मैं कल कॉफ़ी हाउस में शव से मला था और उन्होंने मुझे बताया था क पछले सप्ताह आप एक गंभीर दुर्घटना से ग्र सत हुए। खबर सुनकर मैं वास्तव में चौंक गया था और आपकी भलाई के बारे में चंतित था। शव ने मुझसे कहा क तुम्हारे बाएं हाथ में भी मामूली फ्रैक्चर आया है। सड़क दुर्घटनाएं वास्तव में अब एक चंता का कारण बन रही हैं।

सरकार द्वारा 'मोटर वाहन अ धनियम' जैसी कठोर नीतियों के बाद भी, उन्हें पूरी तरह से रोकना मुश्किल है। आपको अभी से सावधान रहना चाहिए। हमारी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। एक छोटी सी गलती से भारी भूल हो सकती है। मैं आपको वाहन चलाते समय चौकस और अनुशा सत रहने की सलाह देता हूं। मैं सप्ताहांत में आपसे मलने की योजना बना रहा हूं। मुझे उम्मीद है और आप जल्द ठीक हो जाएं।

ख्याल रखना।

त्म्हारा दोस्त

य र ल

गद्य पाठ-१ -दुःख अ धकार

लेखक – यशपाल जन्म – 1903

*पाठ सार-लेखक के अनुसार मनुष्यों का पहनावा ही समाज में मनुष्य का अधकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करता है। परन्तु लेखक कहता है क समाज में कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है क हम समाज के ऊँचे वर्गों के लोग छोटे वर्गों की भावनाओं को समझना चाहते हैं परन्त् उस समय समाज में उन ऊँचे वर्ग के लोगों का पहनावा ही उनकी इस भावना में बाधा बन जाती है।लेखक अपने द्वारा अनु<mark>भव क</mark>ये गए एक दृश्य का वर्णन करता ह्आ कहता है क एक दिन लेखक ने बाज़ार में, फुटपा<mark>थ पर कुछ खरबूजों को टोकरी में और कुछ को</mark> ज़मीन पर रखे हुए देखा। खरबूजों के नज़दीक ही एक ढलती उम्र की औरत बैठी रो रही थी। लेखक कहता है क खरबूज़े तो बेचने के लए ही रखे गए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लए कोई कैसे आगे बढ़ता? क्यों क खरबूजों को बेचने वाली औरत ने तो कपड़े में अपना मुँह छिपाया हुआ था और उसने अपने सर को घुटनों पर रखा हुआ था और वह बुरी तरह से बिलख बिलख कर रो रही थी। लेखक कह -ता है क उस औरत का रोना देखकर लेखक के मन में दुःख की अनुभूति हो रही थी, परन्तु उसके रोने का कारण जानने का उपाय लेखक को समझ नहीं आ रहा था क्यों क फ्टपाथ पर उस औरत के नज़दीक बैठ सकने में लेखक का पहनावा लेखक के लए समस्या खड़ी कर रहा था क्यों क लेखक ऊँचे वर्ग का था और वह औरत छोटे वर्ग की थी।लेखक कहता है क उस औरत को इस अवस्था में देख कर एक आदमी ने नफरत से एक तरफ़ थूकते हुए कहा क देखो क्या ज़माना हैजवान लड़के को ! मरे हुए अभी पूरा दिन नहीं बीता और यह बेशर्म दुकान लगा के बैठी है। वहीं खड़े दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे क अरे, जैसा इरादा होता है अल्ला भी वैसा ही लाभ देता है।

लेखक कहता है क सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने मा चस की तीली से कान खुजाते हुए कहा अरे, इन छोटे वर्ग के लोगों का क्या है? इनके लए सर्फ रोटी ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है।इनके लए बेटाबेटी-, पितपत्नी-, धर्मईमान सब रोटी का टुकड़ा है। - इन छोटे लोगों के लए कोई भी रिश्ता रोटी नहीं है। जब लेखक को उस औरत के बारे में

जानने की इच्छा हुई तो लेखक ने वहाँ पासपड़ोस की दुकानों से उस औरत- के बारे में पूछा और पूछने पर पता लगा क उसका तेईस साल का एक जवान लड़का था। घर में उस औरत की बहू और पोता-पोती हैं। उस औरत का लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में सब्जियाँ उगाने का काम करके परिवार का पालन पोषण करता था। लड़का परसों सुबह अँधेरे में ही बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। खरबूजे चुनते हुए उसका पैर दो खेतों की गीली सीमा पर आराम करते हुए एक साँप पर पड़ गया।

साँप ने लड़के को इस लया।लेखक कहता है क जब उस औरत के लड़के को साँप ने डँसा तो उस लड़के की यह बुढ़िया माँ पागलों की तरह भाग कर झाड़फूँक करने वाले को बुला लाई। - फूँकना हुआ। न-झाड़नाागदेव की पूजा भी हुई।लेखक कहता है क पूजा के लए दानद क्षणा - तो चाहिए ही होती है। उस औरत के घर में जो कुछ आटा और अनाज था वह उसने दान द क्षणा में दे दिया। पर भगवाना जो एक बार चुप हुआ तो फर न बोला। लेखक कहता है क ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे वदा कया जा सकता है? उसके लए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लए उस लड़के की माँ के हाथों के ज़ेवर ही क्यों न बिक जाएँ।

लेखक कहता है की भगवाना तो परलोक चला गया और घर में जो कुछ भी अनाज और पैसे थे वह सब उसके अन्तिम संस्कार करने में लग गए। लेखक कहता है क बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लग गए। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता।क्यों क समाज में माना जाता है क कमाई केवल लड़का कर सकता है और उस औरत के घर में कमाई करना वाला लड़का मर गया था तो अगर कोई उधार देने की सोचता तो यह सोच कर नहीं देता क लौटाने वाला उस घर में कोई नहीं है। यही कारण था क बुढ़िया रोतेपोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे -रोते और आँखें पोंछते-टोकरी में समेटकर बाज़ार की ओर बेचने के लए आ गई।

उस बेचारी औरत के पास और चारा भी क्या था? लेखक कहता है क बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके बाज़ार तो आई थी, परंतु सर पर चादर लपेटे, सर को घुटनों पर टिकाए हुए अपने लड़के के मरने के दुःख में बुरी तरह रो रही थी। लेखक अपने आप से ही कहता है क कल जिसका बेटा चल बसा हो, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली आई है, इस माँ ने कस तरह अपने दिल को पत्थर कया होगा?

लेखक कहता है क जब कभी हमारे मन को समझदारी से कोई रास्ता नहीं मलता तो उस कारण बेचैनी हो जाती है जिसके कारण कदम तेज़ हो जाते हैं। लेखक भी उसी हालत में नाक ऊपर उठाए चल रहा था और अपने रास्ते में चलने वाले लोगों से ठोकरें खाता हुआ चला जा रहा था और सोच रहा था क शोक करने और गम मनाने के लए भी इस समाज में सुवधा चाहिए औरदुःखी होने का भी एक अधकार होता है ...|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तरः

प्रश्न ज्ञ (लेखक कसके रोने का कारण नहीं जान सका रु

%Ao बच्चे के

Bo बुढिया के

% 0 दूकान वाले के

%Do इनमें से कोई नहीं

प्रश्न द्व (बुढ़िया के दुःख को दे<mark>ख कर</mark> लेखक को कसकी याद आई रु

%0 अपनी माँ की

% गाँव की

९८० <u>संभ्रांत महिला की</u>

९Do बच्चों की

प्रश्न घ (समाज में मनुष्यों का अधकार और उसका दर्जा कैसे सुनिश्चित होता है रु

९<mark>४० रहन सहने</mark>-

% खान पान-

९८० <u>पोशाक से</u>

%Do क, ख दोनों

प्रश्न द्व (खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया के बेटे का क्या नाम था रु

%० <u>भगवाना</u>

®o भगावना

९८० भागवाना

vDo भागवन

प्रश्न छ (प्त्र की मृत्यु के अगले दिन कसे बाज़ार आना पड़ा रु

%0 लेखक को

%0 पडोसी को

९८० <u>बुढिया को</u> ९०० दल में मे

९Do इन में से कसी को नहीं

प्रश्न ट (बुढ़िया को पुत्र की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार क्यों आना पड़ा रू

%० <u>खरबूजे बेचने</u>

Bo सब्ज़ी खरीदने

%C ० घूमने

vDo इन में से कसी को नहीं

प्रश्न ठ (कहानी में कसके मरने पर तरह दिन का सूतक कहा गया है रु

९<u>४० बच्चे के</u>

%Bo स्त्री के

९८० वृद्ध के

%Do पड़ोसी के

प्रश्न ड (कहानी में लोगों ने कसे पत्थर दिलु कहा है रू

%0 लेखक को

Bo <u>बुढिया को</u>

९८० भगवाना को

%Do पड़ौ सन को

प्रश्न ढ (कसके दुःख को देखकर लेखक को संभ्रांत महिला की याद आई रु

<mark>९</mark>४० <u>बढिया को</u>

Bo पड़ोसी को

९८० द्कानवालों को

vDo इनमे से कोई नहीं

प्रश्न 🗊 (लेखक के अनुसार कसे दुःख मनाने का अ धकार नहीं है 🤝

% वुढ़िया को

Bo पड़ोसी को

९८० <u>गरीबों को</u>

%Do बच्चों को

*निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों दीजिए-

निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों दीजिए-प्रश्न 1. कसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है? उत्तर कसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें उसका दर्जा तथा उसके अधकारों का ज्ञान होता है।- प्रश्न 2.खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तरखरबूजे बेचने वाली अपने पुत्र की मौत का एक दिन बीते- बिना खरबूजे बेचने आई थी। सूतक वाले घर के खरबूजे खाने से लोगों का अपना धर्म भ्रष्ट होने का भय सता रहा था, इस लए उससे कोई खरबूजे नहीं खरीद रहा था।

प्रश्न 3.उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर-उस स्त्री को फुटपाथ पर रोता देखकर लेखक के मन में व्यथा उठे वह उसके दुःख को जानने के लए बेचैन हो उठा।

प्रश्न 4.उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था? उत्तर-.सांप के काटने के कसरण स्त्री क्र बेटे की मृत्यु ह्ई।

फ्र) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर (द्वछ(घए शब्दों में) ल खए-

प्रश्न ज्ञ(मन्ष्य के जीवन में पोशा<mark>क का</mark> क्या महत्त्व हैरु

उत्तर - मनुष्य के जीवन में पोशाक का अत्य धक महत्त्व है क्यों क समाज में कसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें उस व्यक्ति की है सयत और जीवन शैली का पता लगत। है। एक अच्छी पोशाक व्यक्ति की समृद्ध का प्रतीक भी कही जा सकती है। हमारी पोशाक हमें समाज में एक निश्चित दर्जा दिलवाती है। पोशाक हमारे लए कई दरवाज़े खोलती है। कभी कभी वही पोशाक हमारे लए अड़चन भी बन जाती है।

प्रश्नद्द (पोशाक हमारे लए कब बंधन और अड़चन बन जाती हैरु

उत्तर - कभी कभार ऐसा होता है क हम नीचे झुक कर समाज के दर्द को जानना चाहते हैं। ऐसे समय में हमारी पोशाक अड़चन बन जाती है क्यों क अपनी पोशाक के कारण हम झुक नहीं पाते हैं। हमें यह डर सताने लगता है क अच्छे पोशाक में झुकने से आस पास के लोग क्या कहेंगे। कहीं अच्छी पोशाक में झुकने के कारण हम समाज में अपना दर्जा न खो दें।

प्रश्नध (लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पायारु

उत्तर - लेखक एक सम्पन्न वर्ग से सम्बन्ध रखता है। उसने अपनी संपन्नता के हिसाब से कपड़े पहने हुए थे। इस लए वह झुक कर या उस बुढ़िया के पास बैठकर उससे बातें करने में असमर्थ था। इस लए वह उस स्त्री के रोने का कारण नहीं जान पाया।

प्रश्नद्ध (भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता थारु

उत्तर - भगवाना पास में ही एक ज़मीन पर किछ्यारी करके अपना और अपने परिवार का निर्वाह करता था। वह उस ज़मीन में खरबूजे उगाता था। वहाँ से वह खरबूजे तोड़कर लाता था और बेचता था। कभी-कभी वह स्वयं दुकानदारी करता था तो कभी दुकान पर उसकी माँ बैठती थी। प्रश्ना (लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ीरू

उत्तर - लड़के के इलाज में बुढ़िया की सारी जमा पूँजी ख़त्म हो गई थी। जो कुछ बचा था वह लड़के के अंतिम संस्कार में खर्च हो गया। अब लड़के के बच्चों की भूख मटाने के लए यह जरूरी था क बुढ़िया कुछ कमा कर लाए। उसकी बहू भी बीमार थी। इस लए लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लए निकलना पड़ा।

प्रश्नट (बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आईरु उत्तर - बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इस लए आई क उस संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु पछले साल ही हुई थी। पुत्र के शोक में वह महिला ढ़ाई महीने बिस्तर से उठ नहीं पाई थी। उसकी खातिरदारी में डॉक्टर और नौकर लगे रहते थे। शहर भर के लोगों में उस महिला के शोक मनाने की चर्चा थी और यहाँ बाजार में भी सभी उसी तरह बुढ़िया के बारे में बात कर रहे थे।

*९ख) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर (छण(टण शब्दों में) ल खए-

प्रश्नज्ञ बाजार के लोग खरबूजे बे<mark>चनेवा</mark>ली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थेरू अपने शब्दों में ल खए।

उत्तर - बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में तरह तरह की बातें कर रहे थे। कोई कह रहा था क बेटे की मृत्यु के तुरंत बाद बुढ़िया को बाहर निकलना ही नहीं चाहिए था। कोई कह रहा था क सूतक की स्थिति में वह दूसरे का धर्म भ्रष्ट कर सकती थी इस लए उसे नहीं निकलना चाहिए था। कसी ने कहा, क ऐसे लोगों के लए रिश्तों नातों की कोई अह मयत नहीं होती। वे तो केवल रोटी को अह मयत देते हैं। अ धकांश लोग उस स्त्री को नफरत की नजर से देख रहे थे। कोई भी उसकी द्वधा को नहीं समझ रहा था।

प्रश्नद्द (पास-पड़ोस की द्कानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चलारू

उत्तर - पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को उस बुढ़िया के दुख के बारे में पता चला। लेखक को पता चला क बुढ़िया का इकलौता बेटा साँप के काटने से मर गया था। बुढ़िया के घर में उसकी बहू और पोते पोती रहते थे। बुढ़िया का सारा पैसा बेटे के इलाज में खर्च हो गया था। बहू को तेज बुखार था। इस लए अपने परिवार की भूख मटाने के लए बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लए घर से बाहर निकलना पड़ा था।

प्रश्निध (लड़के <mark>को बचाने के</mark> लए बुढ़ि<mark>या माँ ने क्या-क्या उ</mark>पाय कएरू

उत्तर - लड़के को बचाने के लए बुढ़िया ने जो उ चत लगा, जो उसकी समझ में आया कया। उसने झटपट ओझा को बुलाया। ओझा ने झाड़-फूँक शुरु कया। ओझा को दान द क्षणा देने के लए बुढ़िया ने घर में जो कुछ था दे दिया। घर में नागदेव की पूजा भी करवाई।

प्रश्नब (लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाशा कैसे लगायारु

उत्तर - लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा पहले तो बुढ़िया के रोने से लगाया। लेखक को लगा क जो स्त्री खरबूजे बेचने के लए आवाज लगाने की बजाय अपना मुँह ढ़क कर रो रही हो वह अवश्य ही गहरे दुख में होगी। फर लेखक ने देखा क अन्य लोग बुढ़िया को बड़े नफरत की दृष्टि से देख रहे थे। इससे भी लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा लगाया। लेखक ने उसके पड़ोस में एक संपन्न स्त्री के दुःख के साथ जोड़ कर भी समझना चाहा।

प्रश्निष्ठ (इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अ धकार' कहाँ तक सार्थक हैरु स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस पाठ में मुख्य पात्र एक बुढ़िया है जो पुत्र शोक से पी इत है। उस बुढ़िया की तुलना एक अन्य स्त्री से की गई है जिसने ऐसा ही दर्द झेला था। दूसरी स्त्री एक संपन्न घर की थी। इस लए उस स्त्री ने ढ़ाई महीने तक पुत्र की मृत्यु का शोक मनाया था। उसके शोक मनाने की चर्चा कई लोग करते थे। ले कन बुढ़िया की गरीबी ने उसे पुत्र का शोक मनाने का भी मौका नहीं दिया। बुढ़िया को मजबूरी में दूसरे ही दिन खरबूजे बेचने के लए घर से बाहर निकलना पड़ा। ऐसे में लोग उसे नफरत की नजर से ही देख रहे थे। एक स्त्री की संपन्नता के कारण शोक मनाने का पूरा अ धकार मला वहीं दूसरी स्त्री इस अ धकार से वं चत रह गई। इस लए इस पाठ का शीर्षक बिलकुल सार्थक है।

* निम्न ल खत के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न ज्ञ (जैसे वायु की लहरें कटी हूई पतंग को सहसा भूम पर नहीं गर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

उत्तर - कोई भी पतंग कटने के तुरंत बाद जमीन पर धड़ाम से नहीं गरती। हवा की लहरें उस पतंग को बहुत देर तक हवा में बनाए रखती हैं। पतंग धीरे-धीरे बल खाते हुए जमीन की ओर गरती है। हमारी पोशाक भी हवा की लहरों की तरह काम करती है। कई ऐसे मौके आते हैं क हम अपनी पोशाक की वजह से झुककर जमीन की सच्चाई जानने से वं चत रह जाते हैं। इस पाठ में लेखक अपनी पोशाक की वजह से बुढ़िया के पास बैठकर उससे बात नहीं कर पाता है। प्रश्न द (इनके लए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर - यह एक प्रकार का कटाक्ष है जो कसी की गरीबी और उससे उपजी मजबूरी का उपहास उड़ाता है। जो व्यक्ति यह कटाक्ष कर रहा है उसे सक्के का एक पहलू ही दिखाई दे रहा है। हर व्यक्ति रिश्तों नातों की मर्यादा रखना चाहता है। ले कन जब भूख की मजबूरी होती है तो कई लोगों को मजबूरी में यह मर्यादा लांघनी पड़ती है। उस बुढ़िया के साथ भी यही हुआ था। बुढ़िया को न चाहते हुए भी खरबूजे बेचने के लए निकलना पड़ा था।

प्रश्न ध (शोक कर<mark>ने, गम मनाने के लए भी सहू लयत चा</mark>हिए और ... दुखी होने का भी एक अ धकार होता है।

उत्तर - शोक मनाने की सहू लयत भगवान हर कसी को नहीं देता है। कई बार जीवन में कुछ ऐसी मजबूरियाँ या जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं क मनुष्य को शोक मनाने का मौका भी नहीं मलता। यह बात खासकर से कसी गरीब पर अधक लागू होती है। पाठ के आधार पर कहा जा सकता है क गरीब को तो शोक मनाने का अधकार ही नहीं होता है।

काव्य-पाठ-१०-रहीम के दोहे

भावार्थ:

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय। टूटे से फर ना मले, मले गाँठ परि जाय॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क प्रेम का बंधन कसी धागे के समान होता है -, जिसे कभी भी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए बल्कि उसकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है क प्रेम का बंधन बहुत नाज़ुक होता है, उसे कभी भी बिना कसी मज़बूत कारण के नहीं तोड़ना चाहिए। क्यों क जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फर उसे जोड़ा नहीं जा सकता। टूटे हुए धागे को जोड़ने की को शश में उस धागे में गाँठ पड़ जाती है। उसी प्रकार कसी से रिश्ता जब एक बार टूट जाता है तो फर उस रिश्ते को दोबारा पहले की तरह जोड़ा नहीं जा सकता।

२-रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय। सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क अपने मन की पीड़ा या दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना - चाहिए। क्यों क जब आपका दर्द कसी अन्य व्यक्ति को पता चलता है तो वे लोग उसका मज़ाक ही उड़ाते हैं। कोई भी आपके दर्द को बाँट नहीं सकता। अर्थात कोई भी व्यक्ति आपके दर्द को कम नहीं कर सकता।

३-एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय। रहिमन मूलहिं सीं चबो, फूलै फलै अघाय॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क एक बार में केवल एक कार्य ही - करना चाहिए। क्यों क एक काम के पूरा होने से कई और काम अपने आप पूरे हो जाते हैं। यदि एक ही साथ आप कई लक्ष्य को प्राप्त करने की को शश करेंगे तो कुछ भी हाथ नहीं आता। क्यों क आप एक साथ बह्त कार्यों में अपना शत प्रतिशत नहीं दे सकते। रहीम कहते हैं क यह वैसे ही-है जैसे कसी पौधे में फूल और फल तभी आते हैं जब उस पौधे की जड़ में उसे तृप्त कर देने जितना पानी डाला जाता है। अर्थात जब पौधे में पर्याप्त पानी डाला जाएगा तभी पौधे में फल और फूल आएँगे।

४- चत्रक्ट में र म रहे, रहिमन अवधनरेस।-जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क जब राम को बनवास मला था तो वे चत्रकूट में रहने गये -थे। रहीम यह भी कहते हैं क चत्रकूट बह्त घना व् अँधेरा वन होने के कारण रहने लायक जगह नहीं थी। परन्तु रहीम कहते हैं क ऐसी जगह पर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी वप त आती है। कहने का अभप्राय यह है क वप त में व्यक्ति कोई भी कठिन-से-कठिन काम कर लेता है

५-दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं। ज्यों रहीम नट कुंडली, समटि कृदि चढ़ि जाहिं॥

व्याख्या रहीम जी का कहना है क उनके दोहों में भले ही कम अक्षर या शब्द हैं -, परंत् उनके अर्थ बड़े ही गहरे और बह्त क्छ कह देने में समर्थ हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई नट अपने करतब के दौरान अपने बड़े शरीर को समटा कर कुंडली मार लेने के बाद छोटा लगने लगने लगता है। कहने का तात्पर्य यह है क कसी के आकार को देख कर उसकी प्रतिभा का अंदाजा नहीं लगाना चाहिए।

६-धिन रहीम जल पंक को लघु जिय पयत अघाय। उद ध बड़ाई कौन है, जगत पआसो जाय॥

व्याख्या - रहीम जी कहते हैं क कीचड़ में पाया जाने वाला वह थोड़ा सा पानी ही धन्य है क्यों क उस पानी से न जाने कतने छोटेछोटे जीवों की प्यास बुझती है। ले कन वह सागर - काजल बह्त अ धक मात्रा में होते ह्ए भी व्यर्थ होता है क्यों क उस जल से कोई भी जीव अपनी प्यास नहीं बुझा पता। कहने का तात्पर्य यह है क बड़ा होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता यदि आप कसी की सहायता न कर सकी।

७नाद री झ तन देत मृग, <mark>नर धन देत समेत।</mark> ते रहीम पश् से अधक, रीझेह् कछू न देत॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क जिस प्रकार हिरण कसी के संगीत की ध्विन से खुश होकर - अपना शरीर न्योछावर कर देता है अर्थात अपने शरीर को उसे सौंप देता है। इसी तरह से कुछ लोग दूसरे के प्रेम से खुश होकर अपना धन इत्यादि सब कुछ उन्हें दे देते हैं। ले कन रहीम कहते हैं क कुछ लोग पश् से भी बदतर होते हैं जो दूसरों से तो बह्त कुछ ले लेते हैं ले कन बदले में कुछ भी नहीं देते। कहने का अभप्राय यह है क यदि कोई आपको कुछ दे रहा है तो आपका भी फर्ज़ बनता है क आप उसे बदले में कुछ न कुछ दें।

८-बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ कन कोय। रहिमन फाटे दुध को, मथे न माखन होय॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क कोई बात जब एक बार बिग़ड़ जाती है तो लाख को शश - करने के बावजूद उसे ठीक नहीं कया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फर उसको मथने से मक्खन नहींनिकलता। कहने का तात्पर्य यह है क हमें कसी भी बात को करने से पहले सौ बार सोचना चाहिए क्यों क एक बार कोई बात बिगड़ जाए तो उसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

९-रहिमन दे ख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

व्याख्या रहीम जी कह -ते हैं क कसी बड़ी चीज को देखकर कसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अर्थात बड़ी चीज़ के होने पर कसी छोटी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए। क्यों क जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ स्पूई की जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। कहने का अभप्राय यह है क कसी भी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए क्यों क हर एक चीज़ का अपनीअपनी जगह - महत्त्व होता है।

१०-रहिमन निज संपति बिन, कौ न बिपति सहाय। बिन् पानी ज्यों जलज को, निहं र व सके बचाय॥

व्याख्या रहीम जी कहते हैं क जब -आपके पास धन नहीं होता है तो कोई भी वप त में आपकी सहायता नहीं करता। यह वैसे ही है जैसे यदि तालाब सूख जाता है तो कमल को सूर्य जैसा प्रतापी भी नहीं बचा पाता है। कहने का तात्पर्य यह है क आपका धन ही आपको आपकी मुसीबतों से निकाल सकता है क्यों क मुसीबत में कोई कसी का साथ नहीं देता। ११-रहिमन पानी रा खए, बिनु पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चुन॥

व्याख्या इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग कया है। पानी का पहला अर्थ - मनुष्य के के लए लया गया है जब इसका मतलब वनम्रता से है। रहीम कह रहेहें क मनुष्य में हमेशा वनम्र होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा (पानी), तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे से (चून) जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है क जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्रनहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी रखना चाहिए जिसके बिना उसका (वनम्रता) जीवन जीना व्यर्थ हो जाता है।

* बह्वैकल्पिक प्रश्नोत्तरः

प्रश्न ज्ञ (रहीम ने प्रेम के बंधन को कसकी तरह कहा हैरु

%0 तार

Bo धार्ग

९८० डोरी

%0० सूत

```
प्रश्न द (रहीम दूसरों से क्या छुपा कर रखने को कहते हैरु
५४० दुःख
फ़िo धागा
९८० मजाक
९०० इनमें से कोई नहीं
प्रश्न ध ( रहीम ने एक समय में कतने काम करने को कहा हैरु
%Ao चार
Bo दो
% 0 एक
%00 तीन
प्रश्न द्व ( चत्रकूट में कौन रह<mark>ने</mark> गए थेरु
%0 रहीम
% राम
%Co कृष्ण
९०० इनमें से कोई नहीं
प्रश्न छ ( चत्रकूट रहने योग्य क्यों नहीं हैरु
% वह बहुत दूर है
Bo वहाँ कु<mark>छ नहीं है</mark>
९८० वह खण्डार है
९Do वह बह्त घना वन है
प्रश्न ट (रहीम के दोहे कैसे होते हैरु
%Ao लम्बे
Bo बिना अर्थ के
%Co कम शब्द के
🗣 🛈 क्रम शब्दों में अ ध<mark>क अर्थ बताने वाले</mark>
प्रश्न ठ ( कसके जल को धन्य कहा गया हैरु
%0 कीचड
Bo सागर
९८० नदी
%00 तालाब
प्रश्न ड (कसके जल को व्यर्थ कहा गया हैरु
%० कीचड
%Bo <u>सागर</u>
```

```
९८० नदी
%00 तालाब
प्रश्न ढ (हिरण कससे खुश होकर अपना शरीर न्यौछावर कर देता हैरु
%० <u>संगीत</u>
%0 इंसान
९८० गाना
%Do इनमें से कोई नहीं
प्रश्न 🗝 ( दूसरों के प्रेम को देखकर लोग क्या त्यागने को तैयार रहते हैरु
%o घर
% सम्पति
९८० धन
থDo <u>सब-कुछ</u>
प्रश्न ज्ञज्ञ ( दूध के फटने पर उसका क्या नहीं बनतारु
% लस्सी
९Bo घी
९८० <u>मक्खन</u>
vDo खीर
प्रश्न बद्ध ( बात के बिगड़ने पर क्या होता हैरु
%Ao बात फर नहीं बनती
Bo बात फर बन जाती है
℃ 0 बात टाल दी जाती है
Do बात दोहराई जाती है
प्रश्न ज्ञध (बड़ी चीज को देखकर कसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, इसका
क्या अर्थ हैरु
%Ao बड़ी चीज़ काम की होती है
Bo छोटी चीज़ काम की होती है
% o हर चीज़ का अपना महत्त्व है
%Do इनमें से कोई नहीं
प्रश्न बद्ध (सूई की जगह क्या काम नहीं आतारु
%० तार
९Bo धार्ग
९८० डोरी
९<u>Do तलवार</u>
```

प्रश्न ज्ञाछ (मन्ष्यों के लए पानी का क्या अर्थ हैरु

%० वनम्रता

%Bo चमक

९C o जल

vDo जीवन

प्रश्न ज्ञट (मोती के लए पानी का क्या अर्थ हैरू

९A० वनमता

%Bo चमक

%C o जल

९Do जीवन

प्रश्न ज्ञठ (कसके बिना जीवन असंभव हैरु

%० वनम्रता

%Bo चमक

℃0 <u>जल</u>

९Do जीवन

* प्रश्न 1.निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1.' मले गाँठ परिजाय'-ऐसा रहीम ने कस संदर्भ में कहा है और क्यों?

उत्तर-' मले गाँठ परिजाय' ऐसा रहीम ने 'प्रेम संबंधों के बारे में कहा है, क्यों क प्रेम संबंधों की डोर बड़ी नाजुक होती है। एक बार टूट जाने पर जब इसे जोड़ा जाता है तो मन में म लनता और पछली बातों की कडवाहट होने के कारण एक गाँठ-सी बनी रहती है।

प्रश्न 2.बिगरी बात क्यों नहीं बन पाती है? इसके लए क व ने क्या दृष्टांत दिया है? उत्तर-जब मेन में मतभेद और कड़वाहट उत्पन्न होती है, तब बात बिगड़ जाती है और यह बात पहले-सी नहीं हो पाती है। इसके लए रहीम ने यह दृष्टांत दिया है क जिस तरह दूध फट जाने पर उससे मक्खन नहीं निकाला जा सकता है, उसी प्रकार बात को पुनः पहले जैसा नहीं बनाया जा सकता है। प्रश्न 3.कुछ मनुष्य पशुओं से भी हीन होते हैं। पठित दोहे के आधार पर हिरन के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हिरन शकारी की आवाज़ सुनकर उसे दूसरे हिरनों की आवाज़ समझ बैठता है और खुश हो जाता है। वह अपनी सुध बुध खोकर उस आवाज़ की ओर आकर अपना तन दे देता है परंतु मनुष्य खुश होकर भी दूसरों को कुछ नहीं देता है। इस तरह कुछ मनुष्य पशुओं से भी हीन होते हैं।। प्रश्न 4.रहीम का मानना है क व्यक्ति को अपनी पीड़ा छिपाकर रखनी चाहिए, ऐसा क्यों? उत्तर-रहीम का मानना है क व्यक्ति को अपने मन की पीड़ा छिपाकर रखनी चाहिए, क्यों क

सहानुभूति और मदद पाने की अपेक्षा से हम अपनी पीड़ा दूसरों के सामने प्रकट तो कर देते हैं परंतु लोग हमारी मदद करने के बजाय हँसी उड़ाते हैं।

प्रश्न 5.'रहिमन दे ख बड़ेन को ...दोहे में मनुष्य को क्या संदेश दिया गया है? इसके लए उन्होंने कस उदाहरण का सहारा लया है?

उत्तर-'रिहमन दे ख बडेन को ...' दोहे में मनुष्य को यह संदेश दिया गया है क बड़े लोगों को साथ पाकर छोटे-लोगों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। छोटे लोगों का काम बड़े लोग उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं जिस प्रकार स्ई का काम तलवार नहीं कर सकती है।

प्रश्न 6.'अवध नरेश' कहकर कसकी ओर संकेत कया गया है? उन्हें चत्रकूट में शरण क्यों लेनी पड़ी? उत्तर-'अवध नरेश' कहकर श्रीराम की ओर संकेत कया गया है। उन्हें चत्रकूट में इस लए शरण लेनी पड़ी, क्यों क वे अपने पता के वचनों के पालन के लए लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास जा रहे थे। वनवास को कुछ समय उन्होंने चत्रकूट में बिताया था

प्रश्न 6.रहीम ने मूल को सींचने की सीख कस संदर्भ में दी है और क्यों?

उत्तर-क व रहीम ने मनुष्य को यह सीख दी है क वह तना, प तयाँ, शाखा, फूल आदि को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को ही पानी दे। इससे पौधा खूब फलता-फूलता है। यह सीख क व ने एक बार में एक ही काम पर मन लगाकर परिश्रम करने के संदर्भ में दी है।

प्रश्न 7.नट कस कला में पारंगत होता है? रहीम ने उसका उदाहरण कस लए दिया है? उत्तर-नट कुंडली मारकर अपने शरीर को छोटा बनाने की कला में पारंगत होता है। रहीम ने उसका उदाहरण दोहे की वशेषता बताने के संदर्भ में दिया है। दोहा अपने कम शब्दों के कारण आकार में छोटा दिखाई देता है परंतु वह अपने में गूढ अर्थ छिपाए होता है।

प्रश्न 8.ट्यक्ति को अपने पास संपत्त क्यों बचाए रखना चाहिए? ऐसा कव ने कसके उदाहरण द्वारा कहा है?

उत्तर-व्यक्ति को अपने पास संप त इस लए बचाए रखना चाहिए क्यों क उसकी अपनी संप त ही वप त में उसके काम आती है। इसके अभाव में अपना कहलाने वाले भी काम नहीं आते हैं। क व ने इसके लए जलहीन कमल और सूर्य का उदाहरण दिया है।

प्रश्न-2*दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.आज की परिस्थितियों में रहीम के दोहे कतने प्रासंगक हैं? कन्हीं दो उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-रहीम द्वारा र चत दोहे नीति और आदर्श की शक्षा देने के अलावा मनुष्य को करणीय और अकरणीय बातों का ज्ञान देते हुए कर्तव्यरत होने की प्रेरणा देते हैं। समाज को इन बातों की अपेक्षा इन दोहों के रचनाकाल में जितनी थी, उतनी ही। आज भी है। आज भी दूसरों का दुख सुनकर समाज उसे हँसी का पात्र समझता है। इसी प्रकार अपने पास धन न होने पर व्यक्ति की सहायता कोई नहीं करता है। ये तथ्य पहले भी सत्य थे और आज भी सत्य हैं। अतः रहीम के दोहे आज भी पूर्णतया प्रासं गक हैं।

प्रश्न 2.रहीम ने अपने दोहों में छोटी वस्तुओं का महत्त्व प्रतिपादित कया है। इसे सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-क व रहीम को लोक जीवन का गहरा अनुभव था। वे इसी अनुभव के कारण जीवन के लए उपयोगी वस्तुओं की सूक्ष्म परख रखते थे। उन्होंने अपने दोहे में मनुष्य को सीख दी है क वह बड़े लोगों का साथ पाकर छोटे लोगों की उपेक्षा और तिरस्कार न करें, क्यों क छोटे लोगों द्वारा जो कार्य कया जा सकता है, वह बड़े लोग उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं; जैसे सुई की सहायता से मनुष्य जो काम करता है उसे तलवार की सहायता से नहीं कर सकता है। सुई और तलवार दोनों का ही अपनी-अपनी जगह महत्त्व है।

प्रश्न 3.पठित दोहे के आधार पर बताइए क आप तालाब के जल को श्रेष्ठ मानते हैं या सागर के जल को और क्यों?

उत्तर-रहीम ने अपने दोहे में सागर में स्थित वशाल मात्रा वाले जल और तालाब में स्थित लघु मात्रा में कीचड़ वाले जल का वर्णन कया है। इन दोनों में मैं भी तालाब वाले पानी को श्रेष्ठ मानता हूँ। यद्य प समुद्र में अथाह जल होता है, परंतु उसके कनारे जाकर भी जीव-जंतु प्यासे के प्यासे लौट आते हैं। दूसरी ओर तालाब में स्थित कीचड्युक्त पानी व भन्न प्रा णयों की प्यास बुझाने के काम आता है। अपनी उपयो गता के कारण यह पं कल जल सागर के खारे जल से श्रेष्ठ है।

प्रश्न-3 .निम्न ल खत का भाव स्पष्ट कीजिए-

- (क) टूटे से फर ना मले, मले गाँठ परि जाय।
- (क) भाव यह है क प्रेम का बंधन अत्यंत नाजुक होता है। इसमें कटुता आने पर मन की म लनता कहीं न कहीं बनी ही रह जाती है। प्रेम का यह बंधन टूटने पर सरलता से नहीं जुड़ता है। यदि जुड़ता भी है तो इसमें गाँठ पड़ जाती है।
- (ख) स्नि अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।
- (ख) भाव यह है क जब हम सहानुभूति और मुद्रदै पाने की आशा से अपना दुख दूसरों को सुनाते हैं तो लोग सहानुभूति दर्शाने और मदद करने की अपेक्षा हमारा मजाक उड़ाना शुरू कर देते हैं। अतः दूसरों को अपना दुख बताने से बचना चाहिए।
- (ग) रहिमन मूलहिं स चबो, फूलै फलै अघाय।
- (ग) भाव यह है क कसी पेड़ से फल-फू<mark>ल पाने के लए उसके तने, प तयों और शाखाओं को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को पानी देने से ही वह खूब हरा-भरा होता है और फलता-फूलता है। इसी तरह एक समय में एक ही काम करने पर उसमें सफलता मलती है।</mark>
- (घ) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
- (घ) भाव यह है क कसी वस्तु का आकार ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, महत्त्व होता है उसमें निहित अर्थ का। दोहे का महत्त्व इस लए है क वह कम शब्दों में गूढ़ अर्थ समेटे रहता है। ङ) नाद :री झ तन देत मृग, नर धन हेत समेत।

- (इ.) भाव यह है क कसी वस्तु का आकार ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, महत्त्व होता है उसमें निहित अर्थ का। दोहे का महत्त्व इस लए है क वह कम शब्दों में गूढ़ अर्थ समेटे रहता है। (च) जहाँ काम आवे स्ई, कहा करे तरवारि।
- (च) भाव यह है क वस्तु की महत्ता उसके आकार के कारण नहीं, बल्कि उसकी उपयो गता के कारण होती है। छोटी से छोटी वस्तु का भी अपना महत्त्व होता है, क्यों क जो काम सुई कर सकती है उसे तलवार नहीं कर सकती है।
- (छ) पानी गए न जबरे, मोती, मानुष, चून।
- (छ) भाव यह है क मनुष्य को सदैव पानी बचाकर रखना चाहिए क्यों क पानी (चमक) जाने पर मोती साधारण पत्थर, सी रह जाती है, पानी (इज्जत) जाने पर मनुष्य स्वयं को अपमानित-सा महसूस करता है और पानी (जल) न रहने पर आटे से रोटियाँ नहीं बनाई जा सकती हैं।

पाठ-३-एवरेस्ट मेरी शखर यात्रा

ले खका बचेंद्री पाल -जन्म – 1954

पाठ सार:

बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट की चढ़ाई के सफर की बात करते हुए कहती हैं क एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल 7 मार्च को दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू के लए चल पड़ा था। उस दल से पहले ही एक मज़बूत दल बह्त पहले ही एवरेस्ट की चढ़ाई के लए चला गया था जिससे क वह बचेंद्री पाल वाले दल के पहुँचने से पहले बर्फ के गरने के कारण 'बेस कैम्प' बने कठिन रास्ते को साफ कर सके। बचेंद्री पाल कहती हैं क नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वा धक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है।यहीं से <mark>ब</mark>चेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को देखा था। बचेंद्री पाल कहती हैं क लोगों के द्वारा <mark>बचेंद्री पा</mark>ल को बताया गया क शखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को द क्षणपूर्वी पहाड़ी पर तू<mark>फानों</mark> को झेलना पड़ता है-, वशेषकर जब मौसम खराब होता है। जब उनका दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा तो उन्हें हमें बर्फ के खसकने के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःख भरा समाचार मला। सोलह शेरपा कु लयों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे। इस समाचार के कारण बचेंद्री पाल के अभयान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी को देखकर उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों <mark>को साफ़साफ़ कह दिया</mark> क एवरेस्ट पर चढ़ाई करना कोई -आसान काम नहीं है, वहाँ पर जाना मौत के मुँह में कदम रखने के बराबर है। बचेंद्री पाल कहती हैं क उपनेता प्रेमचंद, जो पहले वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, वे भी 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने बचेंद्री पाल के दल की पहली बड़ी समस्या बचेंद्री पाल और उनके सा थयों को खुंभु हिमपात की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके सा थयों को यह भी बताया क पुल बनाकर, रिस्सियाँ बाँधकर तथा झं डयों से रास्ते को चिहनत कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लया गया है। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके सा थयों का ध्यान इस पर भी दिलाया क ग्ले शयर बर्फ की नदी है और बर्फ का गरना अभी जारी है। जिसके कारण अभी तक के कए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और उन लोगों को रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है। बचेंद्री पाल कहती हैं क में पह्ँचने से पहले उन्हें और उनके सा थयों को एक और मृत्यु की खबर मली। 'बेस कैंप' जलवायु के सही न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से अब बचेंद्री पाल और उनके साथी आशा उत्पन्न करने स्थिति में नहीं चल रहे थे। सभी

घबराए हुए थे। बेस कैंप पहुँचाने पर दूसरे दिन बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रे णयों को देखा। बचेंद्री पाल हैरान होकर खड़ी रह गई। बचेंद्री पाल कहती हैं क दूसरे दिन नए आने वाले अपने ज़्यादातर सामान को वे हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीन् मेहता ने बचेंद्री पाल और उनके सा थयों को अल्यू मनियम की सीढ़ियों से अस्थायी प्लों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ीतिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना -और उनके पहले दल के तकनीकी कार्यों के बारे में उन्हें वस्तार से सारी जानकारी दी। बचेंद्री पाल कहती हैं क उनका तीसरा दिन हिमपात से कैंपएक तक सामान ढोकर चढ़ाई -साथ -का अभ्यास करने के लए पहले से ही निश्चित था। रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल साथ टॉकी था-चढ़ रहे थे। उनके पास एक वॉकी, जिससे वे अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश ह्ए, जब रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल ने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्यों क कैंपएक पर <mark>प</mark>ँह्चने वाली केवल वे दो ही महिलाएँ थीं। -जब अप्रैल में बचेंद्री पाल कैंप बेस में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ उनके पास आए थे। उन्होंने इस बात पर <mark>वशेष</mark> महत्त्व दिया क दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। बचेंद्री पाल कहती हैं क जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना परिचय यह कहकर दिया क वे इस चढ़ाई के लए बिल्क्ल ही नई सीखने वालीं हैं और एवरेस्ट उनका पहला अ भयान है। तेनजिंग हँसे और बचेंद्री पाल से कहा क एवरेस्ट उनके लए भी पहला अ भयान है, ले कन यह भी स्पष्ट कया क शखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फर अपना हाथ बचेंद्री पाल के कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा क बचेंद्री पाल एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती है। उसे तो शखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। बचेंद्री पाल कहती हैं क 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णमा के दिन वह ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप तीन में थी। वह गहरी नींद में सोइ ह्ई थी क रात में-12.30 बजे के लगभग उनके सर के पछले हिस्से में कसी एक सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी ह्आ। एक लंबा बर्फ का पंड उनके कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्ले शयर से टूटकर नीचे आ गरा था और उसका एक बह्त बड़ा बर्फ का टुकड़ा बन गया था। लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से बचेंद्री पाल और उनके सा थयों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे। उन्होंने बचेंद्री पाल के चारों तरफ की कड़ी जमी बर्फ की खुदाई की और बचेंद्री पाल को उस बर्फ की कब्र से निकाल कर बाहर खींच लाने में सफल हो गए। बचेंद्री पाल कहती हैं क अगली स्वह तक सारे स्रक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक वे सभी कैम्पदो पर पहुँच गए थे। बचेंद्री पाल और -

उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने पछली रात को हुए हादसे को उनके शब्दों में कुछ इस तरह कहा क यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षाकार्य का एक अत्यंत साहस से भरा कार्य था। -बचेंद्री पाल कहती हैं क सभी नौ पुरुष सदस्यों को जिन्हें चोटें आई थी और हड् डयां टूटी थी उन्हें बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर बचेंद्री पाल की तरफ मुड़े और कहने लगे क क्या वह डरी हुई है? इसके उत्तर में बचेंद्री पाल ने हाँ में उत्तर दिया। कर्नल खुल्लर के फर से पूछने पर क क्या वह वा पस जाना चाहती है? इस बार बचेंद्री पाल ने बिना कसी हिच कचाहट के उत्तर दिया क वह वा पस नहीं जाना चाहती।बचेंद्री पाल कहती हैं क दोपहर बाद उन्होंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लए नीचे जाने का निश्चय कया। उन्होंने बर्फीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। बचेंद्री पाल को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मला। उसने बचेंद्री पाल के द्वारा लाई गई चाय <mark>वगैरह</mark> पी ले कन बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की को शश भी की। मगर बचेंद्री पाल को की से भी मलना था। थोड़ासा और आगे -नीचे उतरने पर उन्होंने की को देखा। की बचेंद्री पाल को देखकर चौंक गयाऔर उसने बचेंद्री पाल से कहा क उसने इतना बड़ा जो खम क्यों <mark>उठाया? बचेंद्री पाल ने भी उसे द</mark>ढ़तापूर्वक कहा क वह भी औरों की तरह एक पर्वतारोही है, इसी लए वह इस दल में आई हुई है। बचेंद्री पाल कहती हैं क साउथ कोल जगह के नाम से प्रस 'पृथ्वी पर बह्त अ धक कठोर'द्ध है। बचेंद्री पाल कहती हैं क अगले दिन वह सुबह चार बजे उठी। उसने बर्फ को पघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चाॅकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद वह लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। बचेंद्री पाल कहती हैं क सुबह 6:20 पर जब अंगदोरजी और वह साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकीहलकी -हवा चल रही थी, ले कन ठंड भी बह्त अधक थी। बचेंद्री पाल और उनके सा थयों ने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और बचेंद्री पाल को भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। बचेंद्री पाल कहती हैं क जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, ऐसा लगता था मानो शीशे की चादरें बिछी हों। उन सभी को बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और बचेंद्री पाल कहती हैं क उन्हें इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे क उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावडें के दाँते काट सके। बचेंद्री पाल कहती हैं क उन्होंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोचसमझकर उठाया। क्यों क वहाँ एक छोटी सी भी गलती मौत का -कारण बन सकती थी। बचेंद्री पाल कहती हैं क दो घंटे से भी कम समय में ही वे सभी शखर कैंप पर पह्ँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और उन्होंने कहा क पहले वाले

दल ने शखर कैंप पर पह्ँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि अब उनका दल इसी गति से चलता रहे तो वे शखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे। ल्हाटू ने ध्यान दिया क बचेंद्री पाल इन ऊँचाइयों के लए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं क जैसे ही उसने बचेंद्री पाल के रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, बचेंद्री पाल कहती हैं क उन्हें महसूस ह्आ क सीधी और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।बचेंद्री पाल कहती हैं क द क्षणी शखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी कुछ भी देख पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अनेक बार देखा क केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है। यह देख कर बचेंद्री पाल कहती हैं क उनकी तो साँस मानो रुक गई थी। उन्हें वचार आया क सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मनट पर वह एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली बचेंद्री पाल प्रथम भारतीय महिला थी।बचेंद्री पाल कहती हैं क एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी क दो व्यक्ति साथसाथ खड़े हो -सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए उन सभीके सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुर क्षत रूप से खड़ा रहने लायक जगह बनाई। ख़ुशी के इस पल में बचेंद्री पाल को अपने माता पता का -ध्यान आया। बचेंद्री पाल कहती हैं क जैसे वह उठी, उन्होंने अपने हाथ जोड़े और वह अपने रज्जुनेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने बचेंद्री पाल को -प्रोत्साहित कया और लक्ष्य तक पह्ँचाया। बचेंद्री पाल ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने बचेंद्री पाल को गले से लगाया और उनके कानों में फुसफुसाया क दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। वह बह्त प्रसन्न है। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता से बह्त प्रसन्न थे। <mark>बचेंद्री पाल को बधा</mark>ई देते ह्ए उन्होंने कहा क वे बचेंद्री पाल की इस अलग प्राप्ति के लए बचेंद्री पाल के माता पता को बधाई देना चाहते- हैं। वे बोले क देश को बचेंद्री पाल पर गर्व है और अब वह एक ऐसे संसार में वापस जाएगी, जो उसके द्वारा अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम अलग होगा।

*निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.अ ग्रम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था? उत्तर।अ ग्रम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे- प्रश्न 2.ले खका को सागरमाथा क्यों अच्छा लगा?

उत्तर-ले खका को 'सागरमाथा' नाम इस लए अच्छा लगा क्यों क सागरमाथा का अर्थ है- सागर का माथा और एवरेस्ट संसार की सबसे ऊँची चोटी है।

प्रश्न 3.ले खका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर-ले खका को तेज हवाओं के कारण उठी हुई चक्करदार बर्फीली आकृति ध्वज जैसी प्रतीत हुई। प्रश्न 4.हिमस्खलन से कतने लोगों की मृत्यु हुई और कतने घायल हुए?

उत्तर-हिमस्खलन से दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और नौ लोग घायल हुए।

प्रश्न 5.मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर-मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा क ऐसे साह सक अ भयानों में होने वाली मृत्यु को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न 6.रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर-रसोई सहायक की मृत्यु स्वास्थ्य के प्रतिकूल जलवायु में काम करने के कारण हुई। प्रश्न 7.कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

उत्तर-कैंप-चार 7900 मीटर ऊँची 'साउथ कोल' <mark>नामक</mark> जगह पर 29 अप्रैल को लगाया गया था। प्रश्न 8.ले खका ने तेनजिंग को अपना परिचय कस तरह दिया?

उत्तर-ले खका ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हु<mark>ए कहा क वह नौ स खया है और एवरेस्ट उसका</mark> पहला अभयान है।

प्रश्न 9.ले खका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे कन शब्दों में बधाई दी? उत्तर-ले खका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने कहा- मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लए तुम्हारे माता- पता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भन्न होगा।

*-निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर ल खए

प्रश्न 1.नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर ले खका को कैसा लगा?

उत्तर-नजदीक से एवरेस्ट को देखने पर ले खका भौंचक्की रह गई। उसे टेढ़ी-मेढ़ी चोटियाँ ऐसी लग रही थीं मानो कोई बरफ़ीली नदी बह रही हो।

प्रश्न 2.डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?

उत्तर-डॉ. मीनू मेहता ने ले खका को अल्यु मनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का निर्माण करने, लट्टों और रिस्सियों का उपयोग करने, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रिस्सियों को बाँधने तथा अग्रम दल के अभयांत्रिकीकार्यों की वस्तृत जानकारी दी।

प्रश्न 3.तेनजिंग ने ले खका की तारीफ में क्या कहा?

उत्तर-तेनजिंग ने ले खका की तारीफ में कहा, "तुम पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो पहले ही प्रयास में शखर पर पहुँच जाना चाहिए। प्रश्न 4.ले खका को कनके साथ चढ़ाई करनी थी?

उत्तर-ले खका के अभयान-दल में यों तो लोपसांग, तशारिंग, एन.डी. शेरपा आदि अनेक सदस्य थे। कंतु उन्हें जिन साथयों के संगयात्रा करनीथी, वेथे-की, जय और मीनू।

प्रश्न 5.लोपसंगा ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ कया?

उत्तर-लोपसांग ने तंबू का रास्ता साफ़ करने के लए अपनी स्विस छुरी निकाली। उन्होंने ले खका के आसपास जमें बड़े-बड़े हिम पंडों को हटाया और ले खका के चारों ओर जमी कड़ी बरफ़ की खुदाई कया। उन्होंने बड़ी मेहनत से ले खका को बरफ़ की कब्र से खींच निकाला।

प्रश्न 6.साउथ कोल कैंप पहुँचकर ले खका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शूरू की?

उत्तर-'साउथ कोल' कैंप पहुँचकर ले खका ने अगले दिन की चढ़ाई की तैयारी शुरू की। उसने खाना, कु कंग गैस तथा ऑक्सीजन सलेंडर इकट्टे कए। उसके बाद वह चाय बनाने की तैयारी करने लगी॥ *-निम्न ल खत प्रश्नों के दीर्घ उत्तर ल खए-

प्रश्न 1.उपनेता प्रेमचंद ने कन स्थितियों से अवगत कराया?

उत्तर-उपनेता प्रेमचंद ने अभयान दल को खंभु हिमपात की स्थिति की जानकारी देते हुए कहा क उनके दल ने कैंप-एक जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है और फल बनाकर, रिस्सियाँ बाँधकर तथा इं इयों से रास्ता चिन्हित कर, सभी बड़ी किठनाइयों का जायजा ले लया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया क ग्ले शयर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गरना अभी जारी है। हिमपात में अनिय मत और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के कए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

प्रश्न 2.हिमपात कस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर-बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गरना ही हिमपात कहलाता है। ग्ले शयर के बहने से बर्फ में हलचल मच जाती है। इस कारण बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गर जाती हैं। इस अवसर पर स्थिति ऐसी खतरनाक हो जाती है क धरातल पर दरार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। अकसर बर्फ़ में गहरी-चौड़ी दरारें बन जाती हैं। हिमपात से पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधक बढ़ जाती हैं। प्रश्न 3.ले खका ने तंबू में गरे बरफ़ पंड का वर्णन कस तरह कया है?

उत्तर-ले खका ने तंबू में गरे बरफ़ के पंड का वर्णन करते हुए कहा है क वह ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए नाइलान के तंबू के कैंप-तीन में थी। उसके तंबू में लोपसांग और तशारिंग उसके तंबू में थे। अचानक रात साढ़े बारह बजे उसके सर में कोई सख्त चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। तभी एक जोरदार धमाका हुआ और उसे लगा क एक ठंडी बहुत भारी चीज़ इसके शरीर को कुचलती चल रही थी। इससे उसे साँस लेने में कठिनाई होने लगी।

प्रश्न 4.ले खका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर-जय बचेंद्री पाल का पर्वतारोही साथी था। उसे भी बचेंद्री के साथ पर्वत-शखर पर जाना था।

शखर कैंप पर पहुँचने में उसे देर हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। अतः बचेंद्री उसके लए चाय-जूस आदि लेकर उसे रास्ते में लवाने के लए पहुँची। जय को यह कल्पना नहीं थी क बचेंद्री उसकी चंता करेंगी और उसे लवी लाने के लए आएँगी। इस लए जब उसने बचेंद्री पाल को चाय-जूस लए आया देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया। प्रश्न 5.एवरेस्ट पर चढ़ने के लए क्ल कतने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए। उत्तर-पाठ से ज्ञात होता है क एवरेस्ट पर चढ़ाई के लए कुल पाँच कैंप बनाए गए। उनके दल का पहला कैंप 6000 मीटर की ऊँचाई पर था जो हिमपात से ठीक ऊपर था। दूसरा कैंप-चार 7900 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया था। कैंप-तीन ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर बनाया गया था। यहाँ नाइलोन के तंबू लगाए गए थे। एक कैंप साउथकोल पर बनाया गया था। यहीं से अ भयान दल को एवरेस्ट पर चढ़ाई करनी थी। इसके अलावा एक बेस कैंप भी बनाया गया था।

प्रश्न 6.चढाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उतर-जब बचेंद्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँची तो वहाँ चारों ओर तेज़ हवा के कारण बर्फ़ उड़ रही थी। बर्फ़ इतनी अधक थी क सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। पर्वत की शंकु चोटी इतनी तंग थी क दो आदमी वहाँ एक साथ खड़े नहीं हो सकते थे। नीचे हजारों मीटर तक ढलान ही ढलान थी। अतः वहाँ अपने आपको स्थिर खड़ा करना बह्त कि<mark>न था। उन्होंने बर्फ</mark> के फावड़े से बर्फ़ तोड़कर अपने टिकने योग्य स्थान बनाया।

प्रश्न 7.सम्मि लत अ भयान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के कस कार्य से मलता है?

उतर-एवरेस्ट पर वजय पाने के अभयान के दौरान ले खको बचेंद्री पाल अपने सा थयो 'जय', की 'मीनू' के साथ चढाई कर रही थी, परंतु वह इनसे पहले साठथ कोल कैंप पर जा पहुँची क्यों क वे बिना ऑक्सीजन के भारी बोझ लादे चढ़ाई कर रहे थे। ले खका ने दोपहर बाद इन सदस्यों की मदद करने के लए एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भर लया और बरफ़ीली हवा में कैंप से बाहर निकल कर उन सदस्यों की ओर नीचे उतरने लगी। उसके इस कार्य से सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय मलता है।।

*-निम्न ल खत के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.एवरेस्ट जैसे महान अ भयान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उतर-एवरेस्ट की सर्वोच्च चोटी पर चढ़ना एक महान अ भयान है। इसमें पग-पग पर जान जाने का खतरा होता है। अतः यदि ऐसा कठिन कार्य करते हुए मृत्यु भी हो जाए, तो उसे सहज घटना के रूप में लेना चाहिए। बहुत हाय-तौबा नहीं मचानी चाहिए।

प्रश्न 2.सीधे धरातल पर दरार पड़ने का वचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-वदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी क हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कु लयों को प्रतिदिन छूता रहेगा। उत्तर-आशय यह है क गले शयरों के बहने से बरफ़ में हलचल होने से बरफ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें अचानक गर जाती हैं। इससे धरातल पर दरार पड़ जाती है। यही दरारें हिम-वदर में बदल जाती हैं जो पर्वतारोहियों की मृत्यु का कारण बन जाती है। इसका ख्याल ही मन में भय पैदा कर देता है। दुर्भाग्य से यह भी जानकारी मल गई थी क इस अभयान दल को अपने अभयान के दौरान ऐसे हिमपात का सामना करना ही पड़ेगा।

प्रश्न 3.बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चत्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बरफ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता पता का ध्यान आया। उत्तर-जब बचेंद्री पाल हिमालय की चोटी पर सफलतापूर्वक पहुँच गई तो उसने घुटने के बल बैठकर बर्फ़ को माथे से छुआ। बिना सर नीचे झुकाए हुए ही अपने थैले से दुर्गा माँ का चत्र और हनुमान चालीसा निकाला। उसने इन्हें एक लाल कपड़े में लपेटा। थोड़ी सी पूजा की। फर इस चत्र तथा हनुमान चालीसा को बर्फ में दबा दिया। उस समय उसे बहुत आनंद मला। उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने माता- पता को याद कया।

संचयन-पाठ-2-स्मृति

लेखक श्रीराम शर्मा -जन्म –1896

सार--'स्मृति' कहानी का समूचा कथानक बच्चों की दुनिया के आसपास ही घूमता है। इसमें एक ओर बाल मनो वज्ञान का सुंदर चत्रण है तो बाल सुलभ क्रीड़ाओं का संचार भी रचा-बसा है। इसके अलावा बालकों के साहस, बुद् ध, उत्साह के कारण खतरे को अनदेखा करने जैसे क्रयाकलापों का भी उल्लेख है। कहानी की शुरुआत में ही बच्चों को कड़ी ठंड में झरबेरी तोड़कर खाते हुए चत्रित कया गया है, जिसमें उन्हें असीम आनंद मलता है परंतु भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर यह आनंद तुरंत भय में बदल जाता है परंतु भाई का पत्र लखता देख उसके मन से भय गायब हो जाता है।बच्चे स्कूल जाते हुए उछल-कूद और हँसी मजाक ही नहीं वरन् तरह-तरह की शरारतें भी करते हैं। वे कुएँ में पड़े साँप की फुफकार सुनने के लए उसमें मट्टी का ढेला फेंककर ह र्षत होते हैं। गलती हो जाने पर वे पटाई से बचने के लए तरह-तरह के बहाने सोचते हैं तो समय पर जि मेदारी की अनुभूति

करते हैं और जान जो खम में डालने से भी पीछे नहीं हटते हैं। इस तरह यह कहानी बाल मनो वज्ञान का सफल चत्रण करती है।

*प्रश्न 1- प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1.भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में कस बात का डर था? उत्तर-भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक डर गया था। उसे लगा क उसके बड़े भाई झरबेरी से बेर तोड़-तोड़कर खाने के लए डाँटेंगे और उसे खूब पीटेंगे।

प्रश्न 2.मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी? उत्तर-लेखक के गाँव से मक्खनपुर जाने वाली राह में 36 फीट के करीब गहरा एक कच्चा कुआँ था। उसमें एक साँप न जाने कैसे गर गया था। मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली उस कुएँ में इस लए ढेले फेंकती थी ता क साँप कुद्ध होकर फुफकारे और बच्चे उस फुफकार को सुन सकें। प्रश्न 3.'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'-यह कथन लेखक की कस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर-यह कथन लेखक की बदहवास मनोदशा को स्पष्ट करता है। जैसे ही लेखक ने टोपी उतारकर कुएँ में ढेला फेंका, उसकी ज़रूरी चट्ठियाँ कुएँ में जा गरी। उन्हें कुएँ में गरता देखकर वह भौंचक्का रह गया।

उसका ध्यान चट्ठियों को बचाने में लग गया। वह यह देखना भूल गया क साँप को ढेला लगा या नहीं और वह फ्सकारा या नहीं।

प्रश्न 4. कन कारणों से लेखक ने चट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लया? उत्तर-लेखक द्वारा चट्ठियों को कुएँ से निकालने के निम्न ल खत कारण हैं-लेखक को झूठ बोलना नहीं आता था

चट्ठियों को डाकखाने में डालना लेखक अपनी जिम्मेदारी समझता था। लेखक को अपने भाई से रुई की तरह पटाई होने का भय था।

वह साँप को मारना बाएँ हाथ का काम समझता था, जिससे चट्ठियाँ उठाना उसे आसान लग रहा था। प्रश्न 5.साँप का ध्यान बँटाने के लए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?

उत्तर-साँप का ध्यान बँटाने के लए लेखक ने निम्न ल खत युक्तियाँ अपनाई-

उसने म्ट्ठीभर मट्टी फेंककर साँप का ध्यान उधर लगा दिया।

उसने अपने हाथ का प्रहार करने की बजाय उसकी तरफ इंडा बढ़ा दिया, जिससे साँप ने सारा वष इंडे पर उगल दिया।

प्रश्न 6.कुएँ में उतरकर चट्ठियों को निकालने संबंधी साह सक वर्णन को अपने शब्दों में ल खए। उत्तर-कुएँ में चट्ठियाँ गर जाने पर लेखक ने रोना-धोना छोड़कर भयानक निर्णय लया। उसने अपनी और अपने छोटे भाई की पाँचों धोतियों को एक-दूसरे से बाँधा। इसके एक छोर में डंडा बाँधकर उसे कुएँ में उतार दिया और दूसरे सरे को कुएँ की डेंग में बाँधकर भाई को पकड़ा दिया। अब उन धोतियों के सहारे लेखक कुएँ में उतर गया और कुएँ के धरातल से चार पाँच गज ऊपर लटककर साँप को

देखने लगा। साँप भी फन फैलाए लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था। लेखक ने कुएँ की दीवार में पैर जमाकर कुछ मट्टी गराई। इससे साँप का ध्यान बँट गया। वह मट्टी पर मुँह मार बैठा।इस बीच लेखक ने डंडे से जब चट्ठियाँ सरकाई तो साँप ने जोरदार प्रहार कया और अपनी शक्ति के प्रमाण स्वरूप डंडे पर तीन-चार जगह वषवमन कर दिया। इससे लेखक का साहस बढ़ा। उसने चट्ठियाँ उठाने का प्रयास कया तो साँप ने वार कया और डंडे से लपट गया। इस क्रम में साँप की पूँछ का पछला भाग लेखक को छू गया। यह देख लेखक ने डंडे को पटक दिया और चट्ठियाँ उठाकर धोती में बाँध दिया, जिन्हें उसके भाई ने ऊपर खींच लया। अब लेखक ने कुएँ की दीवार से कुछ मट्टी साँप की दाहिनी ओर फेंकी। साँप उस पर झपटा। अब लेखक ने डंडा खींच लया। लेखक ने मौका देखा और जैसे-तैसे हाथों के सहारे सरककर छतीस फुट गहरे कुएँ से ऊपर आ गया। प्रश्न 7.इस पाठ को पढ़ने के बाद कन-कन बाल-सुलभ शरारतों के वषय में पता चलता है? उत्तर-बालक प्रायः शरारती होते हैं। उन्हें छेड़छाड़ करने में आनंद मलता है। यदि उनकी छेड़छाड़ से कोई हलचल होती हो तो वे उसमें बहुत मज़ा लेते हैं। साँप को व्यर्थ में ही फंफकारते देखकर वे बड़े खुश होते हैं। बालकों को प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में वहार करने में भी असीम आनंद मलता है। वे झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाते हैं तथा मन में आनंदित होते हैं। वे आम के पेड़ पर चढ़कर डंडे से आम तोड़कर खाने में खूब आनंद लेते हैं।

प्रश्न ८.मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कतनी मथ्या और उलटी निकलती हैं'-का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मनुष्य कसी किंठन काम को करने के लए अपनी बुद्ध से योजनाएँ तो बनाता है, कंतु समस्याओं का वास्त वक सामना होते ही ये योजनाएँ धरी की धरी रह जाती हैं। तब उसे यथार्थ स्थिति को देखकर काम करना पड़ता है। इस पाठ में लेखक ने सोचा था क कुएँ में उत्तरकर वह डंडे से साँप को मार देगा और चट्ठियाँ उठा लेगा, परंतु कुएँ का कम व्यास देखकर उसे लगा क यहाँ तो डंडा चलाया ही नहीं जा सकता है। उसने जब साँप को फन फैलाए अपनी प्रतीक्षा करते पाया तो साँप को मारने की योजना उसे एकदम मथ्या और उलटी लगने लगी।

प्रश्न 9.फल तो कसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरलेखक ने कुएँ से चट्ठियाँ निकालने के लए कुएँ में उत्तरने का दृढ़ निश्चय कर लया। इस दृढ़ निश्चय के सामने फल की चंता समाप्त हो गई। उसे लगा क कुएँ में उत्तरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना उसका काम नहीं है। परिणाम तो प्रभु-इच्छा पर निर्भर है। इस लए वह फल की चंता छोड़कर कुएँ में घुस गया। प्रश्न 1.बड़े भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर लेखक की क्या दशा हुई और क्यों ? उत्तर-बड़े भाई द्वारा बुलाई जाने की बात सुनकर लेखक घबरा गया। उसे बड़े भाई द्वारा पटाई कए जाने का भय सता रहा था। वह कड़ी सरदी और ठंडी हवा के प्रकोप के बीच अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था। कहीं बेर खाने के अपराध में ही तो उसे नहीं बुलाया जा रहा था।

प्रश्न 2.लेखक को अपने पटने का भय कब दूर ह्आ?

उत्तर-लेखक अपने बड़े भाई के बुलाने पर सहमा-सा घर आया तो देखा क उसके बड़े भाई पत्र लख रहे हैं। भाई को पत्र लखते देखकर वह समझ गया क उसे इन पत्रों को डाकखाने में डालने के लए ही बुलवाया होगा। यह सोचकर उसे अपने पटने का भय जाता रहा।

प्रश्न 3.डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने क्या-क्या तैयारियाँ की और क्यों? उत्तर-डाकखाने में पत्र डालने जाते <mark>समय</mark> लेख<mark>क</mark> ने निम्न ल खत तैयारियाँ कीं-उसने अपना मजबूत बबूल का डंडा साथ लया। उसने और उसके छोटे भाई ने अपने-अपने कानों को धोती से बाँधा। उसने अपना मजबूत बबूल का डंडा साथ लया। उनकी माँ ने उन्हें भ्नाने के लए चने दिए। उन्होंने सर पर टो पयाँ लगाई। उन्होंने ये तैयारियाँ इस लए की क्यों क सरदी के मौसम में तेज़ हवा हड़ डयों को भी कँपा रही थी। प्रश्न 4.लेखक को अपने डंडे से इतना मोह क्यों था? उत्तर-लेखक को अपने डंडे से इतना मोह इस लए था, क्यों क-उसने इस डंडे से अब तक कई साँप मारे थे। वह इस डंडे से आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष आम तोड़ता था। उसे अपना मुक डंडा सजीव-सा लगता था। प्रश्न 5.साँप का ध्यान बँटाने के लए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं? उत्तर-साँप का ध्यान बँटाने के लए लेखक ने निम्न ल खत युक्तियाँ अपनाई। उसने म्ट्ठीभर मट्टी फेंककर साँप का ध्यान उधर लगा दिया। उसने अपने हाथ का प्रहार करने की बजाय उसकी तरफ डंडा बढ़ा दिया, जिससे साँप ने सारा वष डंडे पर उगल दिया।

प्रश्न 6.कुएँ में उतरकर चट्ठियों को निकालने संबंधी साह सक वर्णन को अपने शब्दों में ल खए। उत्तर-कुएँ में चट्ठियाँ गर जाने पर लेखक ने रोना-धोना छोड़कर भयानक निर्णय लया। उसने अपनी और अपने छोटे भाई की पाँचों धोतियों को एक-दूसरे से बाँधा। इसके एक छोर में डंडा बाँधकर उसे कुएँ में उतार दिया और दूसरे सरे को कुएँ की डेंग में बाँधकर भाई को पकड़ा दिया। अब उन धोतियों के सहारे लेखक कुएँ में उतर गया। और कुएँ के धरातल से चार पाँच गज ऊपर लटककर साँप को

देखने लगा। साँप भी फन फैलाए लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था। लेखक ने कुएँ की दीवार में पैर जमाकर कुछ मट्टी गराई। इससे साँप का ध्यान बँट गया। वह मट्टी पर मुँह मार बैठा।इस बीच लेखक ने डंडे से जब चट्ठियाँ सरकाई तो साँप ने जोरदार प्रहार कया और अपनी शक्ति के प्रमाण स्वरूप डंडे पर तीन-चार जगह वषवमन कर दिया। इससे लेखक का साहस बढ़ा। उसने चट्ठियाँ उठाने का प्रयास कया तो साँप ने वार कया और डंडे से लपट गया। इस क्रम में साँप की पूँछ का पछला भाग लेखक को छू गया। यह देख लेखक ने डंडे को पटक दिया और चट्ठियाँ उठाकर धोती में बाँध दिया, जिन्हें उसके भाई ने ऊपर खींच लया। अब लेखक ने कुएँ की दीवार से कुछ मट्टी साँप की दाहिनी ओर फेंकी। साँप उस पर झपटा। अब लेखक ने डंडा खींच लया। लेखक ने मौका देखा और जैसे-तैसे हाथों के सहारे सरककर छत्तीस फुट गहरे कुएँ से ऊपर आ गया। प्रश्न 7.इस पाठ को पढ़ने के बाद कन-कन बाल-सुलभ शरारतों के वषय में पता चलता है? उत्तर-बालक प्रायः शरारती होते हैं। उन्हें छेड़छाड़ करने में आनंद मलता है। यदि उनकी छेड़छाड़ से कोई हलचल होती हो तो वे उसमें बहुत मज़ा लेते हैं। साँप को व्यर्थ में ही फॅफकारते देखकर वे बड़े खुश होते हैं।बालकों को प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में वहार करने में भी असीम आनंद मलता है। वे झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाते हैं तथा मन में आनंदित होते हैं। वे आम के पेड़ पर चढ़कर डंडे से आम तोड़कर खाने में खूब आनंद लेते हैं।

प्रश्न ८.मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कतनी मथ्या और उलटी निकलती हैं'-का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मनुष्य कसी किठन काम को करने के लए अपनी बुद्ध से योजनाएँ तो बनाता है, कंतु समस्याओं का वास्त वक सामना होते ही ये योजनाएँ धरी की धरी रह जाती हैं। तब उसे यथार्थ स्थिति को देखकर काम करना पड़ता है। इस पाठ में लेखक ने सोचा था क कुएँ में उत्तरकर वह डंडे से साँप को मार देगा और चट्ठियाँ उठा लेगा, परंतु कुएँ का कम व्यास देखकर उसे लगा क यहाँ तो डंडा चलाया ही नहीं जा सकता है। उसने जब साँप को फन फैलाए अपनी प्रतीक्षा करते पाया तो साँप को मारने की योजना उसे एकदम मथ्या और उलटी लगने लगी।

प्रश्न 9.फल तो कसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरलेखक ने कुएँ से चट्ठियाँ निकालने के लए कुएँ में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लया। इस दृढ़ निश्चय के सामने फल की चंता समाप्त हो गई। उसे लगा क कुएँ में उतरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना उसका काम नहीं है। परिणाम तो प्रभु-इच्छा पर निर्भर है। इस लए वह फल की चंता छोड़कर कुएँ में घुस गया।

*-दीर्घ प्रस्नोत्तर

प्रश्न 1.बड़े भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर लेखक की क्या दशा हुई और क्यों?

उत्तर-बड़े भाई द्वारा बुलाई जाने की बात सुनकर लेखक घबरा गया। उसे बड़े भाई द्वारा पटाई कए जाने का भय सता रहा था। वह कड़ी सरदी और ठंड़ी हवा के प्रकोप के बीच अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था। कहीं बेर खाने के अपराध में ही तो उसे नहीं बुलाया जा रहा था।

प्रश्न 2.लेखक को अपने पटने का भय कब दूर ह्आ?

उत्तर-लेखक अपने बड़े भाई के बुलाने पर सहमा-सा घर आया तो देखा क उसके बड़े भाई पत्र लख रहे हैं। भाई को पत्र लखते देखकर वह समझ गया क उसे इन पत्रों को डाकखाने में डालने के लए ही बुलवाया होगा। यह सोचकर उसे अपने पटने का भय जाता रहा।

प्रश्न 3.डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने क्या-क्या तैयारियाँ कीं और क्यों?

उत्तर-डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने निम्न ल खत तैयारियाँ कीं-

- उसने और उसके छोटे भाई ने अपने-अपने कानों को धोती से बाँधा।
- उसने अपना मजबूत बब्ल का डंडा साथ लया।
- उनकी माँ ने उन्हें भुनाने के लए चने दिए। उन्होंने सर पर टो पयाँ लगाईं।
- उन्होंने ये तैयारियाँ इस लए की क्यों क सरदी के मौसम में तेज़ हवा हड् डयों को भी कँपा रही थी।
 प्रश्न 4.लेखक को अपने डंडे से इतना मोह क्यों था?

उत्तर-लेखक को अपने डंडे से इतना मोह इस लए था, क्यों क-

- उसने इस डंडे से अब तक कई साँप मारे थे।
- वह इस डंडे से आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष आम तोड़ता था।
 उसे अपना मूक डंडा सजीव-सा लगता था।

प्रश्न 5.कुएँ में साँप होने का पता लेखक एवं अन्य बच्चों को कैसे चला?

उत्तर-लेखक और उसके साथ अन्य बच्चे मक्खनपुर पढ़ने जाते थे। उसी रास्ते में छत्तीस फुट गहरा सूखा कच्चा कुआँ था। लेखक ने एक स्कूल से लौटते हुए उसमें झाँक कर देखा और एक ढेला इस लए फेंका ता क वह ढेले की आवाज़ सुन सके, पर ढेला गरते ही उसे एक फुसकार सुनाई दी। इस तरह वे जान गए क कुएँ में साँप है।

प्रश्न 6.लेखक पर बिजली-सी कब गर पड़ी?

उत्तर-लेखक अपने छोटे भाई के साथ मक्खनपुर डाक में चट्ठियाँ डालने जा रहा था। उसके साथ उसका छोटा भाई भी था। उस रास्ते में एक कुआँ पड़ता था जिसमें साँप गर पड़ा था। लेखक के मन में उसकी फुसकार सुनने की इच्छा जाग्रत हुई। उसने एक हाथ से टोपी उतारी और उसी समय दूसरे हाथ से ढेला कुएँ में फेंका। टोपी उतारते ही उसमें रखी चट्ठियाँ कुएँ में चक्कर काटते हुए गर रही थी। चट्ठियों की ऐसी स्थित देखकर लेखक पर बिजली-सी गर पड़ी।

*प्र-3- दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.लेखक को माँ की याद कब और क्यों आई?

उत्तर-लेखक अपने भाई द्वारा लखी चट्ठियाँ डाक में डालने जा रहा था क उसके मन में कुएँ में गरे साँप की फुफकार सुनने की इच्छा जाग उठी। उसने ढेला फेंकने के लए ज्यों ही अपने सर से टोपी उतारी उसमें रखी टो पयाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गर पड़ीं। लेखक निराशा, पटने के भय, और उद्वेग से रोने का उफ़ान नहीं सँभाल पा रहा था। इस समय उसे माँ की गोद की याद आ रही थी। वह चाहता था क माँ आकर उसे छाती से लगा ले और लाड-प्यार करके कह दे क कोई बात नहीं, चट्ठियाँ फर लख ली जाएँगी। उसे वश्वास था क माँ ही उसे इस वपदा में सच्ची सांत्वना दे सकती है।

प्रश्न 2.'लेखक चट्ठियों के बारे में घर जाकर झूठ भी बोल सकता था, पर उसने ऐसा नहीं कया' इसके आलोक में लेखक की चारित्रिक वशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए बताइए क आप लेखक के चरित्र से कन-कन वशेषताओं को अपनाना चाहेंगे?

उत्तर-लेखक जानता था क जिस कुएँ में उससे चट्ठियाँ गर गई हैं, उसमें जहरीला साँप रहता था। उसके पास से चट्ठियाँ उठाना अत्यंत जो खम भरा था। वह चट्ठियों के बारे में घर आकर झूठ-भी बोल सकता था, पर उसने झूठ बोलने के बजाय कुएँ से चट्ठियाँ निकालने का जो खम भरा कार्य कया। लेखक के चिरत्र में सत्यनिष्ठा थी, जो उसके झूठ बोलने की सोच पर भारी पड़ रही थी। वह साहसी और बुद्ध धमान था, जिसके बल पर वह पहले भी कई साँप मार चुका था। उसका संकल्प और आत्मबल मज़बूत था जिसके सहारे वह असंभव को भी सरल काम समझ रहा था। इसी के बल पर उसने योजनानुसार अपना काम कया। मैं लेखक के चिरत्र से सत्यनिष्ठ, प्रत्युत्पन्नमित, साहसी, बुद्ध से काम करने की कला तथा दृढ़ संकल्प जैसे गुण अपनाना चाहता हूँ।

प्रश्न 3.कुएँ से चट्ठियाँ निकालने में उसके भाई का कतना योगदान था? इससे लेखक के चरित्र में कन-कन जीवन मूल्यों की झलक मलती है?

उत्तर-लेखक कुएँ से चट्ठियाँ निकालने का काम संभवतः करने की सोच भी न पाता, यदि उसे अपने भाई का सहयोग न मलता। लेखक ने दृढ़ संकल्प से अपनी दु वधा पर वजयी पाई। उसने चट्ठियाँ निकालने के लए अपनी दो धोतियाँ तथा अपने छोटे भाई की दोनों धोतियों के अलावा वह धोती भी बाँधी जिसमें भुनवाने के लए चने बँधे थे, को परस्पर बाँधा। अब उसके छोर पर एक डंडा बाँधकर उसने कुएँ में लटका दिया और दूसरे हिस्से को कुएँ की डेंग में बाँधकर इसे अपने भाई को पकड़ा दिया। इसके बाद वह चट्ठियाँ उठाने के लए कुएँ में उत्तर गया। अदम्य साहस और बुद् ध कौशल का परिचय देते हुए चट्ठियाँ निकालने में वह सफल हो गया। इस कार्य से लेखक के साहसी होने, बुद् धमान होने, योजनानुसार कार्य करने तथा भाई से असीम लगाव रखने जैसे उच्च जीवन मूल्यों की झलक मलती है।

प्रश्न 4.लेखक ने कस तरह अत्यंत सूझ-बूझ से अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह कया? 'स्मृति' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए। इससे आपको क्या सीख मलती है?

उत्तर-'स्मृति' पाठ में लेखक को उसके भाई ने डाक में डालने की चट्ठियाँ दी थीं। उसकी असावधानी के कारण ये चट्ठियाँ उस कुएँ में गर गईं, जिसमें वषधर बैठा था। उसके पास से चट्ठियाँ उठाना शेर के जबड़े से माँस खींचने जैसा किठन और जो खम भरा था, जिसमें जरा-सी चूक जानलेवा साबित हो सकती थी। यद्य प ऐसा करने के पीछे एक ओर उसमें जिम्मेदारी का भाव था, तो दूसरी ओर भाई से पटने का भय परंतु उसने अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और आत्म वश्वास, धैर्य, वपरीत परिस्थितियों में बुद् धमानी से काम करने की कला के कारण वह मौत के मुँह से चट्ठियाँ उठा लया और मौत को ठेंगा दिखा दिया। इस घटना से हमें यह सीख भी मलती है क ऐसी घटनाओं को हमें प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए और ऐसा कार्य करने से पहले अपने से बड़ों की राय-सलाह अवश्य लेनी चाहिए, ता क हम कसी अनहोनी का शकार न बनें।

प्रश्न 5.'स्मृति' कहानी हमें बच्चों की दुनिया से सच्चा परिचय कराती है तथा बाल मनो वज्ञान का सफल चत्रण करती है। इससे आप कतना सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'स्मृति' कहानी का समूचा कथानक बच्चों की दुनिया के आसपास ही घूमता है। इसमें एक ओर बाल मनो वज्ञान का सुंदर चत्रण है तो बाल सुलभ क्रीड़ाओं का संचार भी रचा-बसा है। इसके अलावा बालकों के साहस, बुद् ध, उत्साह के कारण खतरे को अनदेखा करने जैसे क्रयाकलापों का भी उल्लेख है। कहानी की शुरुआत में ही बच्चों को कड़ी ठंड में झरबेरी तोड़कर खाते हुए चत्रित कया गया है, जिसमें उन्हें असीम आनंद मलता है परंतु भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर यह आनंद तुरंत भय में बदल जाता है परंतु भाई का पत्र लखता देख उसके मन से भय गायब हो जाता है।बच्चे स्कूल जाते हुए उछल-कूद और हँसी मजाक ही नहीं वरन् तरह-तरह की शरारतें भी करते हैं। वे कुएँ में पड़े साँप की फुफकार सुनने के लए उसमें मट्टी का ढेला फेंककर ह र्षत होते हैं। गलती हो जाने पर वे पटाई से बचने के लए तरह-तरह के बहाने सोचते हैं तो समय पर जि मेदारी की अनुभूति करते हैं और जान जो खम में डालने से भी पीछे नहीं हटते हैं। इस तरह यह कहानी बाल मनो वज्ञान का सफल चत्रण करती है

ट्याकरण-

शब्द का वर्ण- वच्छेद :

कसी शब्द या ध्विन के समूह के वर्गों को अलग-अलग लखना वर्ण-वच्छेद कहलाता है। आइए, वर्ण-वच्छेद के कुछ उदाहरण देखते हैं —

सड़क = स् + अ + डू + अ + क् + अ भक्त = भ् + अ + क् + त् + अ महात्मा = म् + अ + ह् + आ + त् + म् + आ क वता = क् + अ + व् + इ + त् + आ प्रयोग = प + र् + अ + य् + ओ + ग् + अ अद्भृत = अ + द् + भ् + उ + त् + अ कलम = क् + अ + ल् + अ + म् + अ
पाठशाला = प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ
आराधना = आ + र् + आ + ध् + अ + न् + आ
प्राकृतिक = प् + र् + आ + क् + ऋ + त + इ + क् + अ
सर्वमान्य = स् + अ + र् + व् + अ + म् + आ + न् + य् + अ
अर्जुन = अ + र् + ज् + ठ + न् + अ
परिश्रम = प् + अ + र + इ + श् + र् + अ + म् + अ
क्षित्रय = क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ
परिक्रमा = प् + अ + र् + इ + क् + र् + अ + म् + आ
क्षमा = क् + ष् + अ + म् + आ
वज्ञान = व् + इ + ज् + ज् + आ + न् + अ
गुरुद्वारा = ग् + ठ + र् + ठ + द् + व् + आ + र् + आ
आइए इन्हें भी जानें –

वर्ण- वच्छेद करते समय निम्न ल खत बातों को जानना आवश्यक है -

- (i) 'रि' और 'ऋ' के रूप -परिचय = प् + अ + र् + इ + च् + अ + य् + अ रिषभ = र् + इ + ष् + अ + भ् + अ । पृथक = प् + ऋ + थ् + अ + क् + अ कृपा = क् + ऋ + प् + आ
- (ii) 'र' और '' तथा '' की मात्राएँ रुस्तम = र् + ठ + स् + त् + अ + म् + अ रुपया = र् + ठ + प् + अ + य् + आ रूपा = र् + ऊ + प् + आ रूठना = र् + ऊ + ठ् + अ + न् + आ
- (iii) 'ह' के व भन्न संयुक्त रूपह्रस्य = ह + र + अ + स् + व् + अ ह्रदय = ह + ऋ + द् + अ + य् + अ प्रह्लाद = प् + र् + अ + ह + ल् + आ + द् + अ चह्न = च् + इ + ह + न् + अ

(iv) 'द' के संयुक्त -रूपद्वार = द् + व् + आ + र् + अ द्रव्य = द् + र् + अ + व् + य् + अ उद्देश्य = उ + द् + द् + ए + श् + य् + अ वरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द + ध् + अ

'**इ' की मात्रा**—शब्दों में 'इ' की मात्रा 'ि' लिखी पहले जाती है और बोली बाद में, इसलिए शब्दों का वर्ण-विच्छेद करते (v) समय 'इ' की मात्रा को बाद में लगाया जाता है; जैसे-

(vi)

अनुस्वार में लगे बिंदु को (ं) जानना—

अंगूर = अं + ग् + क + र् + अ गंगा = ग् + अ + ङ् + ग् + आ कंबल = क् + अं(अ + म्) + ब् + अ + ल् + अ पम्प = प् + अ + म् + प् + अ चंद्र = च् + अं(अ + न्) + द् + र् + अ ठंडक = ठ् + अं + ड् + अ + क् + अ चंदन = च् + अं(अ + न्) + द् + अ + न् + अ चंचु = च् + अं(अ + ज्) + च् + ठ ठंडा = ठ् + अं(अ + ण्) + ड + आ

वर्ण- वच्छेद के उदाहरण -

अंग = अं + ग् + अ अंधा = अं+ ध् + आ अंग्रेज़ = अं+ ग् + र् + ए + ज् + अ अंगार = अँ + ग् + आ + र अचला _ = अ + च् + अ + ल् + आ अधुना = अ + ध् + ठ + न् + आ अक्षर = अ + क् + ष् + अ + र् + अ अवश्य = अ + व् + अ + श् + य् + अ अग्न = अ + ग् + न् + इ अमृत = अ + म् + ऋ + त् + अ

अप्रतिभ = अ + प् + र् + अ + त् + इ + भ् + अ अभ्यागत = अ + भ् + य् + आ + ग् + अ + त् + अ आश्रम = आ + श् + र् + अ + म् + अ इज़्ज़त = इ + ज् + ज् + अ + त् + अ इस्तेमाल = इ + स् + त् + ए + म् + आ + ल् + अ उक्ति = उ + क् + त् + इ उच्चारण = उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ ऋचा = ऋ+ च् + आ एकाग्र = ए + क् + आ + ग् + र् + अ एकाक्षर = ए + क् + आ + क् + ष् + अ + र् + अ औष ध = औ + ष् + अ + ध् + इ कंगार = क् + अं + ग् + आ + र् + ऊ कन्हाई = क् + अ + न् + ह + आ + ई क्शाग्र = क् + उ + श् + आ + ग् + र् + अ अव्यल = अ + व् + व् + अ + ल् + अ आकार = आ + क् + आ + र् + अ आख्यान = आ + ख् + य् + आ + न् + अ आक्रांत = आ + क् + र् + आ + न् + त् + अ आजीवन = आ + ज् + ई + व् + अ + न् + अ आज्ञा = आ + ज् + ञ् + आ आधार = आ + ध् + आ + र् + अ आपूर्ति = आ + प् + क + र् + त् + इ आरूढ़ = आ + र् + क + द + अ गृहस्थ = ग् + ऋ + ह् + अ + स् + थ् + अ ग्राहक = ग् + र् + आ + ह् + अ + क् + अ ग्राह्य = ग् + र् + आ + ह् + य् + अ घृणत = घ् + ऋ + ण् + इ + त् + अ घंटी = घ् + अं+ ट् + ई चकोर = च् + अ + क् + ओ + र् + अ चक्कर = च् + अ + क् + क् + अ + र् + अ चक्र = च् + अ + क् + र् + अ चत्र्थ = च् + अ + त् + उ + र् + थ् + अ चाँदनी = च् + आँ + द् + अ + न् + ई।

चक्ष = च् + अ + क् + ष् + उ चित्रित = च् + इ + त् + र् + इ + त् + अ चिह्नित = च् + इ + ह + न् + इ + त् + अ ज़ख्मी = ज् + अ + ख् + म् + ई जीवन = ज् + ई + व् + अ + न् + अ जुर्माना = ज् + उ + र् + म् + आ + न् + आ जागृति = ज् + आ + ग् + ऋ + त् + इ जिज्ञासा = ज् + इ + ज् + ज् + आ + स् + आ जिह्वा = ज् + इ + ह् + व् + आ जुझारू = ज् + उ + झ् + आ + र् + ज ज्ञा पत _= ज् + ज् + आ + प् + इ + त् + अ ज्योत्स्ना = ज् + य् + ओ + त् + स् + न् + आ झंडा = झ् + अं+ इ + आ टिप्पणी = ट् + इ + प् + प् + अ + ण + ई ठाक्र = ठ् + आ + क् + उ + र् + आ दूँढना = द् + ज + * + द + अ + न् + अ तांत्रिक = त् + आ + अं+ त् + र् + इ + क् + अ त्रृटि = त् + र् + उ + ट् + इ त्वरित = त् + व् + अ + र् + इ + त् + अ तालाब = त् + आ + ल् + आ + ब् + अ कौत्क = क् + औ + त् + उ + क् + अ क्रय = क् + र् + अ + य् + अ कृत्रिम = क् + ऋ + त् + र् + इ + म् + अ क्रोध = क् + र् + ओ + ध् + अ क्ले श = क् + ल् + ए + श् + अ खट्टा = ख् + अ + ट् + ट् + आ ख्याति = ख + य् + आ + त् + इ गाँठ = ग् + आँ + ठ् + अ गद्य = ग् + अ + द् + य् + अ त्रिभ्ज = त् + र + इ + भ् + उ + ज् + अ तृष्णा = त् + ऋ + ष् + ण् + आ दफ़्तर = द् + अ + फ़् + त् + अ + र् + अ देवत्व = द + ए + व् + अ + त् + व् + अ

दंभी = द् + अं+ भ् + ई दृष्टि = द् + ऋ + ष् + ट् + इ द्रवत = द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ

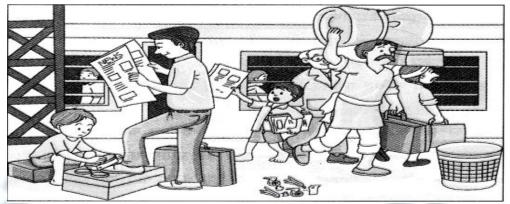
लेखन- चत्र वर्णन के उदाहरण

दिए गए चत्रों को देखकर 20-30 शब्दों में उनका वर्णन कीजिए।

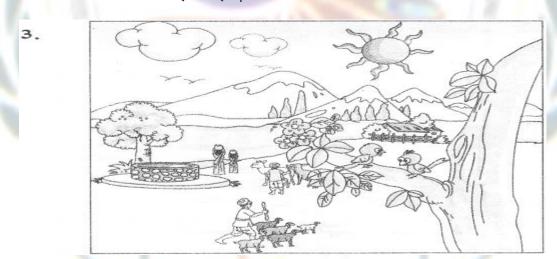
1.



प्रस्तुत चत्र मंदिर का है। मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मान सक शांति पाता है। अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं। इस चत्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लए मंदिर जा रही है। हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का वधान है इस लए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है। इस चत्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है। एक बच्चा पूजा के लए जाती हुई महिला से भक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भक्षा के लए फैला रखा है। सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो क अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।



यह चत्र रेलवे प्लेटफार्म का है। जिसमें एक गाड़ी खड़ी है। गाड़ी के अंदर यात्री बैठे हुए हैं। दो कुली सर पर सामान रखकर हाथ में अटैची पकड़े चल रहे हैं। जिस व्यक्ति का सामान है वह उनके साथ चल रहा है। एक बच्चा हाथ में अखबार लए बेचने के लए घूम रहा है। दूसरी तरफ एक बच्चा अपनी बूट-पॉ लश की दुकान लगाए बैठा है। एक व्यक्ति हाथ में समाचार-पत्र लए पढ़ रहा है। बच्चा उनके जूते की पॉ लश कर रहा है। कनारे पर एक कूड़ेदान रखा हुआ है, ले कन कूड़ा चारों ओर फैला हुआ है। सरकार की ओर से साफ़-सफ़ाई की ओर ध्यान दिया जाता है। मगर जब तक प्रत्येक नागरिक अपना कर्तव्य नही निभाएँगे तब तक सभी प्रयत्न वफल होते रहेंगे।



यह दृश्य प्रातःकाल सूर्योदय का है। आसमान का रंग सूर्य की ला लग लए हुए एक अनूठी छटा बिखेर रहा है। कुछ पक्षी उड़ रहे हैं कुछ पेड़ की डाल पर बैठे उड़ने की तैयारी में हैं। दो घर दिखाई दे रहे हैं जिनके बाहर सुन्दर फूलों के पौधे हैं। सामने कुआँ है उसके पास एक बड़ा वृक्ष है। दो स्त्रियाँ सर पर घड़े रखकर कुएँ से पानी लेने जा रही हैं। चरवाहा भेड़ों को चराने के लए ले जा रहा है। पूरा दृश्य मनमोहक छटा बिखेर रहा है। प्रातःकाल का समय सबसे उत्तम समय माना जाता है। इस समय भ्रमण करने से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

पाठ-३-एवरेस्ट मेरी शखर यात्रा

ले खका बचेंद्री पाल -जन्म – 1954

पाठ सार:

बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट की चढ़ाई के सफर की बात करते हुए कहती हैं क एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल 7 मार्च को दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू के लए चल पड़ा था। उस दल से पहले ही एक मज़बूत दल बह्त पहले ही एवरेस्ट की चढ़ाई के लए चला गया था जिससे क वह बचेंद्री पाल वाले दल के पहुँचने से पहले बर्फ के गरने के कारण 'बेस कैम्प' बने कठिन रास्ते को साफ कर सके। बचेंद्री पाल कहती हैं क नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वा धक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है।यहीं से बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को देखा था। बचेंद्री पाल कहती हैं क लोगों के द्वारा बचेंद्री पाल को बताया गया क शखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को द क्षणपूर्वी पहाड़ी पर तूफानों को झेलना पड़ता है-, वशेषकर जब मौसम खराब होता है। जब उनका दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा तो उन्हें हमें बर्फ के खसकने के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःख भरा समाचार मला। सोलह शेरपा कु लयों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे। इस समाचार के कारण बचेंद्री पाल के अभयान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी को देखकर उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को साफ़साफ़ कह दिया क एवरेस्ट पर चढ़ाई करना कोई -आसान काम नहीं है, वहाँ पर जाना मौत के मुँह में कदम रखने के बराबर है। बचेंद्री पाल कहती हैं क उपनेता प्रेमचंद, जो पहले वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, वे भी 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने बचेंद्री पाल के दल की पहली बड़ी समस्या बचेंद्री पाल और उनके सा थयों को खुंभ हिमपात की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके सा थयों को यह भी बताया क पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झं डयों से रास्ते को चहिनत कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लया गया है। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके सा थयों का ध्यान इस पर भी दिलाया क ग्ले शयर बर्फ की नदी है और बर्फ का गरना अभी जारी है। जिसके कारण अभी तक के कए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और उन लोगों को रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है। बचेंद्री पाल कहती हैं क में पह्ँचने से पहले उन्हें और उनके सा थयों को एक और मृत्यु की खबर मली। 'बेस कैंप' जलवायु के सही न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से

अब बचेंद्री पाल और उनके साथी आशा उत्पन्न करने स्थिति में नहीं चल रहे थे। सभी घबराए हुए थे। बेस कैंप पहुँचाने पर दूसरे दिन बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रे णयों को देखा। बचेंद्री पाल हैरान होकर खड़ी रह गई। बचेंद्री पाल कहती हैं क दूसरे दिन नए आने वाले अपने ज़्यादातर सामान को वे हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीन् मेहता ने बचेंद्री पाल और उनके सा थयों को अल्यू मनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ीतिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना -और उनके पहले दल के तकनीकी कार्यों के बारे में उन्हें वस्तार से सारी जानकारी दी। बचेंद्री पाल कहती हैं क उनका तीसरा दिन हिमपात से कैंपएक तक सामान ढोकर चढ़ाई -साथ -का अभ्यास करने के लए पहले से ही निश्चित था। रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल साथ टॉकी था-चढ़ रहे थे। उनके पास एक वॉकी, जिससे वे अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल ने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्यों क कैंपएक पर <mark>प</mark>ँह्चने वाली केवल वे दो ही महिलाएँ थीं। -जब अप्रैल में बचेंद्री पाल कैंप बेस में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ उनके पास आए थे। उन्होंने इस बात पर वशेष <mark>महत्त्व दिया क</mark> दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। बचेंद्री पाल कहती हैं क जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना परिचय यह कहकर दिया क वे इस चढ़ाई के लए बिल्क्ल ही नई सीखने वालीं हैं और एवरेस्ट उनका पहला अ भयान है। तेनजिंग हँसे और बचेंद्री पाल से कहा क एवरेस्ट उनके लए भी पहला अ भयान है, ले कन यह भी स्पष्ट कया क शखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जा<mark>ना पड़ा था। फर</mark> अपना हाथ बचेंद्री पाल के कंधे पर रखते ह्ए उन्होंने कहा क बचेंद्री पाल एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती है। उसे तो शखर पर पहले ही प्रयास में पह्ँच जाना चाहिए। बचेंद्री पाल कहती हैं क 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णमा के दिन वह ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप तीन में थी। वह गहरी नींद में सोइ ह्ई थी क रात में-12.30 बजे के लगभग उनके सर के पछले हिस्से में कसी एक सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। एक लंबा बर्फ का पंड उनके कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्ले शयर से टूटकर नीचे आ गरा था और उसका एक बह्त बड़ा बर्फ का टुकड़ा बन गया था। लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से बचेंद्री पाल और उनके सा थयों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे । उन्होंने बचेंद्री पाल के चारों तरफ की कड़ी जमी बर्फ की ख्दाई की और बचेंद्री पाल को उस बर्फ की कब्र से निकाल कर बाहर खींच लाने में सफल हो गए। बचेंद्री पाल कहती हैं क अगली स्वह तक सारे स्रक्षा दल आ

गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक वे सभी कैम्पदो पर पह्ँच गए थे। बचेंद्री पाल और -उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने पछली रात को हुए हादसे को उनके शब्दों में कुछ इस तरह कहा क यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षाकार्य का एक अत्यंत साहस से भरा कार्य था। -बचेंद्री पाल कहती हैं क सभी नौ पुरुष सदस्यों को जिन्हें चोटें आई थी और हड् डयां टूटी थी उन्हें बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर बचेंद्री पाल की तरफ मुड़े और कहने लगे क क्या वह डरी ह्ई है? इसके उत्तर में बचेंद्री पाल ने हाँ में उत्तर दिया। कर्नल खुल्लर के फर से पूछने पर क क्या वह वा पस जाना चाहती है? इस बार बचेंद्री पाल ने बिना कसी हिच कचाहट के उत्तर दिया क वह वा पस नहीं जाना चाहती।बचेंद्री पाल कहती हैं क दोपहर बाद उन्होंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लए नीचे जाने का निश्चय कया। उन्होंने बर्फीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। बचेंद्री पाल को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मला। उसने बचेंद्री पाल के द्वारा लाई गई चाय <mark>वगैरह</mark> पी ले कन बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की को शश भी की। मगर बचेंद्री पाल को की से भी मलना था। थोड़ासा और आगे -नीचे उतरने पर उन्होंने की को देखा। की बचेंद्री पाल को देखकर चौंक गयाऔर उसने बचेंद्री पाल से कहा क उसने इतना बड़ा जो खम क्यों उठाया? बचेंद्री पाल ने भी उसे दृढ़तापूर्वक कहा क वह भी औरों की तरह एक पर्वतारोही है, इसी लए वह इस दल में आई ह्ई है। बचेंद्री पाल कहती हैं क साउथ कोल जगह के नाम से प्रस 'पृथ्वी पर बह्त अ धक कठोर'द्ध है। बचेंद्री पाल कहती हैं क अगले दिन वह सुबह चार बजे उठी। उसने बर्फ को पघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चा<mark>ँकलेट</mark> का हलका नाश्ता करने के बाद वह लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। बचेंद्री पाल कहती हैं क सुबह 6:20 पर जब अंगदोरजी और वह साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकीहलकी -हवा चल रही थी, ले कन ठंड भी बह्त अधक थी। बचेंद्री पाल और उनके सा थयों ने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और बचेंद्री पाल को भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। बचेंद्री पाल कहती हैं क जमे ह्ए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, ऐसा लगता था मानो शीशे की चादरें बिछी हों। उन सभी को बर्फ काटने के फावडें का इस्तेमाल करना ही पड़ा और बचेंद्री पाल कहती हैं क उन्हें इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे क उस जमे ह्ए बर्फ की धरती को फावडें के दाँते काट सके। बचेंद्री पाल कहती हैं क उन्होंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोचसमझकर उठाया। क्यों क वहाँ एक छोटी सी भी गलती मौत का -कारण बन सकती थी। बचेंद्री पाल कहती हैं क दो घंटे से भी कम समय में ही वे सभी

शखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और उन्होंने कहा क पहले वाले दल ने शखर कैंप पर पह्ँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि अब उनका दल इसी गति से चलता रहे तो वे शखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे। ल्हाटू ने ध्यान दिया क बचेंद्री पाल इन ऊँचाइयों के लए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं क जैसे ही उसने बचेंद्री पाल के रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, बचेंद्री पाल कहती हैं क उन्हें महसूस ह्आ क सीधी और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।बचेंद्री पाल कहती हैं क द क्षणी शखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भ्रभ्रे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी कुछ भी देख पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अनेक बार देखा क केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है। यह देख कर बचेंद्री पाल कहती हैं क उनकी तो साँस मानो रुक गई थी। उन्हें वचार आया क सफलता बह्त नज़दीक है। 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मनट पर वह एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली बचेंद्री पाल प्र<mark>थम भारतीय म</mark>हिला थी।बचेंद्री पाल कहती हैं क एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी क दो व्यक्ति साथसाथ खड़े हो -सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए उन सभीके सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुर क्षत रूप से खड़ा रहने लायक जगह ब<mark>नाई। ख़ुशी के इस पल में</mark> बचेंद्री पाल को अपने माता पता का -ध्यान आया। बचेंद्री पाल कहती हैं क जैसे वह उठी, उन्होंने अपने हाथ जोड़े और वह अपने रज्जुनेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने बचेंद्री पाल को -प्रोत्साहित कया और लक्ष्य तक पहुँचाया। बचेंद्री पाल ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने बचेंद्री पाल को गले से लगाया और उनके कानों में फुसफुसाया क दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। वह बह्त प्रसन्न है। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता से बह्त प्रसन्न थे। <mark>बचेंद्री पाल को बधाई देते ह्</mark>ए उन्होंने कहा क वे बचेंद्री पाल की इस अलग प्राप्ति के लए बचेंद्री पाल के माता पता को बधाई देना चाहते- हैं। वे बोले क देश को बचेंद्री पाल पर गर्व है और अब वह एक ऐसे संसार में वापस जाएगी, जो उसके द्वारा अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम अलग होगा।

*निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.अ ग्रम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था? उत्तर।अ ग्रम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे- प्रश्न 2.ले खका को सागरमाथा क्यों अच्छा लगा?

उत्तर-ले खका को 'सागरमाथा' नाम इस लए अच्छा लगा क्यों क सागरमाथा का अर्थ है- सागर का माथा और एवरेस्ट संसार की सबसे ऊँची चोटी है।

प्रश्न 3.ले खका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर-ले खका को तेज हवाओं के कारण उठी हुई चक्करदार बर्फीली आकृति ध्वज जैसी प्रतीत हुई। प्रश्न 4.हिमस्खलन से कतने लोगों की मृत्यु हुई और कतने घायल हुए?

उत्तर-हिमस्खलन से दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और नौ लोग घायल हुए।

प्रश्न 5.मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर-मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा क ऐसे साह सक अ भयानों में होने वाली मृत्यु को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न 6.रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर-रसोई सहायक की मृत्यु स्वास्थ्य के प्र<mark>तिकूल ज</mark>लवायु में काम करने के कारण हुई। प्रश्न 7.कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

उत्तर-कैंप-चार 7900 मीटर ऊँची 'साउथ कोल' <mark>नामक</mark> जगह पर 29 अप्रैल को लगाया गया था। प्रश्न 8.ले खका ने तेनजिंग को अपना परिचय कस तरह दिया?

उत्तर-ले खका ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हु<mark>ए कहा क वह नौ स खया है और एवरेस्ट उसका</mark> पहला अभयान है।

प्रश्न 9.ले खका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे कन शब्दों में बधाई दी? उत्तर-ले खका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने कहा- मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लए तुम्हारे माता- पता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भन्न होगा।

*-निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर ल खए

प्रश्न 1.नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर ले खका को कैसा लगा?

उत्तर-नजदीक से एवरेस्ट को देखने पर ले खका भौंचक्की रह गई। उसे टेढ़ी-मेढ़ी चोटियाँ ऐसी लग रही थीं मानो कोई बरफ़ीली नदी बह रही हो।

प्रश्न 2.डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?

उत्तर-डॉ. मीनू मेहता ने ले खका को अल्यु मनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का निर्माण करने, लट्टों और रिस्सियों का उपयोग करने, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रिस्सियों को बाँधने तथा अग्रम दल के अभयांत्रिकीकार्यों की वस्तृत जानकारी दी।

प्रश्न 3.तेनजिंग ने ले खका की तारीफ में क्या कहा?

उत्तर-तेनजिंग ने ले खका की तारीफ में कहा, "तुम पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो पहले ही प्रयास में शखर पर पहुँच जाना चाहिए। प्रश्न 4.ले खका को कनके साथ चढ़ाई करनी थी?

उत्तर-ले खका के अभयान-दल में यों तो लोपसांग, तशारिंग, एन.डी. शेरपा आदि अनेक सदस्य थे। कंतु उन्हें जिन साथयों के संगयात्रा करनीथी, वेथे-की, जय और मीनू।

प्रश्न 5.लोपसंगा ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ कया?

उत्तर-लोपसांग ने तंबू का रास्ता साफ़ करने के लए अपनी स्विस छुरी निकाली। उन्होंने ले खका के आसपास जमें बड़े-बड़े हिम पंडों को हटाया और ले खका के चारों ओर जमी कड़ी बरफ़ की खुदाई कया। उन्होंने बड़ी मेहनत से ले खका को बरफ़ की कब्र से खींच निकाला।

प्रश्न 6.साउथ कोल कैंप पहुँचकर ले खका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शूरू की?

उत्तर-'साउथ कोल' कैंप पहुँचकर ले खका ने अगले दिन की चढ़ाई की तैयारी शुरू की। उसने खाना, कु कंग गैस तथा ऑक्सीजन सलेंडर इकट्टे कए। उसके बाद वह चाय बनाने की तैयारी करने लगी॥ *-निम्न ल खत प्रश्नों के दीर्घ उत्तर ल खए-

प्रश्न 1.उपनेता प्रेमचंद ने कन स्थितियों से अवगत कराया?

उत्तर-उपनेता प्रेमचंद ने अभयान दल को खंभु हिमपात की स्थित की जानकारी देते हुए कहा क उनके दल ने कैंप-एक जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है और फल बनाकर, रिस्सियाँ बाँधकर तथा इं इयों से रास्ता चिन्हित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया क ग्ले शयर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गरना अभी जारी है। हिमपात में अनिय मत और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के कए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

प्रश्न 2.हिमपात कस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर-बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गरना ही हिमपात कहलाता है। ग्ले शयर के बहने से बर्फ में हलचल मच जाती है। इस कारण बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गर जाती हैं। इस अवसर पर स्थिति ऐसी खतरनाक हो जाती है क धरातल पर दरार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। अकसर बर्फ़ में गहरी-चौड़ी दरारें बन जाती हैं। हिमपात से पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधक बढ़ जाती हैं। प्रश्न 3.ले खका ने तंबू में गरे बरफ़ पंड का वर्णन कस तरह कया है?

उत्तर-ले खका ने तंबू में गरे बरफ़ के पंड का वर्णन करते हुए कहा है क वह ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए नाइलान के तंबू के कैंप-तीन में थी। उसके तंबू में लोपसांग और तशारिंग उसके तंबू में थे। अचानक रात साढ़े बारह बजे उसके सर में कोई सख्त चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। तभी एक जोरदार धमाका हुआ और उसे लगा क एक ठंडी बहुत भारी चीज़ इसके शरीर को कुचलती चल रही थी। इससे उसे साँस लेने में कठिनाई होने लगी।

प्रश्न 4.ले खका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर-जय बचेंद्री पाल का पर्वतारोही साथी था। उसे भी बचेंद्री के साथ पर्वत-शखर पर जाना था।

शखर कैंप पर पहुँचने में उसे देर हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। अतः बचेंद्री उसके लए चाय-जूस आदि लेकर उसे रास्ते में लवाने के लए पहुँची। जय को यह कल्पना नहीं थी क बचेंद्री उसकी चंता करेंगी और उसे लवी लाने के लए आएँगी। इस लए जब उसने बचेंद्री पाल को चाय-जूस लए आया देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया। प्रश्न 5.एवरेस्ट पर चढ़ने के लए क्ल कतने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए। उत्तर-पाठ से ज्ञात होता है क एवरेस्ट पर चढ़ाई के लए कुल पाँच कैंप बनाए गए। उनके दल का पहला कैंप 6000 मीटर की ऊँचाई पर था जो हिमपात से ठीक ऊपर था। दूसरा कैंप-चार 7900 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया था। कैंप-तीन ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर बनाया गया था। यहाँ नाइलोन के तंबू लगाए गए थे। एक कैंप साउथकोल पर बनाया गया था। यहीं से अ भयान दल को एवरेस्ट पर चढ़ाई करनी थी। इसके अलावा एक बेस कैंप भी बनाया गया था।

प्रश्न 6.चढाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उतर-जब बचेंद्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँची तो वहाँ चारों ओर तेज़ हवा के कारण बर्फ़ उड़ रही थी। बर्फ़ इतनी अधक थी क सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। पर्वत की शंक् चोटी इतनी तंग थी क दो आदमी वहाँ एक साथ खड़े नहीं हो सकते थे। नीचे हजारों मीटर तक ढलान ही ढलान थी। अतः वहाँ अपने आपको स्थिर खड़ा करना बह्त कि<mark>न था। उन्होंने बर्फ</mark> के फावड़े से बर्फ़ तोड़कर अपने टिकने योग्य स्थान बनाया।

प्रश्न 7.सम्मि लत अ भयान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के कस कार्य से मलता है?

उतर-एवरेस्ट पर वजय पाने के अभयान के दौरान ले खको बचेंद्री पाल अपने सा थयो 'जय', की 'मीनू' के साथ चढाई कर रही थी, परंतु वह इनसे पहले साठथ कोल कैंप पर जा पहुँची क्यों क वे बिना ऑक्सीजन के भारी बोझ लादे चढ़ाई कर रहे थे। ले खका ने दोपहर बाद इन सदस्यों की मदद करने के लए एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भर लया और बरफ़ीली हवा में कैंप से बाहर निकल कर उन सदस्यों की ओर नीचे उतरने लगी। उसके इस कार्य से सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय मलता है।।

*-निम्न ल खत के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.एवरेस्ट जैसे महान अ भयान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उतर-एवरेस्ट की सर्वोच्च चोटी पर चढ़ना एक महान अ भयान है। इसमें पग-पग पर जान जाने का खतरा होता है। अतः यदि ऐसा कठिन कार्य करते हुए मृत्यु भी हो जाए, तो उसे सहज घटना के रूप में लेना चाहिए। बहुत हाय-तौबा नहीं मचानी चाहिए।

प्रश्न 2.सीधे धरातल पर दरार पड़ने का वचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-वदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी क हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कु लयों को प्रतिदिन छूता रहेगा। उत्तर-आशय यह है क गले शयरों के बहने से बरफ़ में हलचल होने से बरफ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें अचानक गर जाती हैं। इससे धरातल पर दरार पड़ जाती है। यही दरारें हिम-वदर में बदल जाती हैं जो पर्वतारोहियों की मृत्यु का कारण बन जाती है। इसका ख्याल ही मन में भय पैदा कर देता है। दुर्भाग्य से यह भी जानकारी मल गई थी क इस अभयान दल को अपने अभयान के दौरान ऐसे हिमपात का सामना करना ही पड़ेगा।

प्रश्न 3.बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चत्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बरफ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता पता का ध्यान आया। उत्तर-जब बचेंद्री पाल हिमालय की चोटी पर सफलतापूर्वक पहुँच गई तो उसने घुटने के बल बैठकर बर्फ़ को माथे से छुआ। बिना सर नीचे झुकाए हुए ही अपने थैले से दुर्गा माँ का चत्र और हनुमान चालीसा निकाला। उसने इन्हें एक लाल कपड़े में लपेटा। थोड़ी सी पूजा की। फर इस चत्र तथा हनुमान चालीसा को बर्फ में दबा दिया। उस समय उसे बहुत आनंद मला। उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने माता- पता को याद कया।

संचयन-पाठ-3-कल्लू कुम्हार की उनाकोटि

लेखक वक्रम संह .के -जन्म – 1938

पाठ सार:

लेखक ध्विन का एक अनोखा गुण बताते हुए कहता है क वह एक क्षण में ही आपको कसी दूसरे ही समय संदर्भ में पहुँचा सकती है। लेखक ने-ऐसा इस लए कहा है क्यों क लेखक यहाँ हमें यह समझाना चाहता है क जब हम कभी कोई काम कर रहे होते है और अचानक ही कोई तेज आवाज हो तो हम हड़बड़ा जाते है और कुछ समय के लए कभीकभी तो भूल भी -जाते हैं क हम क्या काम कर रहे थे। लेखक अ<mark>प</mark>ने बारे में कहता है क वह उन लोगों में से नहीं है जो सुबह चार बजे उठते हैं, <mark>पाँच बजे</mark> तक सुबह की सैर के लए तैयार हो जाते हैं और फर लोधी गार्डन पहुँच कर वहाँ बने मकबरों को निहारते रहते है और अपनी मेम साहबों के साथ में लंबी सैर पर निकल जाते हैं। लेखक तो आमतौर पर सूर्योदय के साथ उठता है और फर अपनी चाय खुद बनाता है <mark>और फर चाय औ</mark>र अखबार लेकर लंबी आलस से भरी हुई सुबह का मजा लेता है। लेखक कहता है क अकसर अखबार की खबरों पर उसका कोई ध्यान नहीं रहता। उसका अखबार पढ़ना तो सर्फ दिमाग को कसी कटी पतंग की तरह ऐसे ही हवा में तैरने देने का एक बहाना है। लेखक कसी एक दिन की स्बह का वर्णन करता ह्आ कहता है क उस दिन अभी लेखक की वह शांतिपूर्ण दिनचर्या शुरू ही हुई थी क उसमें एक बाधा पड़ गई। उस सुबह लेखक एक ऐसी कान को फाड़ कर रख देने वाली तेज आवाज के कारण जागा, यह आवाज तोप दगने और बम फटने जैसी लग रही थी, उस आवाज को सुनकर लेखक को लगा क गोया जार्ज डब्लूबुश और सद्दाम ह्सैन की मेहरबानी से तीसरे . वश्वयुद्ध की शुरुआत हो चुकी हो। लेखक ने खुदा का शुक्रयादा कया क्यों क ऐसी कोई बात नहीं थी। दरअसल यह तो सर्फ स्वर्ग में चल रहा देवताओं का कोई खेल था, जिसकी झलक बिज लयों की चमक और बादलों की गरज के रूप में देखने को मल रही थी। लेखक ने खड़की के बाहर झाँका। लेखक ने देखा क आकाश बादलों से भरा था जिसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सेनापतियों द्वारा छोड़ दिए गए सैनिक आतंक में एकदूसरे से टकरा रहे हो। -तर्जन ने ल-इस तांडव के गर्जनेखक को तीन साल पहले त्रिपुरा में उनाकोटी की एक शाम की याद दिला दी थी। लेखक कहता है क वह तीन साल पहले दिसंबर 1999 में ऑन द ' शीर्षक वाली एक टीवी शृंखला बनाने के सल सले में मैं त्रिपुरा की राजधानी अगरतला 'रोड

गया था। त्रिप्रा भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक है। चैंतीस प्रतिशत से ज्यादा की इसकी जनसंख्या वृद्ध दर दूसरे राज्यों की अपेक्षा भी खासी ऊँची है। लेखक इसकी सीमा के बारे में बताते ह्ए कहता है क यह तीन तरफ से तो बांग्लादेश से घिरा ह्आ है और बाकी बचा शेष भाग भारत के साथ ऐसे स्थान से जुड़ा ह्आ है जहाँ पर हर कसी का पहुँचना आसान नहीं है। बांग्लादेश से लोगों का बिना अनुमित के त्रिपुरा में आना और यहीं बस जाना जबर्दस्त है और इसे यहाँ सामाजिक रूप से स्वीकार भी कया गया है। यहाँ की असाधारण जनसंख्या वृद्ध का मुख्य कारण लेखक इसी को मानता है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का त्रिपुरा प्रवास यहाँ होता ही है। लेखक कहता है क पहले के तीन दिनों में उसने अगरतला और उसके आसपास ही शूटिंग की-, जहाँ लेखक शूटिंग कर रहा था वह स्थान कभी मंदिरों और महलों के शहर के रूप में जाना जाता था। त्रिपुरा में लगातार बाहरी लोगों के आने और यहीं बस जाने से कुछ समस्याएँ तो पैदा हुई हैं ले कन इसके कारण यह राज्य व भन्न धर्मों वाले समाज का उदाहरण भी बना है। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसू चत जनजातियों और वश्व के चारों बड़े धर्मों का प्रतिनिध्त्व मौजूद है। लेखक कहता है क अगरतला में शूटिंग के बाद उन्होंने त्रिपुरा का राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पकड़ा और टी लयामुरा कस्बे में जा पहुँचे। यहाँ लेखक की मुलाकात हेमंत कुमार जमातिया से हुई जो वहाँ के एक बह्त ही प्र सद्ध लोकगायक थे और उन्हें 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रस्कार भी दिए गए हैं। जिला परिषद ने लेखक की शूटिंग यूनिट के लए एक भोज का प्रबंध कया था। त्रिपुरा के लोग अभी दिखावटी दुनिया से दूर थे, वे अपने रीतीरिवाजों को ही मानते आ रहे थे। भोजन करने के बाद लेखक -ने हेमंत कुमार जमातिया से एक गीत सुनाने की प्रार्थना की और उन्होंने अपनी धरती पर बहती शक्तिशाली नदियों, ताजगी भरी हवाओं और शांति से भरा एक गीत गाया। टी लयामुरा शहर के वार्ड नं .3 में लेखक की मुलाकात एक और गायक से ह्ई। वह गायक थी मंजु ऋ षदास। ऋ षदास मो चयों के एक समुदाय का नाम है। ले कन जूते बनाने के अलावा इस समुदाय के कुछ लोग थाप वाले वाद्<mark>यों</mark> जैसे तबला और ढोल के निर्माण और उनकी मरम्मत के काम में भी बहुत ज्यादा अच्छे थे। मंजु ऋ षदास के बारे में लेखक बताते हैं क मंजु ऋ षदास एक बह्त ही आकर्षक महिला थीं और वह एक रे डयो कलाकार भी थी। रे डयो कलाकार होने के अलावा वे नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनि धत्व भी करती थीं। लेखक कहता है क मंजु ऋ षदास भले ही पढ़ी लखी नहीं थीं। ले कन वे अपने वार्ड की सबसे बड़ी -आवश्यकता यानी साफ पीने के पानी के बारे में उन्हें पूरी जानकारी थी। त्रिपुरा के उस मुख्य भाग में प्रवेश करने से पहले जहाँ पर हिंसा हो रही थी, टी लयामुरा वहाँ की आ खरी जगह थी। मुख्य स चव और आई.जी., सीसे लेखक ने निवेदन कया था क वे लेखक और .एफ.पी.आर.

आगे चलने दें। -लेखक की पूरी यूनिट को घेरेबंदी में चलने वाले यात्रियों के दलों के आगे .जी.इसके लए मुख्य स चव और आई, सीपहले तो तैयार नहीं हुए परन .एफ.पी.आर.्तु फर थोड़ी नानुकुर करने के बाद वे इसके लए तैयार हो गए ले कन उन्होंने लेखक के सामने -की .एफ.पी.आर.एक शर्त रखी। वह शर्त थी क लेखक और लेखक के कैमरामैन को सी ह थयारों से भरी गाड़ी में चलना होगा और यह काम लेखक और लेखक के कैमरामैन को अपने जो खम पर करना होगा। लेखक मनु कस्बे के बारे में बताता हुआ कहता है क त्रिपुरा की प्रमुख नदियों में से एक मनु नदी है। जिसके कनारे स्थित मनु एक छोटा सा कस्बा है। जिस वक्त लेखक और लेखक की यूनिट मनु नदी के पार जाने वाले पुल पर पहुँची, तब शाम हो रही थी और लेखक उस शाम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है क उस शाम को सूर्य की सुनहरी करणें को मनु नदी के जल पर बिखरा हुआ देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सूर्य मनु नदी के पानी में अपना सोना उँड़ेल रहा था। लेखक कहता है क अब वे सब उत्तरी त्रिपुरा जिले में आ गए थे। यहाँ की लोक प्रय घरे<mark>लू गति</mark> व धयों में से एक गति व ध अगरब तयों -के लए बाँस की पतली सींकें तैयार करना है। अगरब तयों के लए बाँस की पतली सींकें तैयार करने के बाद अगरब तयाँ बनाने के लए इन्हें कर्नाटक और ग्जरात भेजा जाता है। उत्तर त्रिपुरा पहुँचाने के बाद लेखक ने वहाँ के जिला धकारी सेमुलाकात की, वह जिला धकारी केरल से आया ह्आ एक नौजवान निकला। उसके बारे में लेखक बताता है क वह जिला धकारी बहुत तेज, सभी से अच्छी तरह मलने वाला और उत्साह से भरा हुआ व्यक्ति था। जब लेखक और वह जिला धकारी चाय पी रहे थे उस दौरान उस जिला धकारी ने लेखक को बताया क टीकी खेती को त्रिपुरा में (टरू पोटेटो सीड्स) .एस.पी., खासकर पर उत्तरी जिले में कस तरह से सफलता मली है। त्रिपुरा से टीको अब न सर्फ असम .एस.पी., मज़ोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश को ही भेजा जाता है, बल्कि अब तो वदेशों में जैसे बांग्लादेश, मले शया और वएतनाम को भी भेजा जा रहा है। जिला धकारी ने अचानक लेखक से पूछा क क्या वह उनाकोटी में शूटिंग करना पसंद करेंगा? जिला धकारी ने लेखक को उनाकोटी के बारे में आगे बताते हुए कहा क उनाकोटी <mark>भारत का सबसे ब</mark>ड़ा तो नहीं परन्तु सबसे बड़े भगवान् शव के तीर्थों में से एक जरूर है। जिला धकारी कहता है क यह जगह जंगल में काफी भीतर है हालाँ क जहाँ लेखक और उसकी यूनिट अभी थी वहाँ से इसकी दूरी सर्फ नौ कलोमीटर ही थी। अब तक जिला धकारी ने उनाकोटी के बारे में इतना सब कुछ बता दिया था क लेखक के पर इस जगह का रंग पूरी तरह से चढ़ चुका था। टी लयामुरा से मनु तक की यात्रा कर लेने के बाद तो लेखक अपने आप को कुछ ज्यादा ही साहसी महसूस करने लगा था। क्यों क टी लयामुरा से मनु तक की यात्रा बह्त खतरनाक थी और लेखक उसे पार कर चूका था तो

उसे लगता है क वह टी लयामुरा से मनु तक की यात्रा को कर सकता है तो उनाकोटी पहुँचाने के लए जंगल पार करना कौन सी बड़ी बात है। लेखक हमें उनाकोटी के बारे में बताता ह्आ कहता है क उनाकोटी का मतलब है एक कोटि, यानी एक करोड़ से एक कम। लेखक कहता है क एक काल्पनिक कथा के अनुसार उनाकोटी में शव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। यहाँ पहाड़ों को अंदर से काटकर वशाल आधारमूर्तियाँ बनाई गई हैं। एक बह्त वशाल -चट्टान ऋष भगीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा के उतरने की पौरा णक कथा को चत्रित करती है। गंगा के पृथ्वी पर उतरने के धक्के से कहीं पृथ्वी धँसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसी वजह से भगवान् शव को इसके लए तैयार कया गया क वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और इसके बाद इसे धीरेधीरे पृथ्वी पर बहने दें। लेखक कहता है -क यहाँ पर भगवान शव का चेहरा एक पूरी चट्टान पर बना ह्आ है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली ह्ईहैं। भारत में शव की यह सबसे बड़ी आधारमूर्ति है। लेखक -कहता है क यहाँ पूरे साल बहने वाला ए<mark>क झरना</mark> पहाड़ों से उतरता है जिसे गंगा जितना ही देवताओं की -प वत्र माना जाता है। यह पूरा इलाका ही प्रत्येक शब्द के अनुसार ही दे वयों मूर्तियों से भरा पड़ा है। यहाँ लेखक के कहने का अर्थ है क यहाँ हर कदम पर आपको कसी न कसी देवीदेवता की मूर्ति जरूर मल जाएगी। लेखक कहता है क उनाकोटी में बनी इन -मूर्तियों का निर्माण कसने कया है यह अभी तक पता नहीं कया जा सका हैं। -आधार स्थानीय आदिवा सयों का मानना है क इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। वह माता पार्वती का भक्त था और भगवान शवमाता पार्वती के साथ उनके निवास स्थान -कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। परन्तु भगवान शव उसे अपने साथ नहीं लेना चाहते थे। पार्वती के जोर देने पर शव कल्लू को कैलाश ले चलने को तैयार तो हो गए ले कन इसके लए उन्होंने कल्लू के सामने एक शर्त रखी और वह शर्त थी क उसे एक रात में शव की एक करोड़ मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू अपनी धुन का पक्का व्यक्ति था इस लए वह इस काम में ज्ट गया।

*-प्रश्नोत्तर:-

प्रश्न 1.'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ क यह स्थान इस नाम से क्यों प्र सद्ध है? उत्तर-उनाकोटी का अर्थ है-एक कोटी अर्थात् एक करोड़ से एक कम। इस स्थान पर भगवान शव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। इतनी अधक मूर्तियाँ एक ही स्थान पर होने के कारण यह स्थाने प्र सद्ध है। प्रश्न 2.पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में ल खए। उत्तर-उनाकोटी में पहाड़ों को अंदर से काटकर वशाल आधार मूर्तियाँ बनाई गई हैं। अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धंसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसके लए शव को राजी कया गया क वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और बाद में धीरे-धीरे बहने दें। शव का चेहरा एक समूची चट्टान पर बना हुआ है। उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली है। यहाँ पूरे साल बहने वाला जल प्रपात है, जिसे गंगा जल की तरह ही प वत्र माना जाता है।

प्रश्न 3.कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से कस प्रकार जुड़ गया?

प्रश्न 5.त्रिपुरा 'बह्धा र्मक समाज' का उदाहरण कैसे बना?

उत्तर-स्थानीय आदिवा सयों के अनुसार कल्लू कुम्हार ने ही उनाकोटी की शव मूर्तियों का निर्माण कया है। वह शव का भक्त था। वह उनके साथ कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। भगवान शव ने शर्त रखी क वह एक रात में एक करोड़ शव मूर्तियों का निर्माण करे। सुबह होने पर एक मूर्ति कम निकली। इस प्रकार शव ने उसे वहीं छोड़ दिया। इसी मान्यता के कारण कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से जुड़ गया।

प्रश्न 4.मेरी रीढ़ में एक झुरझरी-सी दौड़ गई'-लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है? उत्तर-लेखक राजमार्ग संख्या 44 पर टी लयामुरा से 83 कलोमीटर आगे मनु नामक स्थान पर शूटिंग के लए जा रहा था। इ यात्रा में वह सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में चल रहा था। लेखक और उसका कैमरा मैन ह थयार बंद गाड़ी में चल रहे। थे। लेखक अपने काम में इतना व्यस्त था क उसके मन में इर के लए जगह न थी। तभी एक सुरक्षा कर्मी ने निचली पहा इयों पर रखे दो पत्थरों की ओर ध्यान आकृष्ट करके कहा क दो दिन पहले उनका एक जवान बद्रोहियों द्वारा मार डाला गया था। यह सुनकर लेखक की रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई।

उत्तर-त्रिपुरा में व भन्न धर्मों को मानने वाले लोग बाहरी क्षेत्रों से आकर बस गए हैं। इस प्रकार यहाँ अनेक धर्मों का समावेश हो गया है। तब से यह राज्य बहुधा र्मक समाज का उदाहरण बन गया है। प्रश्न 6.टी लयामुरा कस्बे में लेखक का परिचय कन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

उत्तरटी लयामुरा कस्बे में लेखक का परिचय जिन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ उनमें एक हैं- हेमंत कुमार जमातिया, जो त्रिपुरा के प्र सद्ध लोक गायक हैं। जमातिया 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत कए जा चुके हैं। अपनी युवावस्था में वे पीपुल्स लबरेशन आर्गनाइजेशन के कार्यकर्ता थे, पर अब वे चुनाव लड़ने के बाद जिला परिषद के सदस्य बन गए हैं।लेखक की मुलाकात दूसरी प्रमुख हस्ती मंजु ऋ षदास से हुई, जो आकर्षक महिला थी। वे रे डयो कलाकार होने के साथसाथ नगर पंचायत की सदस्या भी थीं। लेखक ने उनके गाए दो गानों की शूटिंग की। गीत के तुरंत बाद मंजु ने एक कुशल गृहिणी के रूप में चाय बनाकर पलाई।

प्रश्न 7.कैलासशहर के जिला धकारी ने आलू की खेती के वषय में लेखक को क्या जानकारी दी? उत्तर-कैलासशहर के जिला धकारी ने लेखक को बताया क यहाँ बुआई के लए पारंपरिक आलू के

बीजों के बजाय टी.पी.एस. नामक अलग कस्म के आलू के बीज का प्रयोग कया जाता है। इस बीज से कम मात्रा में ज्यादा पैदावार ली जा सकती है। यहाँ के निवासी इस तकनीक से काफी लाभ कमाते हैं।

प्रश्न 8.त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के वषय में बताइए?

उत्तर-त्रिपुरा के लघु उद्योगों में मुख्यतः बाँस की पतली-पतली सीकें तैयार की जाती हैं। इनका प्रयोग अगरब तयाँ बनाने में कया जाता है। इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है ता क अगरब तयाँ तैयार की जा सकें। त्रिपुरा में बाँस बहुतायत मात्रा में पाया जाता है। इस बाँस से टोकरियाँ सजावटी वस्तुएँ आदि तैयार की जाती हैं।

*-प्रश्न लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.ध्विन कस तरह व्यक्ति को कसी दूसरे समय-संदर्भ में पहुँचा देती है? पाठ के आधार पर ल खए।

उत्तर-लेखक ने एक टीवी सीरियल 'ऑन द रोड' की शूटिंग के सल सले में त्रिपुरा गया था। वहाँ वह उनाकोटी में शूटिंग कर रहा था क अचानक बादल घिर आए। लेखक जब तक अपना सामान समेटता तब तक बादल जोर से गर्जन-तर्जन करने लगे और तांडव शुरू हो गया। तीन साल बाद लेखक ने जब ऐसा ही गर्जन-तर्जन दिल्ली में देखा सुना तो उसे उनाकोरी की याद आ गई। इस तरह ध्विन ने उसे दूसरे समय संदर्भ में पहुँचा दिया।

प्रश्न 2.लेखक की दिनचर्या कुछ लोगों से कस तरह भन्न है? उनाकोटी के आधार पर ल खए।

उत्तर-लेखक सूर्योदय के समय उठता है और अपनी चाय बनाता है। फर वह चाय और अखबार के
साथ अलसाई सुबह का आनंद लेता है जब क कुछ लोग चार बजे उठते हैं, पाँच बजे तक तैयार होकर
लोदी गार्डन पहुँच जाते हैं और मेम साहबों के साथ लंबी सैर के साथ निकल जाते हैं।

प्रश्न 3.लेखक ने अपनी शांतिपूर्ण जिंदगी में खलल पड़ने की बात लखी है। ऐसा कब और कैसे हुआ?

उत्तर-लेखक की नींद एक दिन तब खुली जब उसने तोप दगने और बम फटने जैसी कानफोड़ आवाज
सुनी। वास्तव में यह स्वर्ग में चलने वाला देवताओं का कोई खेल था, जिसकी झलक बिज लयों की

चमक और बादलों की गरज में सुनने को मली। इस तरह लेखक की शांतिपूर्ण जिंदगी में खलल पड़
गई।

प्रश्न 4.लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा कब की? इस यात्रा का उद्देश्य क्या था?

उत्तर-लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा दिसंबर 1999 में की। वह 'आन दि रोड' शीर्षक से बनने वाले टीवी धारावाहिक की शूटिंग के सल सले में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया। इस यात्रा का उद्देश्य था त्रिपुरा की पूरी यात्रा कराने वाले राजमार्ग 44 से यात्रा करना तथा त्रिपुरा की वकास संबंधी गित व धयों की जानकारी देना।

प्रश्न 5.त्रिपुरा में आदिवा सयों के मुख्य असंतोष की वजह पर प्रकाश डा लए। उत्तर-त्रिपुरा तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा है। शेष भारत के साथ इसका दुर्गम जुड़ाव उत्तर-पूर्वी सीमा से सटे मजोरम और असम के साथ बनता है। यहाँ बांग्लादेश के लोगों की जबरदस्त आवक है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का प्रवास यहाँ होता है। इस भारी आवक ने जनसंख्या संतुलन को स्थानीय आदिवा सयों के खलाफ ला खड़ा कया। यही त्रिपुरा में आदिवा सयों के असंतोष का मुख्य कारण है।

प्रश्न 6.लेखक ने त्रिपुरा में बौद्ध धर्म की क्या स्थिति देखी? कुल्लू कुम्हार की उनकोटी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक ने त्रिपुरा के बाहरी हिस्से पैचारथल में एक सुंदर बौद्ध-मंदिर देखा। पता चला क त्रिपुरा के उन्नीस कबीलों में से दो-चकमा और मुध महायानी बौद्ध हैं, जो त्रिपुरा में म्यांमार से चटगाँव के रास्ते आए थे। इस मंदिर की मुख्य बुद्ध प्रतिमा भी 1930 के दशक में रंगून से लाई गई थी। प्रश्न 7.लेखक ने त्रिपुरा के लोक संगीत का अनुभव कब और कैसे कया?

उत्तरित्रपुरा की राजधानी अगरतला में लेखक की मुलाकात यहाँ के प्र सद्ध लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया से हुई, जो कोकबारोक बोली में गाते हैं। लेखक ने उनसे एक गीत सुनाने का अनुरोध कया। उन्होंने धरती पर बहती नदियों और ताजगी और शांति का गीत सुनाया। इसके अलावा उन्होंने मंजु ऋ षदास से दो गीत सुने ही नहीं बल्कि उनकी शूटिंग भी की।

प्रश्न 8.त्रिपुरा में उनाकोटी की प्र सद् ध का कारण क्या है?

उत्तर-त्रिपुरा स्थिति उनाकोटी दस हजार वर्ग कलोमीटर से कुछ ज्यादा इलाके में फैला हुआ धा र्मक स्थल है। यह भारत का सबसे बड़ा तो नहीं, पर सबसे बड़े शैव स्थलों में एक है। संसार के इस हिस्से में स्थानीय आदिवासी धर्म फलत-फूलते रहे हैं।

प्रश्न 9.उनाकोटी में लेखक को शूटिंग का इंतज़ार क्यों करना पड़ा?

उत्तर-जिला धकारी द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा के साथ लेखक अपनी टीम सहित नौ बजे तक उनाकोटी पहुँच गया, परंतु यह स्थान खास ऊँचे पहाड़ों से घिरा है, इससे यहाँ सूरज की रोशनी दस बजे तक ही पहुँच पाती है। रोशनी के अभाव में शूटिंग करना संभव न था, इस लए लेखक को शूटिंग के लए इंतजार करना पड़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.लेखक को अपनी यात्रा में शूटिंग के लए क्या-क्या खतरे उठाने पड़े? इस तरह की परिस्थितियों का वकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? ऐसी परिस्थितियों को रोकने के लए कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर-लेखक को एक धारावाहिक की शूटिंग के लए त्रिपुरा जाना पड़ा। यहाँ बाहरी लोगों की भारी आवक के कारण स्थानीय लोगों में गहरा असंतोष है। इससे यह क्षेत्र हिंसा की चपेट में आ जाता है। इस हिंसाग्रस्त भाग में 83 कलोमीटर लंबी यात्रा में लेखक को सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में का फले के रूप में चलना पड़ा। मौत का भय उसे आशं कत बनाए हुए था। इस तरह की परिस्थितियों के कारण पर्यटन उद्योग बुरी तरह चरमरा जाता है। इसके अलावा अन्य उद्योग धंधों का वकास भी नहीं हो पाता है जिसका दुष्प्रभाव प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों को रोकने के

लए सरकार को असंतुष्ट लोगों के साथ मलकर बातचीत करनी चाहिए, उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनना चाहिए तथा उनके निवारण हेतु प्रयास कया जाना चाहिए।

प्रश्न 2.-'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के आधार पर गंगावतरण की कथा का उल्लेख कीजिए और बताइए क ऐसे स्थलों की यात्रा करते समय हमें कन-कन बातों का ध्यान रखना चाहिए? उत्तर-त्रिपुरा राज्य में स्थित उनाकोटी नामक स्थान पर गंगावतरण की संपूर्ण कथा को पत्थरों पर उकेरा गया है। यहाँ एक वशाल चट्टान पर भागीरथ को तपस्या करते दर्शाया गया है तो दूसरी चट्टान पर शव के चेहरे को बनाया गया है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। यह साल भर बहने वाला जल प्रपात है जिसका जल गंगा जितना ही प वत्र माना जाता है। ऐसे स्थलों की यात्रा करते समय हमें यह वशेष ध्यान रखना चाहिए क-हम वहाँ गंदगी न फैलाएँ।

अपनी ज़रूरी वस्तुएँ स्वयं ले जाएँ और लेकर वापस आएँ।

पेड़ों, चट्टानों या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं पर अपना नाम लखने का प्रयास न करें तथा न कोई प्रतीक चहन बनाएँ।

ऐसे स्थानों की प वत्रता का ध्यान रखें तथा पेड़-पौधों एवं अन्य वस्तुओं को नुकसान न पहुँचाएँ। प्रश्न 3.लेखक को ऐसा क्यों लगा क त्रिपुरा स्वच्छता के नाम पर उत्तर भारतीय गाँवों से अलग है? इससे आपको क्या प्रेरणा मलती है?

उत्तर-त्रिपुरा में लेखक की मुलाकात गायिका मंजु ऋ षदास से हुई। वे रे इयो कलाकार होने के साथ नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनि धत्व करती थी। वे अपने क्षेत्र की सबसे बड़ी आवश्यकता (स्वच्छ पेयजल) की पूरी जानकारी रखती थे। वे नगर पंचायत को इस बात के लए राजी कर चुकी थीं क उनके वार्ड में नल का पानी पहुँचाया जाए और ग लयों में ईंटें बिछाई जाएँ। मंजु ऋ षदास का संबंध मो चयों के समुदाय से था।इस समुदाय की बस्तियों को प्रायः म लन बस्ती के नाम से जाना जाता है, पर मंजु ने यहाँ शारीरिक और व्यक्तिगत स्वच्छता अ भयान चलाया जब क उत्तर भारतीय गाँवों में स्वच्छता के नाम पर एक नए कस्म की अछूत प्रथा अब भी चलन में दिखती है। इससे हमें भी अपने आसपास साफ़-सफ़ाई रखने की प्रेरणा मलती है।

ट्याक्रिण-संस्कृत के उपसर्ग-इन उपसर्गों को तत्सम उपसर्ग भी कहा जाता हैं। ये प्रायः तत्सम शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं|संस्कृत के उपसर्ग और उनसे बने शब्द |

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अति	बहुत अधिक, परे, अधिक	अतिवृष्टि, अतिशय, अतिक्रमण, अत्याचार, अतिरिक्त, अत्यंत
अधि	ऊँचा श्रेष्ठ	अधिवक्ता, अधिनायक, अधिगम, अधिकार, अधिकृत, अधिपति
अनु	पीछे, बाद में, गौण	अनुगमन, अनुसार, अनुशासन, अनुरोध, अनुभव, अनुकूल
अप	अनुचित, बुरा, दूर	अपमान, अपयश, अपशब्द, अपहरण, अपकीर्ति, अपव्यय
अभि	सामने, पास, चारों ओर	अभिमान, अभिशाप, अभिनय, अभिनव, अभिप्राय, अभियोग
		विशेषता बताने के लिए

अव	बुरा, हीन, उप	अवगुण, अवनति, अवसान, अवमूल्यन, अवशेष, अवरोध
आ	तक, समेत, पर्यंत	आजन्म, आजीवन, आमरण, आगमन, आवास, आरक्षण
उत्	श्रेष्ठ, ऊपर	उन्नति, उन्नयन, उत्थान, उद्घाटन, उन्नायक, उच्छवास
उप	निकट, समान, गौण	उपवन, उपसर्ग, उपवास, उपहास, उपग्रह, उपयोग
दुस्	कठिन, बुरा	दुस्साहस दुष्कर्म, दुष्कर, दुस्साध्य
दुर्	कठिन, बुरा	दुर्बल, दुर्दिन, दुर्जन, दुर्योग, दुर्विजय, दुर्भाग्य दुर्लभ
निस्	निर्, रहित, नहीं	निष्काम, निश्चल, निष्पाप, निर्मम, निरपराध, निराहार
नि	समूह, आदेश, समीपता	नियम, निबंध, निकेतन, निषेध
परा	उलटे, पीछे, विपरीत	पराजय, पराधीन, पराश्रयी, पराक्रम, पराकाष्ठा, पराभव
परि	चारों ओर, पूर्णत:, क्रम	परिधि, परिक्रम, पर्यावरण, परिवार, परिश्रम, परित्याग
प्र	आगे, सामने, उत्तम, सम्मान	प्रमाण, प्रचार, प्रहार, प्रहर, प्रसाद, प्रकांड, प्रवेश
प्रति	हर एक, विरुद्ध	प्रतिशत, प्रत्येक, प्रतिक्ल, प्रतिध्वनि, प्रत्याशा
वि	विशेष, विभिन्नता, अभाव	वियोग, विराम, विमल, विकार, विहार, विज्ञान, विशिष्ट, विशुद्ध
सम्	संयोग, अच्छा, सहित	संन्यास, संपर्क, संबंध, संचय, संयोग संचार, संग्राम सम्मुख
सु	अच्छी तरह, सुंदर	सुफल, सुकर्म, सुदिन, सुपुत्र, स्वागत, सुपात्र, सुशिक्षित, सुलभ

(ख)हिंदी के उपसर्ग-इन उपसर्गों का दूसरा नाम तद्भव उपसर्ग भी है। इनका प्रयोग हिंदी के शब्दों के साथ कया जाता है।

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अ	अभाव, रहित, हीन	अथाह, अछूत, अजान, असार, अनाथ
अन	निषेध, अभाव	अनजान, अनपढ्, अनभल, अनचाहा, अनमना, अनहोनी, अनगढ्
अध	आधा	अधपका, अधजला, अधमरा, अधिखला, अधकपारी, अधकचरा
औ	हीन, बुरा	औघट, औजार, औगुन
उन	एक कम	उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर
क/कु	बुरा	कपूत, कुलटा, कुकर्म, कुफल
चौ	चार	चौराहा, चौमासा, चौपाटी, चौतरफा, चौमुखी
दु	रहित, दो	दुबला, दुगुना, दुविधा, दुकूल
नि	रहित	निकम्मा, निडर, निहत्था, निदान
बिन	बिना	बिनबात, बिनखाए, बिनव्याहा, बिनकहे, बिनचाहे, बिन बुलाए

(घ)आगत या वदेशी उपसर्ग-इन उपसर्गों का प्रयोग वदेशी भाषा के शब्दों में होता है। उर्दू, अरबी, फारसी और अंग्रेज़ी भाषा के उपसर्ग <mark>इसी कोटि में</mark> आते है

बा	सहित	बाइज्जत, बाकायदा, बाअदब, बाअसर
बद	बुरा, खराब	बदिकस्मत, बदहवास, बदसूरत, बदचलन, बदनाम, बदनीयत
बर	ऊपर, बाहर	बरखास्त, बरदाश्त
बे	बिना	बेईमान, बेरहम, बेशरम बेवफा, बेराह, बेकायदा।
बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशर्त।
ला	बिना, रहित	लावारिस, लाइलाज लापरवाह, लापता, लाजवाब
सर	श्रेष्ठ, मुख्य	सरकार, सरपंच, सरताज, सरहद
हम	साथ	हमराज, हमराह, हमदम, हमदर्द
हर	प्रत्येक	हरदिन, हररोज, हरवक्त, हरहाल
उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
उपसर्ग अल	अर्थ निश्चित, इसलिए	उपसर्गयुक्त शब्द अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त
अल	निश्चित, इसलिए	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त
अल ऐन	निश्चित, इसलिए ठीक	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त ऐनवक्त, ऐनमौके
अल ऐन कम	निश्चित, इसलिए ठीक थोड़ा	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त ऐनवक्त, ऐनमौके कमतर, कमउम्र, कमअक्ल, कमज़ोर कमसिन
अल ऐन कम खुश	निश्चित, इसलिए ठीक थोड़ा प्रसन्न, अच्छा	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त ऐनवक्त, ऐनमौके कमतर, कमउम्र, कमअक्ल, कमज़ोर कमसिन खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी
अल ऐन कम खुश गैर	निश्चित, इसलिए ठीक थोड़ा प्रसन्न, अच्छा पराया, नहीं	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त ऐनवक्त, ऐनमौके कमतर, कमउम्र, कमअक्ल, कमजोर कमसिन खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी गैरहाजिर, गैरजरूरी, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैरमतलब
अल ऐन कम खुश गैर दर	निश्चित, इसलिए ठीक थोड़ा प्रसन्न, अच्छा पराया, नहीं में	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त ऐनवक्त, ऐनमौके कमतर, कमउम्र, कमअक्ल, कमज़ोर कमसिन खुशमिजाज, खुशिकस्मत, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी गैरहाजिर, गैरजरूरी, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैरमतलब दरअसल, दरिमयान, दरहकीकत

*-संवाद लेखन-

श्नः 1.आजकल महँगाई बढ़ती ही जा रही है। इससे परेशान दो महिलाओं की बातचीत को संवाद के रूप में ल खए।

उत्तर:

रचना - अलका बहन नमस्ते! कैसी हो?

अलका - नमस्ते रचना, मैं ठीक हूँ पर महँगाई ने दुखी कर दिया है।

रचना – ठीक कहती हो बहन, अब तो हर वस्तु के दाम आसमान छूने लगे हैं।

अलका – मेरे घर में तो नौकरी की बँधी-बधाई तनख्वाह आती है। इससे सारा बजट खराब हो गया है।

रचना - नौकरी क्या रोज़गार क्या, सभी परेशान हैं।

अलका – हद हो गई है कोई भी दाल एक सौ बीस रुपये कलो से नीचे नहीं है।

रचना - अब तो दाल-रोटी भी खाने को नहीं मलने वाली।

अलका – बहन कल अस्सी रुपये कलो तोरी और साठ रुपये कलो टमाटर खरीदकर लाई। आटा, चीनी, दाल, चावल मसाले दुध सभी में आग लगी है।

रचना - फल ही कौन से सस्ते हैं। सौ रुपये प्रति कलो से कम कोई भी फल नहीं हैं। अब तो लगता है क डाक टर जब लखेगा तभी फल खाने को मलेगा।

अलका – सरकार भी कुछ नहीं करती महँगाई कम करने के लए। वैसे जनता की भलाई के दावे करती है। जमाखोरों पर कार्यवाही भी नहीं करती है।

रचना – नेतागण व्यापारियों से चुनाव में मोटा चंदा लेते हैं फर सरकार बनाने पर कार्यवाही कैसे करे।

अलका – गरीबों को तो ऐसे ही पसना <mark>होगा।</mark> इनके बारे में कोई नहीं सोचता। प्रश्नः 2.

यमुना की दुर्दशा पर दो मत्रों की बातचीत को संवाद के रूप में ल खए। उत्तर:

अजय – नमस्कार भाई साहब, शायद आप दिल्ली के बाहर से आए हैं।

प्रताप – नमस्कार भाई, ठीक पहचाना तुमने, मैं हरियाणा से आया हूँ।

अजय – मैं भी अलवर से आया हूँ। <mark>तुम य</mark>हाँ कैसे?

प्रताप – दिल्ली आया था। सोचा सवे<mark>रे-सवेरे</mark> यमुना में स्नान कर लेता हूँ पर

अजय – कल मेरा यहाँ साक्षात्कार था और आज कुछ और काम था। मैं भी यहाँ स्नान के लए आया था।

प्रताप - इतनी गंदी नदी में कैसे नहाया जाए?

अजय – मैंने भी यम्ना का बड़ा नाम स्ना था, पर यहाँ ती उसका उल्टा निकला।

प्रताप - इसका पानी तो काला पड़ गया है।

अजय - फैक्ट्रियों और घरों का पानी लाने वाले कई नाले इसमें मल जाते हैं न।

प्रताप - देखो, वे सज्जन फूल मालाएँ और राख फेंककर प्ण्य कमा रहे हैं।

अजय – इनके जैसे लोग ही तो नदियों को गंदा करते हैं।

प्रताप - सरकार को नदियों की सफ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

अजय - केवल सरकार को दोष देने से कुछ नहीं होने वाला। हमें खुद सुधरना होगा।

प्रताप - ठीक कहते हो। यदि सभी ऐसा सोचें तब न।

अजय – यहाँ की शीतल हवा से मन प्रसन्न हो गया। अब चलते हैं। प्रताप – ठीक कहते हो। अब हमें चलना चाहिए।

प्रश्नः 3.

बढ़ती गरमी और कम होती वर्षा के बारे में दो मत्रों की बातचीत का संवाद-लेखन कीजिए। उत्तर:

र व - रमन, कैसे हो?

रमन - मत पूछ यार गरमी से बुरा हाल है।

र व - गरमी इस लए बढ़ गई है क्यों क वर्षा भी तो नहीं हो रही है।

रमन - 24 जुलाई भी बीतने को है पर बादलों का नामोनिशान भी नहीं है।

र व – मेरे दादा जी कह रहे थे, पहले इतनी गरमी नहीं पड़ती थी और तब वर्षा भी खूब हुआ करती थी।

रमन – ठीक कह रहे थे तुम्हारे दादा जी। तब धरती पर आबादी कम थी परंतु पेड़-पौधों की कमी न थी।

र व – वर्षा और पेड़ पौधों का क्या संबंध?

रमन – पेड़-पौधे वर्षा लाने में बहुत सहायक हैं। जहाँ अधक वन हैं वहाँ वर्षा भी खूब होती है। इससे गरमी अपने आप कम हो जाती है।

र व – फर तो हमें भी अपने आसपास खूब सारे पेड़-पौधे लगाने चाहिए। रमन – और हरे-भरे पेड़ों को कटने से बचाना भी चाहिए। र व – इस गरमी के बाद वर्षा ऋतु में खूब पौधे लगाएँगे। रमन – यही ठीक रहेगा।

पाठ-४-तुम कब जाओगे अति थ

लेखक शरद जोशी -जन्म – 1931

पाठ सार:

लेखक अपने घर में आए अति थ को अपने मन में संबो धत करते हुए कहता है क आज अति थ को लेखक के घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह प्रश्न बार-बार आ रहा है क 'तुम कब जाओगे, अति थ? लेखक अपने मन में अति थ को कहता है क वह जहाँ बैठे बिना संकोच के सगरेट का धुआँ उड़ा रहा है, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है।

लेखक कहता है क पछले दो दिनों से वह अति थ को कलैंडर दिखाकर तारीखें बदल रहा है। ऐसा लेखक ने इस लए कहा है क्यों क लेखक अति थ की सेवा करके थक गया है। पर चौथे दिन भी अति थ के जाने की कोई संभावना नहीं लग रही थी। लेखक अपने मन में अति थ को कहता है क अब तुम लौट जाओ, अति थ! तुम्हारे जाने के लए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम बिल्कुल सही वक्त है। क्या उसे उसकी मातृभू म नहीं प्कारती?

अर्थात क्या उसे उसके घर की याद नहीं आती। लेखक अपने मन में ही अति थ से कहता है क उस दिन जब वह आया था तो लेखक का हृदय ना जाने कसी अनजान डर के (कसी अन्जान डर से)धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं लेखक का बट्आ काँप गया।

उसके बावजूद एक प्यार से भीगी हुई मुस्कराहट के साथ लेखक ने अति थ को गले लगाया था और मेरी लेखक की पत्नी ने अति थ को सादर नमस्ते की थी।

अति थ को याद होगा क दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा उन्होंने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में लेखक को एक उम्मीद थी। यह उम्मीद थी क दूसरे दिन कसी रेल से एक शानदार अति थ सत्कार की छाप अपने हृदय में ले कर अति थ चला जायेगा। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी अति थ मुस्कान बनाए लेखक के घर में ही बने रहे।

लेखक अपने मन में ही अति थ से कहता है क उन्होंने अपने दुःख को पी लया और प्रसन्न बने रहे। लेखक ने फर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को अति थ को सनेमा दिखाया।

लेखक के सत्कार का यह आ खरी छोर था, जिससे आगे लेखक कभी कसी के लए नहीं बढे। इसके तुरंत बाद लेखक को अनुमान था क वदाई का वह प्रेम से ओत-प्रोत भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब अति थ वदा होता और लेखक उसे स्टेशन तक छोड़ने जाता। पर अति थ ने ऐसा नहीं कया। वह लेखक के घर पर ही रहा। लेखक अपने मन में ही अति थ से कहता है क तीसरे दिन की सुबह अति थ ने लेखक से कहा क वह धोबी को कपड़े देना चाहता है।

लेखक अति थ से कहता है क कपड़ों को कसी लॉण्ड्री में दे देते हैं इससे वे जल्दी धुल जाएंगे, लेखक के मन में एक वश्वास पल रहा था क शायद अति थ को अब जल्दी जाना है। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और अति थ अब भी लेखक के घर पर ही था। लेखक अपने मन ही अति थ से कहता है क उसके भारी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी हुई चादर बदली जा चुकी है परन्तु अभी भी अति थ यहीं है।

अति थ को देखकर फूट पड़नेवाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब कही गायब हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। परिवार, बच्चे, नौकरी, फल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक क आँख मार-मारकर लेखक और अति थ ने पुरानी प्रे मकाओं का भी जिक्र कर लया और अब एक चूप्पी है।

हृदय की सरलता अब धीरे-धीरे बोरियत में बदल गई है। पर अति थ जा नहीं रहा। लेखक के मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है-तुम कब जाओगे, अति थ? कल लेखक की पत्नी ने धीरे से लेखक से पूछा था, "कब तक टिकेंगे ये?" लेखक ने कंधे उचका कर कहा क वह क्या कह सकता है? लेखक की पत्नी ने अब गुस्से से कहा क वह अब खंचड़ी बनाएगी क्यों क वह खाने में हल्की रहेगी। लेखक ने भी हाँ कह दिया। लेखक अपने मन ही कहता है क अति थ के सत्कार करने की उसकी क्षमता अब समाप्त हो रही थी। इनर से चले थे, खचड़ी पर आ गए थे। अब भी अगर अति थ नहीं जाता तो हमें लेखक और उसकी पत्नी को उपवास तक जाना होगा। लेखक चाहता है क अति थ अब चला जाए।

लेखक अपने मन ही कहता है क लेखक जानता है क अति थ को लेखक के घर में अच्छा लग रहा है। दूसरों के यहाँ अच्छा ही लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। लेखक अपने मन ही अति थ से कहता है क अपने खर्राटों से एक और रात गुँजित करने के बाद कल जो करण अति थ के बिस्तर पर आएगी वह अति थ के लेखक के घर में आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परि चत करण होगी।

लेखक अति थ से उम्मीद करता है क सूर्य की करणें जब चूमेगी और अति थ घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लेगा । लेखक अपने मन ही अति थ से कहता है क लेखक जानता है क अति थ देवता होता है, पर आ खर लेखक भी मन्ष्य ही है।

लेखक कोई अति थ की तरह देवता नहीं है। लेखक कहता है क एक देवता और एक मनुष्य अधक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। लेखक अति थ को लौट जाने के लए कहता है और कहता है क इसी में अति थ का देवत्व सुर क्षत रहेगा। लेखक अंत में दुखी हो कर अति थ से कहता है उफ, त्म कब जाओगे, अति थ?

*निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.अति थ कतने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

उत्तर-अति थ चार दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है

प्रश्न 2.कैलेंडर की तारीखें कस तरह फड़फड़ा रही हैं?

उत्तर-कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही हैं। मानों वे भी अति थ को बता रही हों क तुम्हें यहाँ आए। दो-तीन दिन बीत चुके हैं।

प्रश्न 3.पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे कया?

उत्तर-पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक कया। पति ने स्नेह से भीगी मुसकान से उसे गले लगाया तथा पत्नी ने सादर नमस्ते की।

प्रश्न 4.दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

उत्तर-दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई।

प्रश्न 5.तीसरे दिन स्बह अति थ ने क्या कहा?

उत्तर-अति थ ने तीसरे दिन कहा क वह अप<mark>ने</mark> कपड़े धोबी को देना चाहता है।

प्रश्न 6.सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

उत्तर-सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक उच्च मध्यमवर्गीय डनर से खचड़ी पर आ गया। यदि इसके बाद भी अति थ नहीं गया तो उसे उपवास तक जाना पड़ सकता है।

*-निम्न ल खत कथनों की व्याख्या कीजिए-

1-अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।

1-बिना सूचना दिए अति थ को आया देख लेखक परेशान हो गया। वह सोचने लगा क अति थ की आवभगत में उसे अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा जो उसकी जेब के लए भारी पड़ने वाला है।

2-अति थ सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

2-अति थ देवता होता है पर अपना देवत्व बनाए रखकरे। यदि अति थ अगले दिन वापस नहीं जाता है और मेजबान के लए पीड़ा का कारण बनने लगता है तो मनुष्य न रहकर राक्षस नज़र आने लगता है। देवता कभी कसी के दुख का कारण नहीं बनते हैं।

3-लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े।

3-जब अति थ आकर समय से नहीं लौटते हैं तो मेजबान के परिवार में अशांति बढ़ने लगती है। उस परिवार का चैन खो जाता है। पारिवारिक समरसता कम होती जाती है और अति थ का का ठहरना ब्रा लगने लगता है।

4-मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

4-पहले दिन के बाद से ही लेखक को अति थ का रुकना भारी पड़ रहा था। दूसरा तीसरा दिन तो जैसे तैसे बीता पर अगले दिन वह सोचने लगा क यदि अति थ पाँचवें दिन रुका तो उसे गेट आउट कहना पड़ेगा।

5-एक देवता और एक मनुष्य अ धक देर साथ नहीं रहते।

5- देवता कुछ ही समय ठहरते हैं और दर्शन देकर चले जाते हैं। अति थ कुछ ही समय के लए देवता होते हैं, ज्यादा दिन ठहरने पर मनुष्य के लए वह भारी पड़ने लगता है तब कसी भी तरह अति थ को जाना ही पड़ता है।

निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर ल खए-

प्रश्न 1.कौन-सा आघात अप्रत्या शत था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा? उत्तर-तीसरे दिन मेहमान का यह कहना क वह धोबी से कपड़े धुलवाना चाहता है, एक अप्रत्या शत आघात था। यह फरमाइश एक ऐसी चोट के समान थी जिसकी लेखक ने आशा नहीं की थी। इस चोट का लेखक पर यह प्रभाव पड़ा क वह अति थ को रक्षिस की तरह मानने लगा। उसके मन में

अति थ के प्रति सम्मान की बजाय बोरियत, बो झलता और तिरस्कार की भावना आने लगी। वह चाहने लगा क यह अति थ इसी समय उसका घर छोड़कर चला जाए।

प्रश्न 2.'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना'-इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? वस्तार से ल खए।

उत्तर-संबंधों का संक्रमण दौर से गुजरने का आशय है-संबंधों में बदलाव आना। इस अवस्था में कोई वस्तु अपना मूल स्वरूप खो बैठती है और कोई दूसरा रूप ही अख्तियार कर लेती है। लेखक के घर आया अति थ जब तीन दिन से अधक समय रुक गया तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई। लेखक ने उससे अनेकानेक वषयों पर बातें करके वषय का ही अभाव बना लया था। इससे चुप्पी की स्थिति बन गई, जो बोरियत लगने लगी। इस प्रकार उत्साहजनक संबंध बदलकर अब बोरियत में बदलने लगे थे।

अन्य दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.लेखक के व्यवहार में आधुनिक सभ्यता की क मयाँ झलकने लगती हैं। इससे आप कतना सहमत हैं, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक पहले तो घर आए अति थ का गर्मजोशी से स्वागत करता है परंतु दूसरे ही दिन से उसके व्यवहार में बदलाव आने लगता है। यह बदलाव आधुनिक सभ्यता की क मयों का स्पष्ट लक्षण है। मैं इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ। लेखक जिस अति थ को देवतुल्य समझता है वही अति थ मनुष्य और कुछ अंशों में राक्षस-सा नजर आने लगता है। उसे अपनी सहनशीलता की समाप्ति दिखाई देने लगती है तथा अपना बजट खराब होने लगता है, जो आधुनिक सभ्यता की क मयों का स्पष्ट प्रमाण है।

प्रश्न 2.दूसरे दिन अति थ के न जाने पर लेखक और उसकी पत्नी का व्यवहार कस तरह बदलने लगता है?

उत्तर-लेखक के घर जब अति थ आता है तो लेखक मुसकराकर उसे गले लगाता है और उसका स्वागत करता है। उसकी पत्नी भी उसे सादर नमस्ते करती है। उसे भोजन के बजाय उच्च माध्यम स्तरीय डनर करवाते हैं। उससे तरह-तरह के वषयों पर बातें करते हुए उससे सौहार्द प्रकट करते हैं परंतु तीसरे दिन ही उसकी पत्नी खचड़ी बनाने की बात कहती है। लेखक भी बातों के वषय की समाप्ति देखकर बोरियत महसूस करने लगता है। अंत में उन्हें अति थ देवता कम मनुष्य और राक्षस-सा नज़र आने लगता है।

प्रश्न 3.अति थ रूपी देवता और लेखक रूपी मनुष्य को साथ-साथ रहने में क्या परेशानियाँ दिख रही थीं?

उत्तर-भारतीय संस्कृति में अति थ को देवता माना गया है जिसका स्वागत करना हर मनुष्य का कर्तव्य होता है। इस देवता और अति थ को साथ रहने में यह परेशानी है क देवता दर्शन देकर चले जाते हैं, परंतु आधुनिक अति थ रूपी देवता मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर में मनुष्य की परेशानी भूल जाते हैं। जिस मनुष्य की आ र्थक स्थिति अच्छी न हो उसके लए आधुनिक देवता का स्वागत करना और भी कठिन हो जाता है।

प्रश्न 4. 'तुम कब जाओगे, अति थ' पाठ की प्रासं गकता आधुनिक संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। उत्तर-'तुम कब जाओगे, अति थ' नामक पाठ में बिना पूर्व सूचना के आने वाले उस अति थ का वर्णन है जो मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर मेजबान की परेशानियों को नज़रअंदाज कर जाता है। अति थ देवता को नाराज़ न करने के चक्कर में मेजबान हर परेशानी को झेलने के लए ववश रहता है। वर्तमान समय और इस महँगाई के युग में जब मनुष्य अपनी ही ज़रूरतें पूरी करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा है और उसके पास समय और साधन की कमी है तब ऐसे अति थ का स्वागत सत्कार करना कठिन होता जा रहा है। अतः यह पाठ आधुनिक संदर्भों में पूरी तरह प्रासं गक है।

प्रश्न 5.लेखक को ऐसा क्यों लगने लगा क अति थ सदैवृ देवता ही नहीं होते?

उत्तर-लेखक ने देखा क उसके यहाँ आने वाले अति थ उसकी परेशानी को देखकर भी अनदेखा कर रहा है और उस पर बोझ बनता जा रहा है। चार दिन बीत जाने के बाद भी वह अभी जाना नहीं चाहता है जब क देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं। वे इतना दिन नहीं ठहरते। इसके अलावा वे मनुष्य को दुखी नहीं करते तथा उसकी हर परेशानी का ध्यान रखते हैं। अपने | घर आए अति थ का ऐसा व्यवहार देखकर लेखक को लगने लगता है क हर अति थ देवता नहीं होता है। प्रश्न -6.'अति थ देवो भवउक्ति की व्याख्या करें तथा आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन ' करें।

उत्तर-भारतीय संस्कृति में अति थ को देवता का दर्जा दिया गया है। उसे देवता के समान मानकर उसका आदर सत्कार कया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य मशीनी जीवन जी रहा है। उसके पास अपने परिवार के लए समय नहीं रह गया है तो अति थ के लए समय कैसे निकाले। इसके अलावा महँगाई के इस युग में जब अपनी जरूरतें पूरी करना कठिन हो रहा तो अति थ का सत्कार जेब काटने लगता है। ऐसे में मनुष्य को अति थ से दूर ही रहना चाहिए।

पाठ-४- मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

पाठ सार:

लेखक इस पाठ में अपने बारे में बात कर रहा है। लेखक साल 1989 ज्लाई की बात करता ह्आ कहता है क उस समय लेखक को तीनअटैक आए थे और -तीन जबरदस्त हार्ट-वो भी एक के बाद एक। उनमें से एक तो इतना खतरनाक था क उस समय लेखक की नब्ज बंद, साँस बंद और यहाँ तक क धड़कन भी बंद पड़ गई थी। उस समय डॉक्टरों ने यह घो षत कर दिया था क अब लेखक के प्राण नहीं रहे। लेखक कहता है क उन सभी डॉक्टरों में से एक डॉक्टर बोर्जेस थे जिन्होंने फर भी हिम्मत नहीं हारी थी। उन्होंने लेखक को नौ सौ वॉल्ट्स के शॉक्स)shocks) दिए। लेखक <mark>के प्राण</mark> तो लौटे, पर इस प्रयोग में लेखक का साठ प्रतिशत हार्ट सदा के लए नष्ट हो गया। अब लेखक का केवल चालीस प्रतिशत हार्ट ही बचा था जो काम कर रहा था। लेखक कहता है क उस चालीस प्रतिशत काम करने वाले हार्ट में भी तीन रुकावटें थी। जिस कारण लेखक का ओपेन हार्ट ऑपरेशन तो करना ही होगा पर सर्जन हिचक रहे हैं।सर्जन को इर था क अगर ऑपरेशन कर भी दिया तो हो सकता है क ऑपरेशन के बाद न हार्ट रिवाइव ही न हो। सभी ने तय कया क हार्ट के बारे में अच्छी जानकारी रखने वाले अन्य वशेषज्ञों की राय ले ली जाए, उनकी राय लेने के बाद ही ऑपरेशन की सोचेंगे। तब तक लेखक को घर जाकर बिना हिलेडुले आराम करने की सलाह दी गई। -लेखक ने जिद की क उसे बेडरूम में नहीं बल्कि उसके कताबों वाले कमरे में ही रखा जाए। जाए। लेखक की जिद मानते हुए लेखक को वहीं लेटा दिया गया। लेखक को लगता था क लेखक के प्राण कताबों के उस कमरे की हजारों कताबों में बसे हैं जो पछले चालीसपचास -धीरे लेखक के पास जमा होती गई थी। ये इतनी सारी कतावें लेखक के पास -साल में धीरे कैसे जमा हुईं, उन कताबों को इकठ्ठा करने की शुरुआत कैसे हुई, इन सब की कथा लेखक हमें बाद में सुनाना चाहता है। पह<mark>ले</mark> तो लेखक हमें यह <mark>बताना जरूरी समझता है</mark> क लेखक को कताबें पढ़ने और उन्हें सम्भाल कर रखने का शौक कैसे जागा। लेखक बताता है क यह सब लेखक के बचपन से शुरू ह्आ था। लेखक अपने बचपन के बारे में बताता ह्आ कहता है क उसके पता की अच्छीखासी सरकारी नौकरी थी। जब बर्मा रोड बन रही- थी तब लेखक के पता ने बह्त सारा धन कमाया था। ले कन लेखक के जन्म के पहले ही गांधी जी के द्वारा

ब्लाए जाने पर लेखक के पता ने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। सरकारी नौकरी छोड़ देने के कारण वे लोग रूपएपैसे संबड़े बंधी कष्टों से गुजर रहे थे-, इसके बावजूद भी लेखक के घर में पहले की ही तरह हरआर्य मत्र 'पत्रिकाओं में-पत्रिकाएँ आती रहती थीं। इन पत्र-रोज पत्र-'साप्ताहिक, 'वेदोदम', 'सरस्वती', 'गृहिणीथी और दो बाल पत्रिकाएँ खास तौर पर लेखक के ' '- लए आती थी। जिनका नाम थाबालसखा। लेखक के घर में बह्त सी पुस्तकें 'चमचम' और ' भी थीं। लेखक की प्रय पुस्तक थी स्वामी दयानंद की एक जीवनी, जो बह्त ही मनोरंजक शैली में लखी ह्ई थी, अनेक चत्रों से सज्जी ह्ई। लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर दिया करती थी। लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर इस लए देती थी क्यों क लेखक की माँ को यह चंतित लगी रहतीं थी क उनका लड़का हमेशा पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ता रहता है, कक्षा की कताबें कभी नहीं पढ़ता। कक्षा की कताबें नहीं पढ़ेगा तो कक्षा में पास कैसे होगालेखक स्वामी <mark>दयानन्द</mark> की जीवनी पढ़ा करता था जिस कारण ! लेखक की माँ को यह भी डर था क लेख<mark>क क</mark>हीं खुद साधु बनकर घर से भाग न जाए। लेखक कहता है क जिस दिन लेखक को स्कूल में भरती कया गया उस दिन शाम को लेखक के पता लेखक की उँगली पकड़कर लेखक को घुमाने ले गए। लोकनाथ की एक दुकान पर लेखक को ताजा अनार का शरबत मट्टी के बर्तन में पलाया और लेखक के सर पर हाथ रखकर बोले क लेखक उनसे वायदा करे क लेखक अपने पाठ्यक्रम की कताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ेगा जितने ध्यान से लेखक पत्रिकाओं को पढ़ता है और लेखक अपनी माँ की चंता को भी मटाएगा। लेखक कहता है क यह उसके पता का आशीर्वाद था या लेखक की कठिन मेहनत क तीसरी और चौथी कक्षा में लेखक के अच्छे नंबर आए और पाँचवीं कक्षा में तो लेखक प्रथम आया। लेखक की मेहनत को देखकर लेखक की माँ ने आँसू भरकर लेखक को गले लगा लया था, परन्तु लेखक के पता केवल मुसकुराते रहे, कुछ बोले नहीं। क्यों क लेखक को अंग्रेजी में सबसे ज्यादा नंबर मले थे, अतः इस लए लेखक को स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी कताबें मली थीं। उनमें से एक कताब में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और घने पेड़ों के बीच में भटकते हैं और इस बहाने उन बच्चों को प क्षयों की जातियों, उनकी बो लयों, उनकी आदतों की जानकारी मलती है। दूसरी कताब थी जिसमें पानी 'ट्रस्टी द रग' के जहाजों की कथाएँ थीं। उसमें बताया गया था क जहाज कतने प्रकार के होते हैं, कौन-सा माल लादकर लाते हैं-कौन, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, वाले जहाजों पर रहने ना वकों की जिंदगी कैसी होती है, उन्हें कैसेकैसे द्वीप मलते हैं-, समुद्र में कहाँ हवेल मछली होती है

और कहाँ शार्क होती है।लेखक कहता है क स्कूल से इनाम में मली उन अंग्रेजी की दो कताबों ने लेखक के लए एक नयी द्निया का द्वार लए खोल दिया था। लेखक के पास अब उस दुनिया में प क्षयों से भरा आकाश था और रहस्यों से भरा समुद्र था। लेखक कहता है क लेखक के पता ने उनकी अलमारी के एक खाने से अपनी चीजें हटाकर जगह बनाई थी और लेखक की वे दोनों कताबें उस खाने में रखकर उन्होंने लेखक से कहा था क आज से यह खाना तुम्हारी अपनी कताबों का है। अब यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है। लेखक कहता है क यहीं से लेखक की लाइब्रेरी शुरू ह्ई थी जो आज बढ़तेबढ़ते एक बह्त बड़े कमरे में बदल गई -थी। लेखक बच्चे से कशोर अवस्था में आया, स्कूल से काॅलेज, काॅलेज से युनिव र्सटी गया, डाॅक्टरेट हा सल की, यूनिव र्सटी में बच्चों को पढ़ाने का काम कया, पढ़ाना छोड़कर इलाहाबाद से बंबई आया, लेखों को अच्छी तरह से पू<mark>रा</mark> कर<mark>ने</mark> का काम कया। और उसी अनुपात में अर्थात दोदो करके अपनी लाइब्रेरी का वस्<mark>तार कर</mark>ता गया। अपनी लाइब्रेरी को बढ़ाता चला -गया। लेखक अपनी बचपन की बातों को बताता हुआ कहता है क हम लोग लेखक से यह पर्छ सकते हैं क लेखक को कताबें पढ़ने का शौक तो था यह मान लेते हैं पर कताबें इकट्ठी करने का पागलपन क्यों सवार ह्आ? इसका कारण भी लेखक अपने बचपन के एक अन्भव को बताता है। लेखक बताता है क इलाहाबाद भारत के प्र सद्ध शक्षाकेंद्रों में एक -रहा है। इलाहाबाद में ईस्ट इं डया <mark>द्वारा स्था पत की गई</mark> पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्था पत भारती भवन तक है। इलाहाबाद में वश्व वद्यालय की लाइब्रेरी तथा अनेक काॅलेजों की लाइब्रेरियाँ तो हैं ही, इसके साथ ही इलाहाबाद के लगभग हर म्हल्ले में एक अलग लाइब्रेरी है। इलाहाबाद में हाईकोर्ट है, अतः वकीलों की अपनी अलग से लाइब्रेरियाँ हैं, अध्यापकों की अपनी अलग से लाइब्रेरियाँ हैं। उन सभी लाइब्रेरियों को देख कर लेखक भी सोचा करता था क क्या उसकी भी कभी वैसी लाइब्रेरी होगी?, यह सब लेखक सपने में भी नहीं सोच सकता था, पर लेखक के मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी जिस्म नाम 'हिर भवन' था। लेखक की जैसे ही स्कूल से छुटी होती थी क लेखक लाइब्रेरी में चला जाता था। में खूब सारे उपन्यास थे। जैसे ही लाइब्रेरी खुलती थी 'हरि भवन' से-मुहल्ले के उस छोटे लेखक लाइब्रेरी पहुँच जाता था और जब शुक्ल जी जो उस लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन थे वे लेखक से कहते क बच्चा, अब उठो, पुस्तकालय बंद करना है, तब लेखक बिना इच्छा के ही वहां से उठता था। लेखक के पता की मृत्यु के बाद तो लेखक के परिवार पर रुपयेपैसे से संबंधत -इतना अधक संकट बढ़ गया था क लेखक को फीस जुटाना तक मुश्किल हो गया था।

अपने शौक की कताबें खरीदना तो लेखक के लए उस समय संभव ही नहीं था। एक ट्रस्ट की ओर से बेसहारा छात्रों को पाठ्यपुस्तकें खरीदने के लए सत्र के आरंभ में कुछ रुपये मलते थे। लेखक उन से केवल प्रमुख पाठ्यपुस्तकें खरीदता था 'हैंड-सेकंड', बाकी अपने सहपाठियों से लेकर पढ़ता और नोटिस बना लेता था। लेखक कहता है क रुपयेपैसे की इतनी तंगी होने -के बाद भी लेखक ने अपने जीवन की पहली साहित्यिक प्स्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक लेखक को याद है। लेखक अपनी याद को हमें बताता ह्आ कहता है क उस साल लेखक ने अपनी माध्य मक की परीक्षा को पास कया था। लेखक प्रानी पाठ्यप्स्तकें बेचकर बीहैंड बुकशाॅप पर गया। इस बार न जाने कैसे सारी -की पाठ्यपुस्तकें लेने एक सेकंड .ए. पाठ्यप्स्तकें खरीदकर भी दो रुपये बच गए थे। लेखक ने देखा की सामने के सनेमाघर में लगा था 'देवदास'। न्यू थएटर्स वाला। उन दिनों उसकी बह्त चर्चा थी। ले कन लेखक की माँ को सनेमा देखना बिलक्ल पसंद नहीं था। लेखक की माँ को लगता था क सनेमा देखने से ही बच्चे बिगड़ते हैं। लेखक ने माँ को बताया क कताबें बेचकर दो रुपये लेखक के पास बचे हैं। वे दो रुपये लेकर माँ की सहमति से लेखक <mark>फ़ल्म देखने गया</mark>। लेखक बताता है क पहला शों छूटने में अभी देर थी, पास में लेखक की परि चत कताब की दुकान थी। लेखक वहीं उस द्कान के आसपास चक्कर लगाने लगा। अचानक लेखक ने देखा क काउंटर पर एक प्स्तक -'-रखी हैदेवदास। जिसके लेखक शरत्चंद्र चट्ट'ोपाध्याय हैं। उस कताब का मूल्य केवल एक रुपया था। लेखक ने पुस्तक उठाकर उलटी वक्रेता को पहचानते हुए बोला -पलटी। तो पुस्तक-क लेखक तो एक वद्यार्थी है। लेखक उसी दुकान पर अपनी पुरानी कताबें बेचता है। लेखक उसका पुराना ग्राहक है। वह दुकानदार लेखक से बोले क वह लेखक से कोई कमीशन नहीं लेगा। वह केवल दस आने में वह कताब लेखक को दे देगा। यह सुनकर लेखक का मन भी पलट गया। लेखक ने सोचा क कौन डेढ़ रुपये में पक्चर देख कर डेढ़ रुपये खराब करेगा? लेखक ने दस आने में जल्दी घर लौट आया- कताब खरीदी और जल्दी 'देवदास', और जब लेखक ने वह कताब अपनी माँ को दिखाई तो लेखक की माँ के आँखों में आँसू आ गए। लेखक नहीं जानता क वह आँसू <mark>ख</mark>ुशी के थे या दुख के थे। लेखक यहाँ बताता है क वह लेखक के अपने पैसों से खरीदी लेखक की अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली कताब थी। लेखक कहता है क जब लेखक का ऑपरेशन सफल हो गया था तब मराठी के एक बड़े क व वंदा करंदीकर लेखक से उस दिन मलने आये थे। उन्होंने लेखक से कहा था क भारती, ये सैकड़ों महापुरुष जो पुस्तकरूप में तुम्हारे चारों ओर उपस्थित हैं-, इन्हीं के आशीर्वाद से तुम बचे

हो। इन्होंने तुम्हें दोबारा जीवन दिया है। लेखक ने मन वंदा -मन सभी को प्रणाम कया-ही-को भी, इन महापुरुषों को भी। यहाँ लेखक भी मानता था क उसके द्वारा इकठ्ठी की गई पुस्तकों में उसकी जान बसती है जैसे तोते में राजा के प्राण बसते थे।

-प्रश्नोत्तर-लघु-*

प्रश्न 1.लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे? उत्तर-लेखक को तीन-तीन हार्ट अटैक हुए थे। बिजली के झटकों से प्राण तो लौटे, मगर दिल को साठ प्रतिशत भाग नष्ट हो गया। बाकी बचे चालीस प्रतिशत में भी रुकावटें थीं। सर्जन इस लए हिचक रहे थे क चालीस प्रतिशत हृदय ऑपरेशन के बाद हरकत में न आया तो लेखक की जान भी जा सकती थी।

प्रश्न 2.' कताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?

उत्तर- कताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में यह भावना थी क जिस प्रकार परी

कथाओं के अनुसार राजा के प्राण उसके शरीर में नहीं बल्कि तोते में रहते हैं, वैसे ही उसके (लेखक)

निकले प्राण अब इन हज़ारों कताबों में बसे हैं, जिन्हें उसने जमा कया है|

प्रश्न 3.लेखक के घर कौन-कौन-सी पित्रकाएँ आती थीं?

उत्तर-लेखक के घर वेदोदम, सरस्वती, गृहिणी, बालसखा और चमचम आदि पित्रकाएँ आती थीं।

प्रश्न 4.लेखक को कताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?

उत्तर-लेखक के घर में पहले से ही बहुत-सी पुस्तकें थीं। दयानंद की एक जीवनी, बालसखा और 'चमचम' पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते उसे पढ़ने का शौक लगा। पाँचवीं कक्षा में प्रथम आने पर पुरस्कार स्वरूप मली दो पुस्तकों को पताजी की प्रेरणा से उसे सहेजने का शौक लग गया।

उत्तर-माँ लेखक की स्कूली पढाई को लेकर इस लए चंतित रहती थी, क्यों क लेखक हर समय कहानियों की पुस्तकें ही पढ़ता रहता था। माँ सोचती थी क लेखक पाठ्यपुस्तकों को भी इसी तरह रु च लेकर पढेगा या नहीं।

प्रश्न 5.माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चंतित रहती थी?

प्रश्न 6.स्कूल से ईनाम में मली अंग्रेजी की पुस्तकों ने कस प्रकार लेखक के लए नई दुनिया के द्वार खोल दिए?

उत्तर-पाँचवी कक्षा में फर्स्ट आने पर लेखक को दो पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप मली। उनमें से एक में व भन्न प क्षयों की जातियों, उनकी बो लयों, उनकी आदतों की जानकारी थी। दूसरी कताब 'टस्टी दे रग' में पानी के जहाजों, ना वकों की जिंदगी, व भन्न प्रकार के द्वीप, वेल और शार्क के बारे में थी। इस प्रकार इन पुस्तकों ने लेखक के लए नई दुनिया का द्वार खोल दिया।

प्रश्न 7.'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी कताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है'- पता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मली? उत्तर-पता के इस कथन से लेखक के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। लेखक को पुस्तक सहेजकर रखने तथा पुस्तक संकलन करने की प्रेरणा मली।

प्रश्न 8.लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। उत्तर-लेखक पुरानी पुस्तकें खरीदकर पढ़ता और उन्हें बेचकर अगली कक्षा की पुरानी पुस्तकें खरीदता। ऐसे ही एक बार उसके पास दो रुपए बच गए। माँ की आज्ञा से वह देवदास फ़ल्म देखने गया। शो छूटने में देर होने के कारण वह पुस्तकों की दुकान पर चला गया। वहाँ देवदास पुस्तक देखी। उसने डेढ़ रुपए में फ़ल्म देखने के बजाए दस आने में पुस्तक खरीदकर बचे पैसे माँ को दे दिए। इस प्रकार लेखक ने पुस्तकालय हेतु पहली पुस्तक खरीदी।

प्रश्न 9. 'इन कृतियों के बीच अपने को कतना भरा-भरा महसूस करता हूँ'-को आशय स्पष्ट कीजिए। उत्तर-लेखक के पुस्तकालय में अनेक भाषाओं के अनेक लेखकों, क वयों की पुस्तकें हैं। इनमें उपन्यास, नाटक, कथा । संकलन, जीवनियाँ, संस्मरण, इतिहास, कला, पुसतात्विक, राजनीतिक आदि अन गनत पुस्तकें हैं। वह देशी- वदेशी लेखकों, चंतकों की पुस्तकों के बीच स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता। वह स्वयं को भरा-भरा महसूस करता है।

*-निम्न ल खत प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए –

प्रश्न 1 - लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?

उत्तर - लेखक को तीन-तीन ज़बरदस्त हार्ट-अटैक आए थे और वो भी एक के बाद एक। उनमें से एक तो इतना खतरनाक था क उस समय लेखक की नब्ज बंद, साँस बंद और यहाँ तक क धड़कन भी बंद पड़ गई थी। उस समय डॉक्टरों ने यह घो षत कर दिया था क अब लेखक के प्राण नहीं रहे। उन सभी डॉक्टरों में से एक डॉक्टर बोर्जेस थे जिन्होंने फर भी हिम्मत नहीं हारी थी। उन्होंने लेखक को नौ सौ वॉल्ट्स के शॉक्स दिए। यह एक बहुत ही भयानक प्रयोग था। उनका प्रयोग सफल रहा। लेखक के प्राण तो लौटे, पर इस प्रयोग में लेखक का साठ प्रतिशत हार्ट सदा के लए नष्ट हो गया। अब लेखक का केवल चालीस प्रतिशत हार्ट ही बचा था जो काम कर रहा था। उस चालीस प्रतिशत काम करने वाले हार्ट में भी तीन रुकावटें थी। जिस कारण लेखक का ओपेन हार्ट ऑपरेशन तो करना ही होगा पर सर्जन हिचक रहे हैं। क्यों क लेखक का केवल चालीस प्रतिशत हार्ट ही काम कर रहा था। सर्जन को डर था क अगर ऑपरेशन कर भी दिया तो हो सकता है क ऑपरेशन के बाद न हार्ट रिवाइव ही न हो।

प्रश्न 2 - 'कताबों वाले कमरे' में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?

उत्तर - लेखक ने बहुत-सी कताबें ज<mark>मा</mark> कर रखी थीं। कताबें बचपन से लेखक की सुख-दुख की साथी थीं। दुख के समय म

प्रश्न 3 - लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?

उत्तर - लेखक के घर में हर-रोज पत्र-पत्रिकाएँ आती रहती थीं। इन पत्र-पत्रिकाओं में 'आर्य मत्र साप्ताहिक', 'वेदोदम', 'सरस्वती', 'गृहिणी' थी और दो बाल पत्रिकाएँ खास तौर पर लेखक के लए आती थी। जिनका नाम था-'बालसखा' और 'चमचम'। प्रश्न 4 - लेखक को कताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?

उत्तर - लेखक के पता नियमत रुप से पत्र-पित्रकाएँ मँगाते थे। लेखक के लए खासतौर पर दो बाल पित्रकाएँ 'बालसखा' और 'चमचम' आती थीं। इनमें राजकुमारों, दानवों, पिरयों आदि की कहानियाँ और रेखा- चत्र होते थे। इससे लेखक को पित्रकाएँ पढ़ने का शौक लग गया। जब वह पाँचवीं कक्षा में प्रथम आया, तो उसे इनाम स्वरूप दो अंग्रेज़ी की पुस्तकं प्राप्त हुईं। लेखक के पता ने उनकी अलमारी के एक खाने से अपनी चीजें हटाकर जगह बनाई थी और लेखक की वे दोनों कताबें उस खाने में रखकर उन्होंने लेखक से कहा था क आज से यह खाना तुम्हारी अपनी कताबों का है। अब यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है। लेखक कहता है क यहीं से लेखक की लाइब्रेरी शुरू हुई थी जो आज बढ़ते-बढ़ते एक बहुत बड़े कमरे में बदल गई थी। पताजी ने उन कताबों को सहेजकर रखने की प्रेरणा दी। यहाँ से लेखक का निजी पुस्तकालय बनना आरंभ हुआ।

प्रश्न 5 - माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चंतित रहती थी?

उत्तर - लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर दिया करती थी। लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर इस लए देती थी क्यों क लेखक की माँ को यह चंतित लगी रहतीं थी क उनका लड़का हमेशा पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ता रहता है, कक्षा की कताबें कभी नहीं पढ़ता। कक्षा की कताबें नहीं पढ़ेगा तो कक्षा में पास कैसे होगा! लेखक स्वामी दयानन्द की जीवनी पढ़ा करता था जिस कारण लेखक की माँ को यह भी डर था क लेखक कहीं खुद साधु बनकर घर से भाग न जाए। प्रश्न 6 - स्कूल से इनाम में मली अंग्रेज़ी की दोनों पुस्तकों ने कस प्रकार लेखक के लए नयी दुनिया के द्वार खोल दिए?

उत्तर - लेखक पाँचवीं कक्षा में प्रथम आया था। उसे स्कूल से इनाम में दो अंग्रेज़ी की कताबें मली थीं। दोनों ज्ञानवर्धक पुस्तकें थीं। उनमें से एक कताब में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और घने पेड़ों के बीच में भटकते हैं और इस बहाने उन बच्चों को पक्षयों की जातियों, उनकी बो लयों, उनकी आदतों की जानकारी मलती है। दूसरी कताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं। उसमें बताया गया था क जहाज कतने प्रकार के होते हैं, कौन-कौन-सा माल लादकर लाते हैं, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, वाले जहाजों पर रहने ना वकों की जिंदगी कैसी होती है, उन्हें कैसे-कैसे द्वीप मलते हैं, समुद्र में कहाँ हवेल मछली होती है और कहाँ शार्क होती है। इन अंग्रेजी की दो कताबों ने लेखक के लए एक नयी दुनिया का द्वार लए खोल दिया था। लेखक के पास अब उस द्निया में पक्षयों से भरा आकाश था और रहस्यों से भरा समुद्र था।

प्रश्न 7 - 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी कताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है' - पता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मली?

उत्तर - पताजी के इस कथन ने लेखक को पुस्तकें जमा करने की प्रेरणा दी तथा कताबों के प्रति उसका लगाव बढ़ाया। अभी तक लेखक मनोरंजन के लए कताबें पढ़ता था परन्तु पताजी के इस कथन ने उसके ज्ञान प्राप्ति के मार्ग को बढ़ावा दिया। आगे चलकर उसने अन गनत प्स्तकें जमा करके अपना स्वयं का प्स्तकालय बना डाला। अब उसके पास ज्ञान का अत्लनीय भंडार था। प्रश्न ८ - लेखक द्वारा पहली प्रन्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। उत्तर - लेखक आ र्थक तंगी के कारण प्रानी कताबें बेचकर नई कताबें लेकर पड़ता था। इंटरमी डएट पास करने पर जब उसने पुरानी कताबें बेचकर बी.ए. की सैकंड-हैंड बुकशॉप से कताबें खरीदीं, तो उसके पास दो रुपये बच गए। उन दिनों देवदास फल्म लगी हुई थी। उसे देखने का लेखक का बहुत मन था। माँ को फल्में देखना पसंद नहीं था। अतः लेखक वह फल्म देखने नहीं गया। लेखक इस फल्म के गाने को अकसर गुनगुनाता रहता था। एक दिन माँ ने लेखक को वह गाना गुनगुनाते सुना। प्त्र की पीड़ा ने उन्हें व्याक्ल कर दिया। माँ बेटे की इच्छा भाँप गई और उन्होंने लेखक को 'देवदास' फल्म देखने की अनुमित दे दी। माँ की अनुमित मलने पर लेखक फल्म देखने चल पड़ा। पहला शो छूटने में अभी देर थी, पास में लेखक की परि चत कताब की द्कान थी। लेखक वहीं उस द्कान के आस-पास चक्कर लगाने लगा। अचानक लेख<mark>क ने देखा</mark> क काउंटर पर एक पुस्तक रखी है-'देवदास'। जिसके लेखक शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय हैं। उस कताब का मूल्य केवल एक रुपया था। लेखक ने प्स्तक उठाकर उलटी-पलटी। तो पुस्तक- वक्रेता को पहचानते हुए बोला क लेखक तो एक वद्यार्थी है। लेखक उसी दुकान पर अपनी प्रानी कताबें बेचता है। लेखक उसका प्राना ग्राहक है। वह दुकानदार लेखक से बोले क वह लेखक से कोई कमीशन नहीं लेगा। वह केवल दस आने में वह कताब लेखक को दे देदा। यह स्नकर लेखक का मन भी पलट गया। लेखक ने सोचा क कौन डेढ़ रुपये में पक्चर देख कर डेढ़ रुपये खराब करेगा? लेखक ने दस आने में 'देवदास' कताब खरीदी और जल्दी-जल्दी घर लौट आया। वह लेखक के अपने पैसों से खरीदी लेखक की अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली कताब थी। इस प्रकार लेखक ने अपनी पहली प्रस्तक खरीदी।

प्रश्न 9 - 'इन कृतियों के बीच अपने को क<mark>तना भरा-भरा म</mark>हसूस करता हूँ' – का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर दुख की साथी थीं। कई बार दुख के क्षणों में इन-कताबें लेखक के सुख - कताबों ने लेखक का साथ दिया था। वे लेखक की ऐसी मत्र थीं, जिन्हें देखकर लेखक को हिम्मत मला करती थीं। कताबों से लेखक का आत्मीय संबंध था। बीमारी के दिनों में जब डॉक्टर ने लेखक को बिना हिलेडुले बिस्तर - पर लेटे रहने की हिदायत दीं, तो लेखक ने इनके मध्य रहने का निर्णय कया। इनके मध्य वह स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता था। ऐसा लगता था मानो उसके हज़ारों प्राण इन पुस्तकों में समा गए हैं। ये सब उसे अकेलेपन का अहसास ही नहीं होने देते थे। उसे इनके मध्य असीम संतुष्टि मलती थी। भराभरा होने से लेखक का तात्पर्य पुस्तकें- के साथ से है, जो उसे अकेला नहीं होने देती थीं। लेखक को ऐसा महसूस होता था जैसे उसके प्राण भी इन पुस्तकों में ऐसे बसे हैं जैसे राजा के प्राण तोते में बसे थे।

व्याकरण-

जब हम अपने मनभावों को कसी के सामने प्रकट करते हैं तो अपनी बातों को समझाने या कसी कथन पर बल देने के लए बीचबीच में रुकते हैं। ल खत भाषा में भाव स्पष्ट करने या कथन पर बल देने के लए कुछ निश्चित चहनों का प्रयोग कया जाता है। इन चहनों को वराम चहन कहते हैं-।

वराम- चहन के प्रकार -

हिंदी भाषा में मुख्य रूप से निम्नां कत वराम- चहनों का प्रयोग कया जाता है -

वराम- चहन का नाम और चहन

- 1. पूर्ण वराम (Full stop) I
- 2. अर्ध वराम (Semi-colon) ;
- 3. अल्प वराम (Comma),
- 4. प्रश्नवाचक चहन (Question mark)?
- 5. वस्मयवाचक चहन (Exclamation mark)!
- 6. योजक या वभाजक (Hyphen) -
- 7. निर्देशक (Dash) –
- 8. उद्धरण चहन (Inverted comma) ' ', " "
- 9. ववरण चहन (Sign of following) :-
- 10. कोष्ठक (Bracket) ()
- 11. हंस पद (Sign of leftout),
- 12. लाघव चहन (Sign of abbreviation) •
- 1. पूर्ण वराम (I) इस चहन का प्रयोग प्रश्नवाचक और वस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर प्रायः सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में कया जाता है; जैसे
 - अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।
 - माली पौधों की देखभाल करता है।
 - हमें अपने आस-पास हरा-भरा बनाए रखना चाहिए।
 - कभी-कभी अप्रत्यक्ष प्रश्न के अंत में भी पूर्ण वराम लगाया जाता है; जैसे -
 - अच्छा अब बताओ क तुम्हें क्या चाहिए।

- कुछ देर पहले यहाँ कौन आया था।
- 2. अर्ध वराम (;)- जब पूर्ण वराम से कम समय के लए रुकते हैं, तब इस चहन का प्रयोग कया जाता है; जैसे
 - वह घर आया; थोड़ी देर बाद चला गया।
 - जो यहाँ फूल-माला चढ़ाते हैं; उनकी मनोकामना पूर्ण होती है।
 - तुम्हारी इन बातों पर कोई वश्वास नहीं करेगा; क्यों क ये झूठी हैं।
 - यहाँ कई भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं; जैसे-अंग्रेज़ी, त मल, मलयालम आदि।
- 3. अल्प वराम (,) वाक्य के मध्य में अर्ध वराम से भी कम समय तक रुकने के लए कया जाता है; जैसे
 - राम, मोहन, श्याम और उदय यहाँ आएँगे।
 - हाँ, मैं यह चत्र बना लूँगा।
 - नहीं, तुम अभी अंदर नहीं आ सकते हो।
 - सरकार बदल जाने से, मैं समझता हूँ, कुछ बदलाव होगा।
 - म. शर्मा एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी. हैं।
 - सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"
 - चलो, चलो जल्दी चलो, ट्रेन आ गई है।
 - हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ।
 - इस व्यक्ति के लए लाभ और हानि, यश और अपयश बराबर हैं।
 - सवेरा हुआ, पक्षी बोलने लगे।
 - वह काम, जिसे आपने बताया था, मैंने कर दिया था।
 - यहाँ आओ, सुमन, मेरी बात तो सुनो।
 - पूज्या माता जी, भवदीया आदि।
- 4. प्रश्नवाचक चहन (?) इस चहन का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में, अनिश्चय या संदेह प्रकट करने के लए संदेह स्थल पर कोष्ठक में कया जाता है; जैसे
 - सुमन, तुम कब आई?
 - क्या कहा, वह परिश्रमी है?
 - वह क्या पढ़ता है, क्या लखता है, क्या याद करता है, यह मुझसे क्यों पूछ रहे हो?

- 5. वस्मयवाचक चहन (!) इस चहन का प्रयोग वस्मय (आश्चर्य), हर्ष, घृणा, शोक आदि मनोभावों को व्यक्त करने के लए इस चहन का प्रयोग कया जाता है; जैसे –
 - अरे! बरसात होने लगी।
 - अहा! कतने सुंदर फूल खले हैं।
 - हाय! चोरों ने सब कुछ लूट लया।
 - छि:! यहाँ तो कूड़ा फैला है।

शाबाश! त्म्हें 'ए' ग्रेड मला है।

- 6. योजक या वभाजक चहन (-) इस चहन का प्रयोग सामा सक शब्दों, सा, सी, से आदि से पूर्व, शब्द युग्मों, द् वत्व शब्दों, पूर्णांक से कम संख्या भाग बताने के लए कया जाता है –
 - सुख-दुख, आगमन प्रस्थान, जीवन-मरण, यश-अपयश।
 - हिरनी-सी आँखें, मोती-से अक्षर, फूल-सा बच्चा।
 - उठते-बैठते, सोते जागते, हँसते-हँसते, पढ़ते-पढ़ते।
 - एक-तिहाई, तीन-दसवाँ, एक-चौथाई।
- 7. निर्देशक चहन (-) यह चहन योजक- चहन से बड़ा होता है। इसका प्रयोग कसी के कहे वाक्यों से पूर्व, कहा, लखा

आदि क्रयाओं के बाद, संवादों में, कसी शब्द या वाक्यांश की व्याख्या से पूर्व कया जाता है; जैसे -

- गांधी जी ने कहा-"हम स्वराज लाएँगे।"
- अध्यापक ने लखा-पाठ दोहराकर आना।
- राणा प्रताप-देखो, भामाशाह आ रहे हैं।
- भामाशाह-राजन, आप मेरी यह दौलत स्वीकार कर लें।
- इस दुकान पर आपको कई चीजें मल जाएंगी-चीनी, चावल, दाल, तेल आदि।
- 8. उद्धरण चहन ('....', "...") इस चहन का प्रयोग कसी कथन को मूल रूप में लखने, पुस्तक या कथन का मूल अंश उद्धृत करने व्यक्ति, पुस्तक, उपनाम आदि के लए कया है।

इसके दो भेद हैं

(क) इकहरा उद्धारण चहन (......')

- इस क वता के रचयिता रामधारी संह 'दिनकर' हैं।
- 'रामचरित मानस' तुलसीदास की वश्व प्र सद्ध कृति है।

(ख) दोहरा उद्धारण चहन ("......")

- स्व. इंदिरा गांधी ने नारा दिया-'गरीबी हटाओ।"
- ग्रेसम का कहना था-"प्राना नोट नए नोट के चलन में बाधक होता है।"
- 9. ववरण चहन (:-) कुछ सूचना, निर्देश आदि देने के लए इस चहन का प्रयोग कया जाता है; जैसे –
 - कर्म के आधार पर क्रया के दो भेद होते है:-अकर्मक और सकर्मक।
 - राजा दशरथ के चार पुत्र थे: राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।
- 10. कोष्ठक () -कोष्ठक में उस अंश को दिया जाता है जो वाक्य का मुख्य अंश होने के बाद भी अलग से दिया जा सकता है; जैसे –
 - राष्ट्रीय त्योहार (स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस) राष्ट्रीय एकता बढ़ाने में सहायक हैं।
 - यहाँ लेखन सामग्री (रजिस्टर, पेन, इंक आदि) मल जाएगी।
 - (क) और (ख) दोनों वकल्प सही हैं।
- 11. हंसपद चहन (*)- लखते समय कुछ अंश छूट जाने पर इस चहन को लगाकर उसके ऊपर लख दिया जाता है; जैसे
 - यहाँ बस, ट्रक और कार की मरम्मत की जाती है।
 - अप्रैल, मई और जून गरमी के महीने हैं।
 - आप वश्वास कीजिए, यह काम मैंने ही कया है।
- 12. लाघव चहन (॰)- इसे संक्षेप सूचक चहन भी कहते हैं। कसी बड़े अंश का लघुरूप लखने के लए इसका प्रयोग कया जाता है, जैसे –
- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय = (स.ही॰वा॰ अज्ञेय)
- गोस्वामी तुलसीदास = (गो॰ तुलसीदास), डॉक्टर = (डॉ॰)
- कृपया पन्ना उलटिए= (कृ॰प॰उ॰)

• अभ्यास प्रश्न

प्रश्नः

निम्न ल खत वाक्यों में उ चत वराम- चहन का प्रयोग करते ह्ए दोबारा ल खए

- 1. लोगों ने मस्टर शर्मा को एम पी च्न लया
- 2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
- 3. क्या प्रधानाचार्य आज नहीं आए हैं
- 4. त्लसी ने रामचरित मानस में लखा है परहित सर स धर्म नहिं भाई
- 5. त्म कौन हो कहाँ रहते हो क्या करते हो यह सब मैं क्यों पूछू
- 6. बूढे ने डॉक्टर चड्ढा से कहा इसे एक नज़र देख लीजिए शायद बच जाए
- 7. कामायनी क व जयशंकर प्रसाद की प्र सद्ध कृति है
- 8. उस क व सम्मेलन में रामधारी संह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे कई महान क व आए थे
- 9. वसंत ऋत् के त्योहार होली वसंत पंचमी वैसाखी हमें उल्लास से भर जाते हैं
- 10.हाय फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी
- 11.क्या कहा त्म अन्तीर्ण हो गए
- 12. रोहन 125 राजौरी गार्डन दिल्ली में रहता है
- 13.यह पत्र 25 जुलाई 2014 को लखा गया है
- 14. बचो बचो सामने से साँड आ रहा है
- 15.सुमन तुमने कतना स्वादिष्ट खाना बनाया है

उत्तरः

- 1. लोगों ने म. शर्मा को एम.पी. चुन लया है।
- 2. स्भाष चंद्र बोस ने कहा, "त्म मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"
- 3. "क्या आज प्रधानाचार्य नहीं आए हैं?"
- 4. त्लसी ने 'रामचरित मानस' में लखा है-'परहित सर स धर्म नहिं भाई'।
- 5. तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, क्या करते हो, यह सब मैं क्यों पूछू ?
- 6. बूढे ने डॉ. चड्ढा से कहा, "इसे एक नज़र देख लीजिए, शायद बच जाए।"
- 7. 'कामायनी' क व जयशंकर प्रसाद की प्र सद्ध कृति है।
- 8. उस क व सम्मेलन में रामधारी संह 'दिनकर', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कई महान क व आए थे।
- 9. वसंत ऋतु के त्योहार (होली, वसंत पंचमी, बैसाखी) हमें उल्लास से भर जाते हैं।
- 10.हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।

- 11.क्या कहा, त्म अन्तीर्ण हो गए!
- 12. रोहन 125, राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहता है।
- 13.यह पत्र 25 ज्लाई, 2014 को लखा गया है।
- 14.बचो बचो! सामने से साँड आ रहा है।
- 15.सुमन, तुमने कतना स्वादिष्ट खाना बनाया है।

पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित वराम- चहन संबंधी कुछ वाक्य

प्रश्नः

निम्न ल खत वाक्यों में उ चत वराम- चहन का प्रयोग करते हुए दुबारा ल खए

- 1. हिंदी क वता की सुंदर पंक्ति है जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए
- 2. नीचे को धूरि समान वेद वाक्य नहीं है
- 3. धूल धूल धूली धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग अलग हैं
- 4. एक आदमी ने घृणा से कहा क्या ज़माना है जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है
- 5. दूसरे साहब कह रहे थे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है
- 6. कल जिसका बेटा चल बसा आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है हाय रे पत्थर-दिल
- 7. उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए
- 8. हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा कार्य का एक ज़बरदस्त साह सक कार्य था
- 9. कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे क्या तुम भयभीत थीं
- 10.नहीं मैंने बिना कसी हिच कचाहट के उत्तर दिया
- 11.त्मने इतनी बड़ी जो खम क्यों ली बचेद्री
- 12. साउथ कोल पृथ्वी पर बह्त अधक कठोर जगह के नाम से प्र सद्ध है
- 13.कर्नल खुल्लर ने बधाई देते हुए कहा मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लए तुम्हारे माता-पता को बधाई देना चाहँगा
- 14.तीसरे दिन की स्बह त्मने मुझे कहा मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ
- 15. चलो चलते हैं मैंने कहा।
- 16.यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आ खर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है क्छ और क्यों नहीं
- 17. रामन ने बी ए और एम ए दोनों ही परीक्षाओं में काफी ऊँचे अंक हा सल कए

- 18.शोध कार्यों के दौरान उनके अध्ययन के दायरे में जहाँ वाय लन, चैलो जैसे वदेशी वाद्य यंत्र आए वहीं वीणा, तानप्रा और मृदंगम पर भी उन्होंने काम कया
- 19.हम आकाश का वर्णन करते हैं पृथ्वी का वर्णन करते हैं जलाशयों का वर्णन करते हैं पर कीचड़ का वर्णन कभी कसी ने कया है
- 20. प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है क वह भली-भाँति समझ ले क महात्मा जी के धर्म का स्वरूप क्या है
- 21.कभी-कभी अपना परिचय उनके पीर बावर्ची भश्ती खर रूप में देने में वे गौरव का अनुभव कया करते थे
- 22. गांधी जी कहते थे-महादेव के लखे नोट के साथ थोड़ा मलान कर लेना था न

उत्तरः

- 1. हिंदी-क वता की संदर पंक्ति है, 'जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए'।
- 2. 'नीचे को धूरि समान' वेद वाक्य नहीं है।
- 3. धूल, धूल, धूली, धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं।
- 4. एक आदमी ने घृणा से कहा, "क्या ज़माना है। जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।
- 5. दूसरे साहब कह रहे थे, "जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।
- 6. कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है, हाय रे पत्थर-दिल।
- 7. उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।
- 8. हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, "यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक ज़बरदस्त साह सक कार्य था।"
- 9. कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे, "क्या तुम भयभीत थीं?"
- 10. "नहीं, मैंने बिना कसी हिच कचाहट के उत्तर दिया।"
- 11. "तुमने इतनी बड़ी जो खम क्यों ली, बचेंद्री?"
- 12.साउथ कोल 'पृथ्वी पर बह्त अ धक कठोर जगह' के नाम से प्र सद्ध है।
- 13.कर्नल खुल्लर ने बधाई देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लए तुम्हारे माता-पता को बधाई देता हँ।"
- 14. तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझे कहा, "मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।"
- 15. "चलो, चलते हैं।" मैंने कहा।
- 16.यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी-'आ खर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है, क्छ और क्यों नहीं?'
- 17. रामन ने बी.ए. और एम.ए.-दोनों ही परीक्षाओं में काफ़ी ऊँचे अंक हा सल कए।

- 18.शोध कार्यों के दौरान उनके अध्ययन के दायरे में जहाँ वाय लन, चैलो जैसे वदेशी वाद्य आए, वहीं वीणा, तानप्रा – और मृदंगम पर भी उन्होंने काम कया।
- 19.हम आकाश का वर्णन करते हैं, पृथ्वी का वर्णन करते हैं, जलाशयों का वर्णन करते हैं पर कीचड़ का वर्णन कभी कसी ने कया है?
- 20. प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है क वह भली-भाँति समझ ले क महात्मा जी के 'धर्म' का स्वरूप क्या है?
- 21.कभी-कभी अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची- भश्ती-खर' रूप में देने में वे गौरव का अनुभव कया करते थे
- 22. गांधी जी कहते थे-"महादेव के लखे 'नोट' के साथ थोड़ा मलान कर लेना था न।"

*-लेखन-संकेतों के आधार पर कहानियाँ:-

१-संकेत

एक कसान के लड़के लड़ते- कसान मरने के निकट- सबको बुलाया- लक इयों को तोड़ने को दिया-कसी से न टूटा- एक-एक कर लक इयों तोड़ी- शक्षा। उपर्युक्त संकेतों को पढ़ने और थोड़ी कल्पना से काम लेने पर पूरी कहानी इस प्रकार बन जायेगी-

एकता

एक था कसान। उसके चार लड़के थे। पर, उन लड़कों में मेल नहीं था। वे आपस में बराबर लड़ते-झगड़ते रहते थे। एक दिन कसान बहुतबीमार पड़ा। जब वह मृत्यु के निकट पहुँच गया, तब उसने अपने चारों लड़कों को बुलाया और मलजुलकर रहने की शक्षा दी। कन्तु लड़कों पर उसकी बात का -कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब कसान ने लक इयों का गट्ठर माँगाया और लड़कों को तोड़ने को कहा। कसी से वह गट्ठर न टूटा। फर, लक इयाँ गट्ठर से अलग की गयीं। कसान ने अपने सभी लड़कों को बारीअलग तोड़ने को कहा। सबने आसानी से ऐसा कया -बारी से बुलाया और लक इयों को अलग-एक कर टूटती गयीं। अब लड़कों की आँखें खुलीं। तभी उन्होंने समझा क आपस -और लक इयाँ एक जुलकर रहने में कतना बल है-में मल।

२-संकेत -(बारिश का आभाव, एक भे इया, चरागाह में भेड़ों का झुंड, सारा पानी भी पी जाना, भेड़ें वहाँ से भाग गई(भे इए की योजना

एक बार पूरे देश में सूखा पड़ गया। बारिश के अभाव में सभी नदीनाले सूख गए। कहीं पर भी - अन्न का एक दाना नहीं उपजा। बह्त से जानवर भूख औरप्यास से मर गए। पास ही के जंगल में एक भे इया रहता था। उस दिन वह अत्य धक भूखा था। भोजन न मलने की वजह से वह बह्त दुबला हो गया था। एक दिन उसने जंगल के पास स्थित चरागाह में भेड़ों का झुंड देखा। चरवाहा उस समय वहाँ पर नहीं था।वह अपनी भेड़ों के लए पीने के पानी की बाल्टियाँ भी छोड़कर गया था। भेड़ों को देखकर भे इया खुश हो गया और सोचने लगा, 'मैं इन सब भेड़ों को मारकर खा जाऊँगा और सारा पानी भी पी जाऊँगा। फर वह उनसे बोला, "दोस्तो, मैं अत्य धक बीमार हूँ और चलने फरने में - असमर्थ हूँ। क्या तुम में से कोई मुझे पीने के लए थोड़ा पानी दे सकता है। "उसे देखकर भेड़ें सतर्क हो गई। तब उनमें से एक भेड़ बोली, "क्या तुम हमें बेवकूफ समझते हो? हम तुम्हारे पास तुम्हारा भोजन बनने के लए हर गज नहीं आएँगे। "इतना कहकर भेड़ें वहाँ से भाग गई। इस प्रकार भेड़ों की सतर्कता के कारण भे इए की योजना असफल हो गई और बेचारा भे इया बस हाथ मलता ही रह गया।

शक्षा बुद्ध सबसे बड़ा धन है -

3.

संकेत -

(आलसी लड़का, पैसों से भरा एक थैला, बिना प्रयास के ही इतने सारे पैसे, व्यर्थ खर्च, कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं, कद्र और उपयो गता)

मेहनत की कमाई

सोन् एक आलसी लड़का था। वह अपना समय यूँ ही आवारागदी करने में व्यतीत करता था। इस कारण वह हमेशा कार्य करने से जी चुराता था। एक दिन उसे पैसों से भरा एक थैला मला। वह अपने भाग्य पर बहुत खुश हुआ। वह यह सोच-सोचकर खुश हो रहा था क उसे मल गए। सोन् ने कुछ पैसों से मठाई खरीदी, कुछ पैसों से कपड़े व अन्य सामान खरीदा।

इस प्रकार उसने पैसों को व्यर्थ खर्च करना प्रारंभ कर दिया। तब उसकी माँ बोली, "बेटा, पैसा यूँ बर्बाद न करो। इस पैसे का उपयोग कसी व्यवसाय को शुरू करने में करो।" सोनू बोला, "माँ मेरे पास बहुत पैसा है।

इस लए मुझे कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।" धीरे-धीरे सोनू ने सारा पैसा खर्च कर दिया अब उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। इस तरह वह एक बार फर अपनी उसी स्थिति में आ गया। सोनू को एहसास हुआ क यदि उसने वह धन परिश्रम से कमाया हुआ होता तो उसने अवश्य उसकी कद्र और उपयो गता समझी होती।

शक्षा - धन की उपयो गता तभी समझ आती है जब वह मेहनत से कमाया हुआ हो।

मंकेत - (आश्रम, नटखट शष्य, दीवार फाँदना, उसके गुरुजी यह बात जानते थे, दीवार पर सीढ़ी लगी

दिखाई दी, नीचे उतरने में मदद, गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचन, गलती के लए क्षमा) सबक

एक समय की बात है। एक आश्रम में र व नाम का एक शष्य रहता था। वद बहुत अधक नटखट था। वह प्रत्येक रात आश्रम की दीवार फाँदकर बाहर जाता था परन्तु उसके बाहर जाने की बात कोई नहीं जानता था।

सुबह होने से पहले लौट आया। वह सोचता था क उसके आश्रम से घूमने की बात कोई नहीं जानता ले कन उसके गुरुजी यह बात जानते थे। वे र व को रंगे हाथ पकड़ना चाहते थे। एक रात हमेशा की तरह र व सीढ़ी पर चढ़ा और दीवार फॉदकर बाहर कूद गया।

उसके जाते ही गुरुजी जाग गए। तब उन्हें दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी। कुछ घंटे बाद र व लौट आया और अंधेरे में दीवार पर चढ़ने की को शश करने लगा। उस वक्त उसके गुरुजी सीढ़ी के पास ही खड़े थे। उन्होंने र व की नीचे उतरने में मदद की और बोले, "बेटा, रात में जब तुम बाहर जाते हो तो तुम्हें अपने साथ एक गर्म साल अवश्य रखनी चाहिए।

गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचनों का र व पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने अपनी गलती के लए क्षमा माँगी। साथ ही उसने गुरु को ऐसी गलती दोबारा न करने का वचन भी दिया।

शक्षा - प्रेमपूर्ण वचनों का सबक जिंदगी भर याद रहता है।

5. संकेत - (पालतु च इय, ताजा पानी और दाना, चालाक बिल्ली डॉक्टर का वेश धारण कर वहाँ पहुँची, स्वास्थ्य परीक्षण, बिल्ली की चाल को तुरंत समझ गईं, दुश्मन बिल्ली, मायूस होकर बिल्ली वहाँ से चली गई)

चालाक च इया

एक व्यक्ति ने अपने पालतु च इयों के लए एक बड़ा-सा पंजरा बनाया उस पंजरे के अंदर च इया आराम से रह सकती थीं। वह व्यक्ति प्रतिदिन उन च इयों को ताजा पानी और दाना देता। एक दिन उस व्यक्ति की अनुपस्थिति में एक चालाक बिल्ली डॉक्टर का वेश धारण कर वहाँ पहुँची और बोली, "मेरे प्यारे दोस्तो पंजरे का दरवाजा खोलो। मैं एक डॉक्टर हूँ और तुम सब के स्वास्थ्य परीक्षण के लए यहाँ आई हूँ।"

समझदार च इयाएँ बिल्ली की चाल को तुरंत समझ गईं। वे उससे बोली, "तुम हमारी दुश्मन बिल्ली हो। हम तुम्हारे लए दरवाजा हर गज नहीं खोलेंगे। यहाँ से चली जाओ।" तब बिल्ली बोली, "नहीं, नहीं। मैं तो एक डॉक्टर हूँ। तुम मुझे गलत समझ रहे हो। मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगी। कृपया दरवाजा खोल दो।" ले कन च इया उसकी बातों में नहीं आई। उन्होंने उससे स्पष्ट रूप से मना कर दिया। आ खरकार मायूस होकर बिल्ली वहाँ से चली गई।

शक्षा - समझदारी कसी भी म्सीबत को टाल सकती है।

*- वज्ञापन-

1. अपने वद्यालय की संस्था 'पहरेदार' की ओर से जल का दुरुपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 30 शब्दों में एक वज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए।



2. वद्यालय की कला व थ में कुछ चत्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लए उपलब्ध हैं। इसके लए एक वज्ञापन लगभग 50 शब्दों में ल खए।



3. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्तवपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लए लगभग 25-30 शब्दों में एक वज्ञापन ल खए।



पाठ-४- वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन पाठ व्याख्या

पेड़ से सेब गरते हुए तो लोग सिंदयों से देखते आ रहे थे, मगर गरने के पीछे छिपे रहस्य को न्यूटन से पहले कोई और समझ नहीं पाया था। ठीक उसी प्रकार वराट समुद्र की नील-वर्णीय आभा को भी असंख्य लोग आदिकाल से देखते आ रहे थे, मगर इस आभा पर पड़े रहस्य के परदे को हटाने के लए हमारे समक्ष उपस्थित हुए सर चंद्रशेखर वेंकट रामन्।

बात सन् 1921 की है, जब रामन् समुद्री यात्रा पर थे। जहाज के डेक पर खड़े होकर नीले समुद्र को निहारना, प्रकृति-प्रेमी रामन् को अच्छा लगता था। वे समुद्र की नीली आभा में घंटों खोए रहते। ले कन रामन् केवल भावुक प्रकृति-प्रेमी ही नहीं थे। उनके अंदर एक वैज्ञानिक की जिज्ञासा भी उतनी ही सशक्त थी। यही जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी-'आ खर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है? कुछ और क्यों नहीं?' रामन् सवाल का जवाब ढूँढ़ने में लग गए। जवाब ढूँढ़ते ही वे वश्व वख्यात बन गए। शब्दार्थ व

वराट - वशालकाय

आभा - चमक

असंख्य - अन गनत

जिज्ञासा – जानने की इच्छा

वश्व वख्यात - संसार में प्र सद्ध

व्याख्या – लेखक कहता है क पेड़ से सेब गरते हुए तो लोग सिंदियों से देखते आ रहे थे, मगर लेखक कहता है क उसके गरने के पीछे छिपे रहस्य को न्यूटन से पहले कोई और समझ नहीं पाया था। ठीक उसी तरह वशालकाय समुद्र के नील रंग की चमक को भी अन गनत लोग पुराने समय से देखते आ रहे थे, मगर इस चमक पर पड़े रहस्य के परदे को हटाने के लए हम सभी के सामने उपस्थित हुए सर चंद्रशेखर वेंकट रामन्। लेखक कहता है क सन् 1921 की बात है, जब रामन् एक बार समुद्री यात्रा कर रहे थे। रामन् को जहाज के डेक पर खड़े होकर नीले समुद्र को देखना, प्रकृति को प्यार करना अच्छा लगता था। लेखक कहता है क रामन् समुद्र की नीली चमक को न जाने कतने समय तक देखते रहते थे। ले कन रामन् केवल भावुक प्रकृति-प्रेमी ही नहीं थे। उनके अंदर एक वैज्ञानिक की जानने की इच्छा भी उतनी ही मज़बूत थी। लेखक कहता है क यही जानने की इच्छा के कारण उनके मन में सवाल उठा क 'आ खर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है? कुछ और क्यों नहीं?' रामन् सवाल का जवाब ढूँढने में लग गए। जवाब ढूँढते ही वे संसार में प्र सद्ध हो गए। रामन् का जन्म 7 नवंबर सन् 1888 को त मलनाडु के तिरु चरापल्ली नगर में हुआ था। इनके पता वशाखापत्तनम् में ग णत और भौतिकी के शक्षक थे। पता इन्हें बचपन से ग णत और भौतिकी पढ़ाते थे। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क जिन दो वषयों के ज्ञान ने उन्हें जगत-प्र सद्ध बनाया, उनकी सशक्त नींव उनके पता ने ही तैयार की थी। कॉलेज की पढ़ाई उन्होंने पहले ए.बी.एन.

कॉलेज तिरु चरापल्ली से और फर प्रेसीडेंसी कॉलेज मद्रास से की। बी.ए. और एम.ए.-दोनों ही परीक्षाओं में उन्होंने काफी ऊँचे अंक हा सल कए।

रामन् का मस्तिष्क वज्ञान के रहस्यों को सुलझाने के लए बचपन से ही बेचैन रहता था। अपने कॉलेज के ज़माने से ही उन्होंने शोधकार्यों में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था। उनका पहला शोधपत्र फलॉसॉ फकल मैगज़ीन में प्रका शत हुआ था। उनकी दिली इच्छा तो यही थी क वे अपना सारा जीवन शोधकार्यों को ही सम पंत कर दें, मगर उन दिनों शोधकार्य को पूरे समय के कैरियर के रूप में अपनाने की कोई खास व्यवस्था नहीं थी। प्रतिभावान छात्र सरकारी नौकरी की ओर आक र्षत होते थे। रामन् भी अपने समय के अन्य सुयोग्य छात्रों की भाँति भारत सरकार के वत्त-वभाग में अफसर बन गए। उनकी तैनाती कलकता में हुई।

शब्दार्थ ट

भौतिकी - फ्रजिक्स

अतिशयोक्ति - बढ़ा-चढ़ा कर कहने की बात

शोधकार्य - अनुसंधान के कार्य

प्रतिभावान - तेज़ बुद् ध वाले

वत्त- वभाग - आय-व्यय से संबं धत वभाग

व्याख्या – लेखक कहता है क रामन् का जन्म 7 नवंबर सन् 1888 को त मलनाडु के तिरु चरापल्ली नगर में हुआ था। रामन् के पता वशाखापत्तनम् में ग णत और फ़ज़िक्स के अध्यापक थे। लेखक कहता है क रामन् के पता रामन् को बचपन से ही ग णत और फ़ज़िक्स पढ़ाते थे। लेखक कहता है क इसमें कोई बढ़ा -चढ़ा कर कहने की बात नहीं है क जिन दो वषयों के ज्ञान ने रामन् को संसार भर में प्र सद्ध बनाया, उनकी सशक्त नींव रामन् के पता ने ही तैयार की थी।

कॉलेज की पढ़ाई उन्होंने पहले ए.बी.एन. कॉलेज तिरु चरापल्ली से और फर प्रेसीडेंसी कॉलेज मद्रास से की। लेखक कहता है क रामन् ने बी.ए. और एम.ए.-दोनों ही परीक्षाओं में काफी अच्छे अंक प्राप्त कए थे। लेखक कहता है क रामन् मस्तिष्क वज्ञान के रहस्यों को सुलझाने के लए बचपन से ही बेचैन रहता था।

अपने कॉलेज के समय से ही उन्होंने अनुसंधान के कार्यों में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था। उनका पहला शोधपत्र फलॉसॉ फकल मैगज़ीन में प्रका शत हुआ था। उनकी दिली इच्छा तो यही थी क वे अपना सारा जीवन अनुसंधान के कार्यों को ही सम पंत कर दें, मगर उन दिनों अनुसंधान के कार्य को पूरे समय के कैरियर के रूप तेज़ बुद् ध वाले में अपनाने की कोई खास व्यवस्था नहीं थी। अत्य धक छात्र सरकारी नौकरी की ओर आक र्षत होते थे। रामन् भी अपने समय के अन्य तेज़ बुद् ध वाले छात्रों की ही तरह भारत सरकार के आय-व्यय से संबंधत वभाग में अफसर बन गए। उनकी तैनाती कलकत्ता में हुई।

कलकत्ता में सरकारी नौकरी के दौरान उन्होंने अपने स्वाभा वक रुझान को बनाए रखा। दफ़तर से फ़ुर्सत पाते ही वे लौटते हुए बहू बाजार आते, जहाँ 'इं डयन एसो सएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़

साइंस'की प्रयोगशाला थी।

यह अपने आपमें एक अनूठी संस्था थी, जिसे कलकता के एक डॉक्टर महेंद्रलाल सरकार ने वर्षों की कठिन मेहनत और लगन के बाद खड़ा कया था। इस संस्था का उद्देश्य था देश में वैज्ञानिक चेतना का वकास करना। अपने महान् उद्देश्यों के बावजूद इस संस्था के पास साधनों का नितांत अभाव था।

रामन् इस संस्था की प्रयोगशाला में कामचलाऊ उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए शोधकार्य करते। यह अपने आपमें एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था, जिसमें एक साधक दफ़तर में कड़ी मेहनत के बाद बहू बाजार की इस मामूली-सी प्रयोगशाला में पहुँचता और अपनी इच्छाशक्ति के ज़ोर से भौतिक वज्ञान को समृद्ध बनाने के प्रयास करता।

उन्हीं दिनों वे वाद्ययंत्रों की ओर आकृष्ट हुए। वे वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के पीछे छिपे वैज्ञानिक रहस्यों की परतें खोलने का प्रयास कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने अनेक वाद्ययंत्रों का अध्ययन कया जिनमें देशी और वदेशी, दोनों प्रकार के वाद्ययंत्र थे।

शब्दार्थ ट

रुझान – झ्काव

साधन – औजार

नितांत अभाव - बह्त अ धक कमी

व्याख्या – लेखक कहता है क रामन ने कलकता में सरकारी नौकरी करते हुए भी अपने स्वाभाव के अनुसार अनुसंधान के कार्य के प्रति अपने झुकाव को बनाए रखा। दफ़तर से समय मलते ही वे लौटते हुए बहू बाजार आते थे, वहाँ 'इं डयन एसो सएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस' की प्रयोगशाला थी।लेखक कहता है क यह प्रयोगशाला अपने आपमें एक अनूठी संस्था थी, जिसे कलकता के एक डॉक्टर महेंद्रलाल सरकार ने वर्षों की कठिन मेहनत और लगन के बाद खड़ा कया था। लेखक कहता है क इस संस्था का उद्देश्य देश में वैज्ञानिक चेतना का वकास करना था। अपने महान् उद्देश्यों के बावजूद इस संस्था के पास औजारों की बहुत अधक कमी थी। रामन् इस संस्था की प्रयोगशाला में कामचलाऊ औजारों का प्रयोग करते हुए अपने अनुसंधान के कार्य करते थे। लेखक के अनुसार यह अपने आपमें एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था, जिसमें एक साधक दफ़तर में कड़ी मेहनत के बाद बहू बाजार की इस मामूली-सी प्रयोगशाला में पहुँचता और अपनी इच्छाशक्ति के ज़ोर से फजिक्स वज्ञान को उन्नत बनाने के प्रयास करता। लेखक कहता है क उन्हीं दिनों रामन वाद्ययंत्रों की ओर भी आक र्षत हुए। यहाँ पर भी वे अपनी जानने की इच्छा के कारण वद्ययंत्रों की ध्वनियों के पीछे छिपे वैज्ञानिक रहस्यों की परतें खोलने का प्रयास कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने देशी और वदेशी दोनों प्रकार के अनेक वाद्ययंत्रों का अध्ययन कया।

वाद्ययंत्रों पर कए जा रहे शोधकार्यों के दौरान उनके अध्ययन के दायरे में जहाँ वाय लन, चैलो या पयानो जैसे वदेशी वाद्य आए, वहीं वीणा, तानपूरा और मृदंगम् पर भी उन्होंने काम कया। उन्होंने वैज्ञानिक सद्धांतो के आधार पर पश्चिमी देशों की इस भ्रांति को तोड़ने की को शश की क भारतीय वाद्ययंत्र वदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया हैं। वाद्ययंत्रों के कंपन के पीछे छिपे ग णत पर उन्होंने अच्छा-खासा काम कया और अनेक शोधपत्र भी प्रका शत कए।

उस ज़माने के प्र सद्ध शक्षाशास्त्री सर आशुतोष मुखर्जी को इस प्रतिभावान युवक के बारे में जानकारी मली। उन्हीं दिनों कलकता वश्व वद्यालय में प्रोफेसर पद सृजित हुआ था। मुखर्जी महोदय ने रामन् के समक्ष प्रस्ताव रखा क वे सरकारी नौकरी छोड़कर कलकता वश्व वद्यालय में प्रोफेसर का पद स्वीकार कर लें। रामन् के लए यह एक किठन निर्णय था। उस ज़माने के हिसाब से वे एक अत्यंत प्रतिष्ठित सरकारी पद पर थे, जिसके साथ मोटी तनख्वाह और अनेक सु वधाएँ जुड़ी हुई थीं। उन्हें नौकरी करते हुए दस वर्ष बीत चुके थे। ऐसी हालत में सरकारी नौकरी छोड़कर कम वेतन और कम सु वधाओं वाली वश्व वद्यालय की नौकरी में आने का फैसला करना हिम्मत का काम था। शब्दार्थ व

भ्रांति - संदेह

सृजित - रचा ह्आ

समक्ष – सामने

व्याख्या लेखक कहता है क वाद्ययंत्रों पर कए जा रहे अनुसंधान के कार्य के दौरान रामन के अध्ययन के दायरे में जहाँ वाय लन, चैलो या पयानो जैसे वदेशी वाद्य आए, वहीं वीणा, तानपूरा और मृदंगम् पर भी उन्होंने काम कया। लेखक कहता है क पश्चिमी देशों को भारतीय वाद्ययंत्र वदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया लगते थे और रामन ने वैज्ञानिक सद्धांतों के आधार पर पश्चिमी देशों के इस संदेह को तोड़ने की को शश की क भारतीय वाद्ययंत्र वदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया हैं। वाद्ययंत्रों के कंपन के पीछे छिपे ग णत पर उन्होंने अच्छा-खासा काम कया और अनेक शोधपत्र भी प्रका शत कए। लेखक कहता है क उस ज़माने के प्रसद्ध शक्षाशास्त्री सर आशुतोष मुखर्जी को रामन के बारे में जानकारी मली जो अपने जमाने के अत्य धक बुद धमान युवक कहे जाते थे। लेखक कहता है क उन्हीं दिनों कलकता वश्व वद्यालय में प्रोफेसर के पद निकले हुए थे। मुखर्जी महोदय ने रामन् के सामने प्रस्ताव रखा क वे सरकारी नौकरी छोड़कर कलकत्ता वश्व वद्यालय में प्रोफेसर का पद स्वीकार कर लें। रामन् के लए यह एक कठिन निर्णय था क्यों क लेखक कहता है क उस ज़माने के हिसाब से वे एक अत्यंत प्रतिष्ठित सरकारी पद पर थे, जिसके साथ मोटी तनख्वाह और अनेक सु वधाएँ जुड़ी हुई थीं। उन्हें नौकरी करते हुए दस वर्ष बीत चुके थे। ऐसी हालत में सरकारी नौकरी छोड़कर कम वेतन और कम सु वधाओं वाली वश्व वद्यालय की नौकरी में आने का फैसला करना रामन के लए बहुत हिम्मत का काम था।

रामन् सरकारी नौकरी की सुख-सु वधाओं को छोड़ सन् 1917 में कलकता वश्व वद्यालय की नौकरी में आ गए। उनके लए सरस्वती की साधना सरकारी सुख-सु वधाओं से कहीं अ धक महत्त्वपूर्ण थी। कलकता वश्व वद्यालय के शैक्ष णक माहौल में वे अपना पूरा समय अध्ययन, अध्यापन और शोध में बिताने लगे। चार साल बाद यानी सन् 1921 में समुद्र-यात्रा के दौरान जब रामन् के मस्तिष्क में समुद्र

के नीले रंग की वजह का सवाल हिलोरें लेने लगा, तो उन्होंने आगे इस दिशा में प्रयोग कए, जिसकी परिणति रामन् प्रभाव की खोज के रूप में हुई।

रामन् ने अनेक ठोस रवों और तरल पदार्थों पर प्रकाश की करण के प्रभाव का अध्ययन कया। उन्होंने पाया क जब एकवर्णीय प्रकाश की करण कसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आता है। वजह यह होती है क एकवर्णीय प्रकाश की करण के प्रोटोन जब तरल या ठोस रवे से गजरते हुए इनके अणुओं से टकराते हैं तो इस टकराव के परिणामस्वरूप वे या तो ऊर्जा का कुछ अंश खो देते हैं या पा जाते हैं। दोनों ही स्थितियाँ प्रकाश के वर्ण (रंग) में बदलाव लाती हैं। एकवर्णीय प्रकाश की करणों में सबसे अ धक ऊर्जा बैंजनी रंग के प्रकाश में होती है। बैंजनी के बाद क्रमशः नीले, आसमानी, हरे, पीले, नारंगी और लाल वर्ण का नंबर आता है। इस प्रकार लाल-वर्णीय प्रकाश की ऊर्जा सबसे कम होती है। एकवर्णीय प्रकाश तरल या ठोस रवों से गजरते हुए जिस परिमाण में ऊर्जा खोता या पाता है, उसी हिसाब से उसका वर्ण परिवर्तित हो जाता है।

शब्दार्थ ट

अध्ययन - पढ़ना

अध्यापन - पढ़ाना

परिणति - प्रमाण

ठोस खों - बिल्लौर

प्रोटोन - प्रकाश का अंश

क्रमशः - क्रम के अनुसार

व्याख्या – लेखक कहता है क रामन् सरकारी नौकरी की सुख-सु वधाओं को छोड़ सन् 1917 में कलकता वश्व वद्यालय की नौकरी में आ गए थे। उनके लए सरस्वती की साधना अर्थात अनुसंधान के कार्य के लए लगातार पढ़ाई करना सरकारी सुख-सु वधाओं से कहीं अ धक महत्वपूर्ण थी। लेखक कहता है क कलकता वश्व वद्यालय के शक्षा से भरे हुए माहौल में रामन अपना पूरा समय पढ़ने ,पढ़ाने और शोध अनुसंधान के कार्य में बिताने लगे। चार साल बाद यानी सन् 1921 में जब रामन समुद्र-यात्रा कर रहे थे तो उस समय जब रामन् के मस्तिष्क में समुद्र के नीले रंग की वजह का सवाल बार-बार उठने लगा, तो उन्होंने इस दिशा में कई प्रयोग कए, जिसका परिणाम रामन् प्रभाव की खोज के रूप में सभी के सामने आया। लेखक कहता है क रामन् ने अनेक ठोस रवों और तरल पदार्थों पर प्रकाश की करण के प्रभाव का अध्ययन कया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया क जब एकवर्णीय प्रकाश की करण कसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आता है। लेखक कहता है क इसकी वजह रामन यह बताते हैं क एकवर्णीय प्रकाश की करण के अंश जब तरल या ठोस रवे से गजरते हुए इनके अणुओं से टकराते हैं तो इस टकराव के परिणामस्वरूप वे या तो ऊर्जा का कुछ अंश खो देते हैं या ऊर्जा का कुछ अंश को पा जाते हैं। दोनों ही स्थितियाँ प्रकाश के वर्ण (रंग) में बदलाव लाती हैं। एकवर्णीय प्रकाश की करणों में सबसे

अ धक ऊर्जा बैंजनी रंग के प्रकाश में होती है। बैंजनी के बाद क्रम के अनुसार नीले, आसमानी, हरे, पीले, नारंगी और लाल रंग का नंबर आता है। इस प्रकार लाल-रंग की प्रकाश की ऊर्जा सबसे कम होती है। लेखक कहता है क रामन यह भी बताते हैं क एकवर्णीय प्रकाश तरल या ठोस रवों से गजरते हुए जिस परिमाण में ऊर्जा खोता या पाता है, उसी हिसाब से उसके रंग में परिवर्तन आ जाता है।

रामन् की खोज भौतिकी के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी। इसका पहला परिणाम तो यह हुआ क प्रकाश की प्रकृति के बारे में आइंस्टाइन के वचारों का प्रायो गक प्रमाण मल गया। आइंस्टाइन के पूर्ववर्ती वैज्ञानिक प्रकाश को तरंग के रूप में मानते थे, मगर आइंस्टाइन ने बताया क प्रकाश अति सूक्ष्म कणों की तीव्र धारा के समान है। इन अति सूक्ष्म कणों की तुलना आइंस्टाइन ने बुलेट से की और इन्हें 'प्रोटोन' नाम दिया। रामन् के प्रयोगों ने आइंस्टाइन की धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया, क्यों क एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन यह साफतौर पर प्रमा णत करता है क प्रकाश की करण तीव्रगामी सूक्ष्म कणों के प्रवाह के रूप में व्यवहार करती है।

रामन् की खोज की वजह से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया। पहले इस काम के लए इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लया जाता था। यह मुश्किल तकनीक है और गलितयों की संभावना बहुत अ धक रहती है। रामन् की खोज के बाद पदार्थों की आण वक और परमाण वक संरचना के अध्ययन के लए रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लया जाने लगा। यह तकनीक एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर, पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक जानकारी देती है। इस जानकारी की वजह से पदार्थों का संश्लेषण प्रयोगशाला में करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का कृत्रिम रूप से निर्माण संभव हो गया है। शब्दार्थ व

प्रायो गक - प्रयोग सम्बं धत

पूर्ववर्ती - पहले के

तीव्र धारा - तेज़ धारा

इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी - अवरक्त स्पेक्ट्रम वज्ञान

आण वक – अणु का

परमाण वक – परमाणु का

सटीक - सही

संरचना – बनावट

संश्लेषण - मलान करना

कृत्रिम ट बनावटी

व्याख्या – लेखक कहता है क रामन् की खोज भौतिकी के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी। लेखक कहता है क इसका पहला परिणाम तो यह हुआ क प्रकाश की प्रकृति के बारे में जो आइंस्टाइन के वचारों थे उसका प्रमाण प्रयोग के साथ मल गया। आइंस्टाइन से पहले के वैज्ञानिक प्रकाश को तरंग

के रूप में मानते थे, मगर आइंस्टाइन ने ही सबसे पहले यह बताया था क प्रकाश बह्त ही छोटे छोटे कणों की तेज़ धारा के समान है। इन बह्त ही छोटे छोटे कणों की तुलना आइंस्टाइन ने बुलेट से की और इन्हें 'प्रोटोन' नाम दिया। लेखक कहता है क रामन् के प्रयोगों ने आइंस्टाइन की धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया, क्यों क एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन यह साफतौर पर प्रमा णत करता है क प्रकाश की करण बह्त ही तेज़ गति के सूक्ष्म कणों के प्रवाह के रूप में व्यवहार करती है। लेखक कहता है क रामन् की खोज की वजह से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज आसान हो गया। पहले इस काम के लए अवरक्त स्पेक्ट्रम वज्ञान का सहारा लया जाता था। लेखक कहता है क यह मुश्किल तकनीक है और गलतियों की संभावना बह्त अ धक रहती है। रामन् की खोज के बाद पदार्थों के अणुओं की और परमाणुओं की बनावट के अध्ययन के लए रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लया जाने लगा। यह तकनीक एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर, पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक सही-सही जानकारी देती है। इस जानकारी की वजह से पदार्थों का प्रयोगशाला में मलान करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का बनावटी रूप से निर्माण करना संभव हो गया है। रामन् प्रभाव की खोज ने रामन् को वश्व के चोटी के वैज्ञानिकों की पंक्ति में ला खड़ा कया। प्रस्कारों और सम्मानों की तो जैसे झड़ी-सी लगी रही। उन्हें सन् 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित कया गया। सन् 1929 में उन्हें 'सर' की उपा ध प्रदान की गई। ठीक अगले ही साल उन्हें वश्व के सर्वोच्च पुरस्कार-भौतिकी में नोबेल पुरस्कार-से सम्मानित कया गया। उन्हें और भी कई प्रस्कार मले, जैसे रोम का मेत्यूसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूश पदक, फलाडेल्फिया इंस्टीट्यूट का फ्रेंक लन पदक, सो वयत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन प्रस्कार आदि। सन् 1954 में रामन् को देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित पुरस्कार भारतीय नागरिकता वाले कसी अन्य वैज्ञानिक को अभी तक नहीं मल पाया है। उन्हें अ धकांश सम्मान उस दौर में मले जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था। उन्हें मलने वाले सम्मानों ने भारत को एक नया आत्म-सम्मान और आत्म-वश्वास दिया। वज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने एक नयी भारतीय चेतना को जाग्रत कया। शब्दार्थ ट

जाग्रत - जगाना

व्याख्या – लेखक कहता है क रामन् प्रभाव की खोज ने रामन् को वश्व के सबसे प्र सद्ध वैज्ञानिकों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। रामन के जीवन में अब तो पुरस्कारों और सम्मानों की तो जैसे झड़ी-सी लगी रही। उन्हें सन् 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित कया गया। सन् 1929 में उन्हें 'सर'की उपा ध प्रदान की गई। ठीक अगले ही साल उन्हें वश्व के सबसे बड़े पुरस्कार-भौतिकी में नोबेल पुरस्कार-से सम्मानित कया गया। उन्हें और भी कई पुरस्कार मले, जैसे रोम का मेत्यूसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूश पदक, फलाडेल्फिया इंस्टीट्यूट का फ्रेंक लन पदक, सो वयत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार आदि। सन् 1954 में रामन् को देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित कया गया।

Class 9th English	Class 9th	Take Class 9
Lessons	English Mcq	MCQs
Class 9th Hindi	Class 9th Hindi	Take Class 9
Lessons	Mcq	MCQs
Class 9th Science Lessons	Class 9th Science Mcq	

लेखक कहता है क रामन् नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिक थे। उनके बाद यह पुरस्कार भारतीय नागरिकता वाले कसी अन्य वैज्ञानिक को अभी तक नहीं मल पाया है। लेखक कहता है क सबसे बड़ी हैरान करने वाली बात यह है क उन्हें अ धकांश सम्मान उस दौर में मले जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था। उन्हें मलने वाले सम्मानों ने भारत को एक नया आत्म-सम्मान और आत्म- वश्वास दिया। वज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने एक नयी भारतीय चेतना को जगाने का काम कया।

भारतीय संस्कृति से रामन् को हमेशा ही गहरा लगाव रहा। उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को हमेशा अक्ष्णण रखा। अंतरराष्ट्रीय प्र सद् ध के बाद भी उन्होंने अपने द क्षण भारतीय पहनावे को नहीं छोड़ा। वे कट्टर शाकाहारी थे और मदिरा से सख्त परहेज़ रखते थे। जब वे नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने स्टाॅकहोम गए तो वहाँ उन्होंने अल्कोहल पर रामन् प्रभाव का प्रदर्शन कया। बाद में आयोजित पार्टी में जब उन्होंने शराब पीने से इनकार कया तो एक आयोजक ने परिहास में उनसे कहा क रामन ने जब अल्कोहल पर रामन प्रभाव का प्रदर्शन कर हमें आह्वादित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, तो रामन् पर अल्कोहल के प्रभाव का प्रदर्शन करने से परहेश क्यों? रामन् का वैज्ञानिक व्यक्तित्व प्रयोगों और शोधपत्र-लेखन तक ही समटा हुआ नहीं था। उनके अंदर एक राष्ट्रीय चेतना थी और वे देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चंतन के वकास के प्रति सम पंत थे। उन्हें अपने श्रुआती दिन हमेशा ही याद रहे जब उन्हें ढंग की प्रयोगशाला और उपकरणों के अभाव में काफी संघर्ष करना पड़ा था। इसी लए उन्होंने एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध-संस्थान की स्थापना की जो बंगलोर में स्थित है और उन्हीं के नाम पर 'रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट' नाम से जानी जाती है। भौतिक शास्त्रा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लए उन्होंने इं डयन जरनल ऑफ़ फ़ज़िक्स नामक शोध-पत्रिका प्रारंभ की। अपने जीवनकाल में उन्होंने सैकड़ों शोध-छात्रों का मार्गदर्शन कया। जिस प्रकार एक दीपक से अन्य कई दीपक जल उठते हैं, उसी प्रकार उनके शोध-छात्रों ने आगे चलकर काफी अच्छा काम कया। उन्हीं में कई छात्र बाद में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुए। वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लए वे करेंट साइंस नामक एक पत्रिका का भी संपादन करते थे। रामन् प्रभाव केवल प्रकाश की करणों तक ही समटा नहीं था; उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रकाश की करणों से पूरे देश को आलो कत और प्रभा वत कया। उनकी मृत्यु 21 नवंबर सन् 1970 के दिन 82 वर्ष की आयु में ह्ई।

रामन् वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने हमें हमेशा ही यह संदेश दिया क हम अपने आसपास घट रही व भन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन एक वैज्ञानिक दृष्टि से करें। तभी तो उन्होंने संगीत के सुर-ताल और प्रकाश की करणों की आभा के अंदर से वैज्ञानिक सद्धांत खोज निकाले। हमारे आसपास ऐसी न जाने कतनी ही चीज़े बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं। ज़रूरत है रामन् के जीवन से प्रेरणा लेने की और प्रकृति के बीच छुपे वैज्ञानिक रहस्य का भेदन करने की।

शब्दार्थ ट

अक्षुण्ण – अखं डत

कट्टर - दृढ़

परिहास - हँसी-मज़ाक

आह्वादित - आनंदित

आलो कत - प्रका शत

प्रतिमूर्ति - अनुकृति, चत्रा, प्रतिमा

नोबेल पुरस्कार - यह एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का सर्वोच्च पुरस्कार है

व्याख्या - लेखक कहता है क भारतीय संस्कृति से रामन् को हमेशा ही गहरा लगाव रहा। उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को हमेशा अखं डत रखा अर्थात उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को नष्ट नहीं होने दिया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्र सद्ध पाने के बाद भी उन्होंने अपने दक्षण भारतीय पहनावे को नहीं छोड़ा। लेखक कहता है क वे कट्टर शाकाहारी थे और शराब से तो वे सख्त परहेज़ रखते थे। लेखक कहता है क जब वे नोबेल प्रस्कार प्राप्त करने गए तो वहाँ उन्होंने अल्कोहल पर रामन् प्रभाव का प्रदर्शन कया। बाद में आयोजित पार्टी में जब उन्होंने शराब पीने से इनकार कया तो एक आयोजक ने हँसी-मज़ाक में उनसे कहा क रामन् ने जब अल्कोहल पर रामन् प्रभाव का प्रदर्शन कर हमें आनंदित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, तो रामन् पर अल्कोहल के प्रभाव का प्रदर्शन करने से परहेज क्यों? लेखक कहता है क रामन् का वैज्ञानिक व्यक्तित्व प्रयोगों और अनुसन्धान के पत्र-लेखन तक ही समटा हुआ नहीं था। उनके अंदर एक राष्ट्रीय चेतना थी और वे देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चंतन के वकास के प्रति सम पंत थे। लेखक कहता है क उन्हें अपने श्रुआती दिन हमेशा ही याद रहे, जब उन्हें ढंग की प्रयोगशाला और उपकरणों की कमी में काफी संघर्ष करना पड़ा था। इसी लए उन्होंने एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध-संस्थान की स्थापना की जो बंगलोर में स्थित है और उन्हीं के नाम पर 'रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट' नाम से जानी जाती है। भौतिक शास्त्र में अन्संधान को बढ़ावा देने के लए उन्होंने इं डयन जरनल ऑफ़ फ़ज़िक्स नामक शोध-पत्रिका प्रारंभ की। लेखक कहता है क अपने जीवनकाल में उन्होंने सैकड़ों शोध-छात्रों का मार्गदर्शन कया। लेखक उदाहरण देता ह्आ कहता है क जिस प्रकार एक दीपक से अन्य कई दीपक जल उठते हैं, उसी प्रकार उनके शोध-छात्रों ने आगे चलकर काफी अच्छा काम कया। उन्हीं में कई छात्र बाद में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुए। लेखक कहता है क रामन वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लए करेंट साइंस नामक एक पत्रिका का भी

संपादन करते थे। रामन् प्रभाव केवल प्रकाश की करणों तक ही समटा नहीं था; उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रकाश की करणों से पूरे देश को प्रका शत और प्रभा वत कया। उनकी मृत्यु 21 नवंबर सन् 1970 के दिन 82 वर्ष की आयु में हुई। लेखक कहता है क रामन् वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने हमें हमेशा ही यह संदेश दिया क हम अपने आसपास घट रही व भन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन एक वैज्ञानिक दृष्टि से करें। तभी तो उन्होंने संगीत के सुर-ताल और प्रकाश की करणों की चमक के अंदर से वैज्ञानिक सद्धांत खोज निकाले। हमारे आसपास ऐसी न जाने कतनी ही चीज़े बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं। लेखक कहता है क हमें केवल ज़रूरत है रामन् के जीवन से प्रेरणा लेने की और प्रकृति के बीच छुपे वैज्ञानिक रहस्य का भेदन करने की।

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन प्रश्न अभ्यास

(क) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में ल खए c

प्रश्न 1 – कॉलेज क दिनों में रामन की दिली इच्छा क्या थी?

उत्तर – कॉलेज के दिनों में रामन की दिली इच्छा थी क अपना पूरा जीवन शोधकार्य को सम पंत कर दें। ले कन उस जमाने में शोधकार्य को एक पूर्णका लक कैरियर के रूप में अपनाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। परन्तु रामन ने अपनी दिली इच्छा को पूरा कया।

प्रश्न 2 – वादययंत्रों पर की गई खोजों से रामन ने कौन सी भ्रांति तोड़ने की को शश की?

उत्तर - लोगों का मानना था क भारतीय वाद्ययंत्र पश्चिमी वाद्ययंत्र की तुलना में अच्छे नहीं होते हैं। रामन ने अपनी खोजों से इस भ्रांति को तोड़ने की को शश की।

प्रश्न 3 – रामन के लए नौकरी संबंधी कौन सा निर्णय कठिन था?

उत्तर – उस जमाने के हिसाब से रामन सरकारी वभाग में एक प्रतिष्ठित अफसर के पद पर तैनात थे। उन्हें मोटी तनख्वाह और अन्य सु वधाएँ मलती थीं। उस नौकरी को छोड़कर वश्व वद्यालय में प्रोफेसर की नौकरी करने का फैसला बह्त कठिन था।

प्रश्न 4 – सर चंद्रशेखर वेंकट रामन को समय समय पर कन कन पुरस्कारों से सम्मानित कया गया?

उत्तर - रामन को 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित कया गया। 1929 में उन्हें 'सर' की उपा ध दी गई। 1930 में उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित कया गया। उन्हें कई अन्य पुरस्कार भी मले; जैसे रोम का मेत्यूसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूज पदक, फलाडेल्फिया इंस्टीच्यूट का फ्रैंक लन पदक, सो वयत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार, आदि। उन्हें 1954 में भारत रत्न से सम्मानित कया गया।

प्रश्न 5 – रामन को मलने वाले पुरस्कारों ने भारतीय चेतना को जाग्रत कया। ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर - रामन को अ धकतर पुरस्कार तब मले जब भारत अंग्रेजों के अधीन था। वैसे समय में यहाँ

पर वैज्ञानिक चेतना का सख्त अभाव था। रामन को मलने वाले पुरस्कारों से भारत की न सर्फ वैज्ञानिक चेतना जाग्रत हुई बल्कि भारत का आत्म वश्वास भी बढ़ा।

(ख) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में ल खए ट

प्रश्न 1 – रामन के प्रारं भक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है?

उत्तर – हठयोग में योगी अपने शरीर को असहय पीड़ा से गुजारता है। रामन भी कुछ ऐसा ही कर रहे थे। वे पूरे दिन सरकारी नौकरी में कठिन परिश्रम करते थे और उसके बाद बहु बाजार स्थित प्रयोगशाला में वैज्ञानिक शोध करते थे। उस प्रयोगशाला में बस कामचलाउ उपकरण ही थे। इस लए रामन के प्रारं भक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग कहा गया है।

प्रश्न 2 – रामन की खोज 'रामन प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – जब एकवर्णीय प्रकाश की करण कसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आता है। ऐसा इस लए होता है क जब एकवर्णीय प्रकाश की करण के फोटॉन कसी तरल या ठोस रवे से गुजरते हुए इनके अणुओं से टकराते हैं तो टक्कर के बाद या तो वे कुछ ऊर्जा खो देते हैं या कुछ ऊर्जा पा जाते हैं। ऊर्जा में परिवर्तन के कारण प्रकाश के वर्ण (रंग) में बदलाव आता है। ऊर्जा के परिमाण में परिवर्तन के हिसाब से प्रकाश का रंग कसी खास रंग का हो जाता है। इसे ही रामन प्रभाव कहते हैं।

प्रश्न 3 – 'रामन प्रभाव' की खोज से वज्ञान के क्षेत्र में कौन कौन से कार्य संभव हो सके? उत्तर – रामन प्रभाव की खोज से अणुओं और परमाणुओं के अध्ययन का कार्य सहज हो गया। यह काम पहले इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा कया जाता था और अब रामन स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा कया जाने लगा। इस खोज से कई पदार्थों का कृत्रिम संश्लेषण संभव हो पाया।

प्रश्न 4 – देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के महत्वपूर्ण योगदान प्र प्रकाश डा लए।

उत्तर – देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चंतन प्रदान करने के लए रामन के कई काम कए। रामन ने बंगलोर में एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध संस्थान की स्थापना की, जिसे अब रामन रिसर्च इंस्टीच्यूट के नाम से जाना जाता है। भौतिक शास्त्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लए उन्होंने इं डयन जरनल ऑफ फजिक्स नामक शोध पित्रका प्रारंभ की। उन्होंने अपने जीवन काल में सैंकड़ों शोध छात्रों का मार्गदर्शन कया। वज्ञान के प्रचार प्रसार के लए वे करेंट साइंस नामक पित्रका का संपादन भी करते थे।

प्रश्न 5 – सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के जीवन से प्राप्त होनेवाले संदेश को अपने शब्दों में ल खए। उत्तर – सर चंद्रशेखर वेंकट रामन ने हमेशा ये संदेश दिया क हम व भन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। न्यूटन ने ऐसा ही कया था और तब जाकर दुनिया को गुरुत्वाकर्षण के बारे में पता चला था। रामन ने ऐसा ही कया था और तब जाकर दुनिया को पता चला क समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है, कोई और क्यों नहीं। जब हम अपने आस पास घटने वाली घटनाओं का वैज्ञानिक वश्लेषन करेंगे तो हम प्रकृति के बारे में और बेहतर ढ़ंग से जान पाएँगे। (ग) निम्न ल खत का आशय स्पष्ट कीजिए ट

प्रश्न 1 – उनके लए सरस्वती की साधना सरकारी सुख सु वधाओं से कहीं अधक महत्वपूर्ण थी।

उत्तर – रामन एक ऐसी नौकरी में थे जहाँ मोटी तनख्वाह और अन्य सु वधाएँ मलती थीं। ले कन

रामन ने उस नौकरी को छोड़कर ऐसी जगह नौकरी करने का निर्णय लया जहाँ वे सारी सु वधाएँ नहीं
थीं। ले कन नई नौकरी में रहकर रामन अपने वैज्ञानिक शोध का कार्य बेहतर ढ़ंग से कर सकते थे।

यह दिखाता है क उनके लए सरस्वती की साधना सरकारी सुख सु वधाओं से कहीं अधक महत्वपूर्ण
थी।

प्रश्न 2 – हमारे पास ऐसी न जाने कतनी ही चीजें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं। उत्तर – हमारे पास अनेक ऐसी चीजें हैं या घटनाएँ घटती रहती हैं जिन्हें हम जीवन का एक सामान्य हिस्सा मानकर चलते हैं। ले कन उन्ही चीजों में कोई जिज्ञासु व्यक्ति महत्वपूर्ण वैज्ञानिक रहस्य खोज लेता है। फर हम जैसे नींद से जागते हैं और उस नई खोज से वस्मित हो जाते हैं। कसी की जिज्ञासा उस सही पात्र की तरह है जिसमें कसी वैज्ञानिक खोज को मूर्त रूप मलता है। प्रश्न 3 – यह अपने आप में एक आध्निक हठयोग का उदाहरण था।

उत्तर - इस पंक्ति में लेखक रामन के अथक परिश्रम के बारे में बता रहा है। रामन उस समय एक सरकारी नौकरी में कार्यरत थे। अपने दफ्तर में पूरे दिन काम करने बाद जब वे शाम में निकलते थे तो घर जाने की बजाय सीधा बहु बाजार स्थित प्रयोगशाला में जाते थे। वे प्रयोगशाला में घंटों अपने शोध पर मेहनत करते थे। पूरे दिन दफ्तर में काम करने के बाद फर प्रयोगशाला में काम करना बहुत मुश्किल होता है। यह शारीरिक और मान सक तौर पर थका देता है। इस लए लेखक ने ऐसे काम को हठयोग की संज्ञा दी है।

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन प्रश्न अभ्यास

(क) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में ल खए ह

प्रश्न 1 – कॉलेज क दिनों में रामन की दिली इच्छा क्या थी?

उत्तर – कॉलेज के दिनों में रामन की दिली इच्छा थी क अपना पूरा जीवन शोधकार्य को सम पंत कर दें। ले कन उस जमाने में शोधकार्य को एक पूर्णका लक कैरियर के रूप में अपनाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। परन्तु रामन ने अपनी दिली इच्छा को पूरा कया।

प्रश्न 2 – वाद्ययंत्रों पर की गई खोजों से रामन ने कौन सी भ्रांति तोड़ने की को शश की?

उत्तर – लोगों का मानना था क भारतीय वाद्ययंत्र पश्चिमी वाद्ययंत्र की तुलना में अच्छे नहीं होते हैं।

रामन ने अपनी खोजों से इस भ्रांति को तोड़ने की को शश की।

प्रश्न 3 – रामन के लए नौकरी संबंधी कौन सा निर्णय कठिन था?

उत्तर – उस जमाने के हिसाब से रामन सरकारी वभाग में एक प्रतिष्ठित अफसर के पद पर तैनात थे। उन्हें मोटी तनख्वाह और अन्य सु वधाएँ मलती थीं। उस नौकरी को छोड़कर वश्व वद्यालय में प्रोफेसर की नौकरी करने का फैसला बह्त कठिन था।

प्रश्न 4 – सर चंद्रशेखर वेंकट रामन को समय समय पर कन कन पुरस्कारों से सम्मानित कया गया?

उत्तर - रामन को 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित कया गया। 1929 में उन्हें 'सर' की उपा ध दी गई। 1930 में उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित कया गया। उन्हें कई अन्य पुरस्कार भी मले; जैसे रोम का मेत्यूसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूज पदक, फलाडेल्फिया इंस्टीच्यूट का फ्रैंक लन पदक, सो वयत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार, आदि। उन्हें 1954 में भारत रत्न से सम्मानित कया गया।

प्रश्न 5 – रामन को मलने वाले पुरस्कारों ने भारतीय चेतना को जाग्रत कया। ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर – रामन को अधकतर पुरस्कार तब मले जब भारत अंग्रेजों के अधीन था। वैसे समय में यहाँ पर वैज्ञानिक चेतना का सख्त अभाव था। रामन को मलने वाले पुरस्कारों से भारत की न सर्फ वैज्ञानिक चेतना जाग्रत हुई बल्कि भारत का आत्म वश्वास भी बढ़ा।

(ख) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में ल खए ट

प्रश्न 1 – रामन के प्रारं भक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है?

उत्तर – हठयोग में योगी अपने शरीर को असहय पीड़ा से गुजारता है। रामन भी कुछ ऐसा ही कर रहे थे। वे पूरे दिन सरकारी नौकरी में कठिन परिश्रम करते थे और उसके बाद बहु बाजार स्थित प्रयोगशाला में वैज्ञानिक शोध करते थे। उस प्रयोगशाला में बस कामचलाउ उपकरण ही थे। इस लए रामन के प्रारं भक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग कहा गया है।

प्रश्न 2 – रामन की खोज 'रामन प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – जब एकवर्णीय प्रकाश की करण कसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आता है। ऐसा इस लए होता है क जब एकवर्णीय प्रकाश की करण के फोटॉन कसी तरल या ठोस रवे से गुजरते हुए इनके अणुओं से टकराते हैं तो टक्कर के बाद या तो वे कुछ ऊर्जा खो देते हैं या कुछ ऊर्जा पा जाते हैं। ऊर्जा में परिवर्तन के कारण प्रकाश के वर्ण (रंग) में बदलाव आता है। ऊर्जा के परिमाण में परिवर्तन के हिसाब से प्रकाश का रंग कसी खास रंग का हो जाता है। इसे ही रामन प्रभाव कहते हैं।

प्रश्न 3 – 'रामन प्रभाव' की खोज से वज्ञान के क्षेत्र में कौन कौन से कार्य संभव हो सके? उत्तर – रामन प्रभाव की खोज से अणुओं और परमाणुओं के अध्ययन का कार्य सहज हो गया। यह काम पहले इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा कया जाता था और अब रामन स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा कया जाने लगा। इस खोज से कई पदार्थों का कृत्रिम संश्लेषण संभव हो पाया। प्रश्न 4 – देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के महत्वपूर्ण योगदान प्र प्रकाश डा लए।

उत्तर – देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चंतन प्रदान करने के लए रामन के कई काम कए। रामन ने बंगलोर में एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध संस्थान की स्थापना की, जिसे अब रामन रिसर्च इंस्टीच्यूट के नाम से जाना जाता है। भौतिक शास्त्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लए उन्होंने इं डयन जरनल ऑफ फजिक्स नामक शोध पित्रका प्रारंभ की। उन्होंने अपने जीवन काल में सैंकड़ों शोध छात्रों का मार्गदर्शन कया। वज्ञान के प्रचार प्रसार के लए वे करेंट साइंस नामक पित्रका का संपादन भी करते थे।

प्रश्न 5 – सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के जीवन से प्राप्त होनेवाले संदेश को अपने शब्दों में ल खए। उत्तर – सर चंद्रशेखर वेंकट रामन ने हमेशा ये संदेश दिया क हम व भन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। न्यूटन ने ऐसा ही कया था और तब जाकर दुनिया को गुरुत्वाकर्षण के बारे में पता चला था। रामन ने ऐसा ही कया था और तब जाकर दुनिया को पता चला क समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है, कोई और क्यों नहीं। जब हम अपने आस पास घटने वाली घटनाओं का वैज्ञानिक वश्लेषन करेंगे तो हम प्रकृति के बारे में और बेहतर ढ़ंग से जान पाएँगे। (ग) निम्न ल खत का आशय स्पष्ट कीजिए व

प्रश्न 1 – उनके लए सरस्वती की साधना सरकारी सुख सुवधाओं से कहीं अधक महत्वपूर्ण थी।

उत्तर – रामन एक ऐसी नौकरी में थे जहाँ मोटी तनख्वाह और अन्य सुवधाएँ मलती थीं। ले कन

रामन ने उस नौकरी को छोड़कर ऐसी जगह नौकरी करने का निर्णय लया जहाँ वे सारी सुवधाएँ नहीं
थीं। ले कन नई नौकरी में रहकर रामन अपने वैज्ञानिक शोध का कार्य बेहतर ढ़ंग से कर सकते थे।

यह दिखाता है क उनके लए सरस्वती की साधना सरकारी सुख सुवधाओं से कहीं अधक महत्वपूर्ण
थी।

प्रश्न 2 – हमारे पास ऐसी न जाने कतनी ही चीजें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं। 5तर – हमारे पास अनेक ऐसी चीजें हैं या घटनाएँ घटती रहती हैं जिन्हें हम जीवन का एक सामान्य हिस्सा मानकर चलते हैं। ले कन उन्ही चीजों में कोई जिज्ञासु व्यक्ति महत्वपूर्ण वैज्ञानिक रहस्य खोज लेता है। फर हम जैसे नींद से जागते हैं और उस नई खोज से वस्मित हो जाते हैं। कसी की जिज्ञासा उस सही पात्र की तरह है जिसमें कसी वैज्ञानिक खोज को मूर्त रूप मलता है। प्रश्न 3 – यह अपने आप में एक आध्निक हठयोग का उदाहरण था।

उत्तर इस पंक्ति में लेखक रामन के अथक परिश्रम के बारे में बता रहा है। रामन उस समय एक – सरकारी नौकरी में कार्यरत थे। अपने दफ्तर में पूरे दिन काम करने बाद जब वे शाम में निकलते थे तो घर जाने की बजाय सीधा बहु बाजार स्थित प्रयोगशाला में जाते थे। वे प्रयोगशाला में घंटों अपने शोध पर मेहनत करते थे। पूरे दिन दफ्तर में काम करने के बाद फर प्रयोगशाला में काम करना

बहुत मुश्किल होता है। यह शारीरिक और मान सक तौर पर थका देता है। इस लए लेखक ने ऐसे काम को हठयोग की संज्ञा दी है।

व्याकरण-

दो स्वरों के मेल से होने वाले वकार (परिवर्तन) को स्वर-संध कहते हैं। जैसे - वद्या + आलय = वद्यालय। स्वर-संध पाँच प्रकार की होती हैं-

- 6. दीर्घ संध
- 7. ग्ण संध
- 8. वृद्ध संध
- 9. यण संध
- 10. अयादि संध

दीर्घ संध-

सूत्र-अकः सवर्णे दीर्घः अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनो मलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे -

(ख) इ और ई की संध इ + इ = ई --> र व + इंद्र = रवींद्र ; मुनि + इंद्र = मुनींद्र इ +इ =ई इ +इ =ई इ + ई = ई --> गरि + ईश = गरीश; म्नि + ईश = म्नीश इ+ई=ई इ+ ई =ई ई + इ = ई- मही + इंद्र = महींद्र ; नारी + इंद्र = नारींद् ई + ई = ई- नदी + ईश = नदीश; मही + ईश = महीश. (ग) उ और ऊ की संध उ + उ = ज- भान् + उदय = भान्दय; वध् + उदय = वध्दय **उ+ उ=**ज **3**+ 3 = 5 उ + ज = ज - लघु + जर्म = लघूर्म ; सधु + जर्म = संधूर्म
 3+ 5 = 5

 3+ 5= 5
 5 + 5 = 5- वधू + उत्सव = वधूत्स<mark>व ; वधू</mark> + उल्लेख = वधूल्लेख <u>ক</u> +5=ক क + क = क- भू + कध्वं = भूध्वं ; वधू + कर्जा = वधूर्जा है। इसे गुण-संध कहते हैं। जैसे -अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

ग्ण सं धइसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए; उ, उ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता

अ +इ = ए

अ + ई = ए ; <mark>नर + ईश= नरेश</mark>

आ + इ = ए ; <mark>महा + इंद्र = महेंद्र</mark>

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

अ + उ = ओ ; जान + उपदेश = जानोपदेश :

अ +उ =ओ

आ + उ = ओ <mark>महा + उत्सव = महोत्सव</mark> आ +उ =ओ

अ + ज = ओ जल + जर्म = जलोर्म;

आ + ज = ओ महा + जर्म = महोर्म।

अ + ऋ = अर् देव + ऋष = देव र्ष

अ +ऋ =अर

(घ) आ + ऋ = अर् महा + ऋष = मह र्ष

```
आ +ऋ =अर
```

वृद ध संध

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्ध संध कहते हैं। जैसे -

यण संध

(क) इ, ई के आगे कोई वजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

(ख) उ, ऊ के आगे कसी वजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

(ग) 'ऋ' के आगे कसी वजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-सं ध

```
कहते हैं।
```

<mark>इ + अ = य् + अ;</mark>यदि + अप = यद्यप

<mark>ई + आ = य् + आ</mark> ; इति + आदि = इत्यादि।

<mark>ई + अ = य + अ ;</mark> नदी + अर्पण = नदयर्पण

<mark>ई + आ = य् + आ ;</mark> देवी + आगमन = देव्यागमन

<mark>(घ)</mark>

५ + अ = व् + अ;अन् + अय = अन्वय

उ + आ = व् + आ ; स् + आगत = स्वागत

५ ए = व् + ए ; अन् + एषण = अन्वेषण

ऋ + अ = र् + आ ; पतृ + आज्ञा = पत्राज्ञा

अयादि संध

ए, ऐ और ओ औ से परे कसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता

है। इसे अयादि संध कहते हैं।

(क) ए + अ = अय + अ ; ने + अन = नयन

(ख) ऐ + अ = आय् + अ ; गै + अक = गायक **ऐ+अ =आय गायक**-

ग +आय+क ग +ऐ+अ +क गै+ अक

(ग)ओ + अ = अव् + अ;पो + अन = पवन

(घ) औ + अ = आव् + अ ; पौ + अक = पावक

औ + इ = आव् + इ ; नौ + इक = ना वक

व्यंजन संध

व्यंजन का व्यंजन से अथवा कसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संध कहते हैं। जैसे-शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। उज्जवल

(क) कसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, <mark>त्</mark>, प् का मेल कसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या कसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को इ और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज। क् + ई = गी वाक + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

प + ज + ब्ज अप् + ज = अब्ज

(ख) यदि कसी वर्ग के पह<mark>ले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल</mark> न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता क् + म = ं वाक + मय = वाङ्मय च् + न = ं अच् + नाश = अंनाश

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मा<mark>स त्</mark> + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय

ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या कसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -

त् + भ = द्भ सत् + भावना = सद्भावना त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = द्भ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

त् + ध = द्ध सत् + धर्म = सद्धर्म

(घ) त् से परे च् या छ होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -

त् + च = च्च उत् + चारण = उच्चारण त् + ज = ज्ज सत् + जन = सज्जन

त् + झ = ज्झ उत् + झटिका = उज्झटिका त् + ट = ट्ट तत् + टीका = तट्टीका

त् + ड = इंड उत् + डयन = उंड्डयन त् + ल = ल्ल उत् + लास = उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे -

```
त् + श् = च्छ उत् + श्वास = उच्छ्वास त् + श = च्छ उत् + शष्ट = उच्छिष्ट
त् + श = च्छ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र
(च) त् का मेल यदि ह से हो तो त् का द और ह का ध् हो जाता है। जैसे -
त् + ह = द्ध उत् + हार = उद्धार त् + ह = द्ध उत् + हरण = उद्धरण
त् + ह = द्ध तत् + हित = तद्धत
(छ) स्वर के बाद यदि छ वर्ण आ जाए तो छ से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे -
अ + छ = अच्छ स्व + छंद = स्वच्छंद आ + छ = आच्छ आ + छादन = आच्छादन
इ + छ = इच्छ सं ध + छेद = सं धच्छेद उ + छ = उच्छ अन् + छेद = अनुच्छेद
(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अन्स्वार में बदल जाता है। जैसे -
म् + च् = ं कम् + चत = कं चत म् + क = ं कम् + कर = कंकर
म् + क = ं सम् + कल्<mark>प = सं</mark>कल्प म् + <mark>च</mark> = ं सम् + चय = संचय
म् + त = ं सम् + तोष = संतोष म् + ब = ं सम् + बंध = संबंध
म् + प = ं सम् + पूर्ण = संपूर्ण
(झ) म् के बाद म का द्वत्य हो जाता है। जैसे -
म् + म = म्म सम् + मित = सम्मिति म् + म = म्म सम् + मान = सम्मान
(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से <mark>कोई व्यंजन हो</mark>ने पर म् का अनुस्वार हो जाता है।
जैसे -
म् + य = ं सम् + योग = संयोग म् + र = ं सम् + रक्षण = संरक्षण
म् + व = ं सम् + वधान = संवधान म् + व = ं सम् + वाद = संवाद
म् + श = ं सम् + श<mark>य = संशय म् + ल = ं स</mark>म् + लग्न = संलग्न
है। जैसे - म् + स = ं सम् + सार = संसार
(ट) ऋ, र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो
जाने पर न का ण नहीं होता। जैसे -
र् + न = ण परि + नाम = परिणाम र् + म = ण प्र + मान = प्रमाण
(ठ) स् से पहले अ, आ से भन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -
भ + स् = ष अभ + सेक = अभषेक नि + सद्ध = निषद्ध व + सम + वषम
वसर्ग-संध
वसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर वसर्ग में जो वकार होता है उसे वसर्ग-संध
कहते हैं। जैसे- मनः + अन्कूल = मनोन्कूल
(क) वसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण,
अथवा य, र, ल, व हो तो वसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे -
```

मनः + अनुकूल = मनोन्कूल ; अधः + गति = अधोगति ; मनः + बल = मनोबल

(ख) वसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो वसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे -

निः + आहार = निराहार;

निः + आशा = निराशा

निः + धन = निर्धन

(ग) वसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो वसर्ग का श हो जाता है। जैसे -

निः + चल = निश्चल ; निः + छल = निश्छल ; दुः + शासन = दुश्शासन

(घ) वसर्ग के बाद यदि त या स हो तो वसर्ग स् बन जाता है। जैसे -

नमः + ते = नमस्ते ;

निः + संतान = निस्संतान ;

दुः + साहस = दुस्साहस

(ङ) वसर्ग से पहले इ, उ और बाद में <mark>क, ख, ट</mark>, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो वसर्ग का ष हो जाता है। जैसे -

निः + कलंक = निष्कलंक ;

चत्ः + पाद = चत्ष्पाद;

निः + फल = निष्फल

(च) वसर्ग से पह<mark>ले अ, आ हो और बाद में कोई भन्न स्वर</mark> हो तो वसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे -

निः + रोग = निरोग ;

निः + रस = नीरस

(छ) वसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर वसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे -अंतः + करण = अंतःकरण

पाठ-११ -गीत अगीत

पाठ सार

प्रस्तुत क वता 'गीत-अगीत' में क व ने प्रकृति की सुंदरता के साथ-साथ जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम, मानवीय राग और प्रेमभाव का भी सजीव चत्रण कया है। क वता के प्रथम भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है क व ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन कया है। क व कहता है क नदी कसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है क वह अपना दुःख कम करने के लए कनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। कनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है क यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता।

क वता के दूसरे भाग में क व तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है क एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। क व कहता है क जब सूर्य की करणें पत्तों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है।

उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है ले कन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता। मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। क वता के तीसरे भाग में क व दो प्रे मयों का वर्णन करता हुआ कहता है क दोनों प्रे मयों में से जब एक प्रेमी शाम के समय कोई लोक गीत गाता है

तो उसकी प्रेमका उस गाने को सुनने के लए अपने घर से वन की ओर खंची चली आती है। वह चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है क वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। क व यह सब देखकर सोच रहा है क मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

गीत अगीत पाठ व्याख्या

(1)
गाकर गीत वरह के तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हलका कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता
"देते स्वर यदि मुझे वधाता,
अपने पतझर के सपनों का

मैं भी जग को गीत सुनाता।"
गा गाकर बह रही निर्झरी,
पाटल मूक खड़ा तट पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?
शब्दार्थ –
तिटनी – नदी, तटों के बीच बहती हुई
वेगवती – तेज़ गित से
उपलों – कनारों से
वधाता – ईश्वर
निर्झरी – झरना, नदी
पाटल – गुलाब

व्याख्या – क वता के इस भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है क व ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन कया है। क व कहता है क नदी को बहता हुआ देखते हुए ऐसा लगता है जैसे नदी कसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है क वह अपना दुःख कम करने के लए कनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। क व कहता है क कनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है क यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और गुलाब कनारे पर चुपचाप खड़ा है। क व यह सब देखकर सोच रहा है क मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

(2)
बैठा शुक उस घनी डाल पर
जो खोंते को छाया देती।
पंख फुला नीचे खोंते में
शुकी बैठ अंडे है सेती।
गाता शुक जब करण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर।
कंतु, शुकी के गीत उमड़कर
रह जाते सनेह में सनकर।
गूँज रहा शुक का स्वर वन में,
फूला मग्न शुकी का पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -

श्क - तोता

खोंते - घोंसला

पर्ण – पत्ता, पंख

श्की - मादा तोता

व्याख्या – क वता के इस भाग में क व तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है क एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। क व कहता है क जब सूर्य की करणें पत्तों से छनकर आती हैं

और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है ले कन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता।

उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। अर्थात वह बहुत खुश है। क व यह सब देखकर सोच रहा है क मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

गीत अगीत प्रश्न अभ्यास

निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर दीजिए ट

प्रश्न 1 – नदी का कनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधत पंक्तियों को लखए।

उत्तर – जब नदी अपना दुःख कम करने के लए कनारों से कुछ कहती हुई बह रही है तो कनारे पर एक गुलाब सोचने लगता है क यदि भगवान उसे बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी अपने सपनों के गीत सबको सुनाता। इससे संबंधत पंक्तियाँ निम्न लखत हैं –

"देते स्वर यदि मुझे वधाता,

अपने पतझर के सपनों का

मैं भी जग को गीत सुनाता।"

प्रश्न 2 – जब श्क गाता है, तो श्की के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर – जब सूर्य की करणें पतों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है ले कन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता। उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है।

प्रश्न 3 – प्रेमी जब गीत गाता है, तो प्रेमी की क्या इच्छा होती है?

उत्तर – जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रे मका चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है क वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। प्रश्न 4 – प्रथम छंद में व र्णत प्रकृति चत्रण को ल खए।

उत्तर - क वता के प्रथम छंद में नदी के बहने से जो दृश्य उत्पन्न होता है उसका क व ने मनोहारी वर्णन कया है। नदी वरह के गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसा लगता है जैसे नदी कसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते ह्ए गीत गाते ह्ए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है क वह अपना दुःख कम करने के लए कनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। क व कहता है क कनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है क यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी द्निया को अपने सपनों के गीत स्नाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और ग्लाब कनारे पर च्पचाप खड़ा है।

प्रश्न 5 – प्रकृति के साथ पश् प क्षयों के संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - प्रकृति के साथ पश् प क्षयों का गहरा संबंध है। पश् पक्षी प्रकृति के बिना जी वत नहीं रह सकते। प्रकृति ही उन्हें आवास प्रदान करती है और भोजन प्रदान करती है।

प्रश्न 6 – मन्ष्य को प्रकृति कस रूप में आंदो लत करती है? अपने शब्दों में ल खए।

उत्तर – मन्ष्य को प्रकृति भन्न रूपों में आंदो लत करती है। जब मन्ष्य कसी कल कल बहती नदी को देखता है तो उसके संगीत में खो जाता है। जब मनुष्य हल्की बारिश देखता है तो उसमें सराबोर होना चाहता है। ले कन जब तेज तूफान आता है तो मन्ष्य उससे बचकर कसी स्र क्षत ठिकाने पर चला जाता है।

प्रश्न ७ – सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए। उत्तर – जब हमारी भावना हमारे होठों पर लयबद्ध तरीके से बाहर आती है तो उसे गीत कहते हैं। जब कोई भावना अंदर ही रहती है तो उसे अगीत कहते हैं। कभी कभी अगीत भी गीत बनकर स्फ्टित हो उठता है। और प्रकृति के द्वारा कए गए शब्दों से कव भी हैरान है और समझ नहीं पा रहा है क क व की भावनाएं जो गीत बन कर बाहर आई है वह सुन्दर है या प्रकृति के बिना शब्दों वाला संगीत सुन्दर है।

प्रश्न 8 – 'गीत अगीत' के केंद्रीय भाव को लखए।

उत्तर – इस क वता में क व ने प्रत्यक्ष भावना और छुपी हुई भावना की त्लना की है। यह त्लना प्रकृति में छुपे अनेक सौंदर्य के सहारे से की गई है। नदी के गाने की त्लना ग्लाब के मौन रहने से की गई है। श्क के गाने की त्लना श्की के मौन से की गई है। प्रेमी के गाने की त्लना प्रेमका के मौन से की गई है। इस तरह से इस क वता में क व ने गीत और अगीत के माध्यम से प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी वर्णन कया गया है।

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

प्रश्न 1 – अपने पतझर के सपनों का मैं जग को गीत स्नाता

उत्तर – ये पंक्ति क वता के उस भाग से ली गई है जिसमें नदी की सुंदरता का वर्णन है। जब नदी गीत गाते हुए और कनारों से बातें करते हुए आगे बढ़ती है तो गुलाब चुपचाप यह सोचता है क

अगर भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी दुनिया को अपने सपनों के बारे में गा गाकर सुनाता। प्रश्न 2 – गाता शुक जब करण वसंती छूती अंग पर्ण से छनकर उत्तर – ये पंक्ति क वता के उस भाग से ली गई है जिसमें शुक और शुकी के प्रेम का वर्णन है। जब प तयों से छनकर आने वाली करणें तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाने लगता है। प्रश्न 3 – हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की बिधना यों मन में गुनती है उत्तर – ये पंक्ति क वता के उस भाग से ली गई है जिसमें प्रेमी और प्रे मका का वर्णन है। जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रे मका सोचती है क कतना अच्छा होता यदि वह उस गीत का एक हिस्सा बन जाती।

